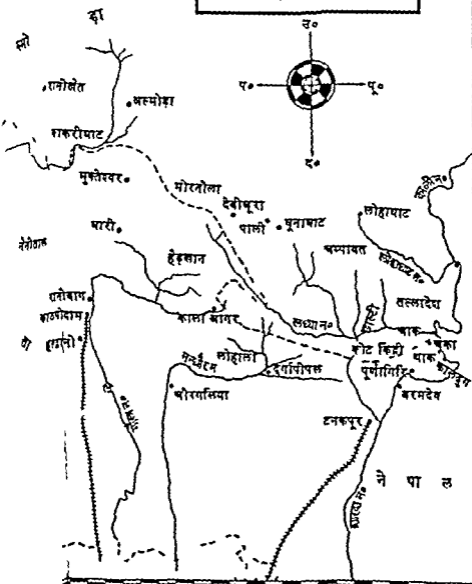


कुमायूँ का मानचित्र

बस्कोट



कुमायू के वृर शेर





जिम् बर्वे

KUMAUN KE KROOR SHER

Hindi translation of
MAN EATERS OF KUMAON
JIM CORBETT
Translated by R. C. Pande

Jim Co bett 1875 1955

<i>First published</i>	1953	प्रथमावृत्ति	१९५३
<i>Second impression</i>	1957	द्वितीयावृत्ति	१९५७

Printed in India by V N Bhattacharya M.A.
at the Hind Printing Works, 60/3 Dharamtala Street Calcutta 13
and published by John Brown, Oxford University Press
Mercantile Buildings, Calcutta-1



त्रिपय सूची

दो दण्ड			13
लेखक का बचतघ्य			11
घपायत का आदमलोर			१
रीबिन			२७
खोगढ़ के गर			३९
पोलगढ़ का पुआरा		-	८५
मोहान का मरभसी	-	-	१००
पोपल-पानी का गर	-	-	- ११८
प्रकृति की गोद में	-	-	- १२९
पारिभाषिक दम्बावली	-	-	- १३१



लेखक का वक्तव्य

इस पुस्तक में अधिकांश कहानियाँ नरभक्षी शरों के विषय में हैं। इन यह समझा देना उचित होगा कि ये पक्षी क्या आत्महार बन जाते हैं।

नरभक्षी शर की व्याख्या है वह शर जो परिस्थितियों में विवश होकर अनुकूल भोजन प्राप्त नहीं कर पाता और असमय हान पर अप्राकृतिक भोजन करता है। शर की असमयता का मुख्य कारण है उसकी वृद्धावस्था अथवा घाव। ये घाव प्रायः गिकारियों की लापरवाही से चलाने गई गालियाँ के द्वारा अथवा शर की किसी भी सन्नद्धि के समय उमक काटा शरा हो जाते हैं। शर का प्राकृतिक गिकार मनुष्य नहीं है। शर केवल विवश होकर ही मनुष्यमांस खाने लगता है। शर अपने गिकार का या तो दब कर मारता है या उसकी घात में छिप कर। इन दोनों प्रणालियों में अपने आत्मरक्षण को सफल बनाने के लिये शर को अपने दाता और नन्हा पर निर्भर रहना पड़ता है। दाता या पक्षी के कमजोर पड़ जाने पर या शरीर में लग घावा के कारण ही शर अपने प्राकृतिक गिकार को पतन में असमय हो जाता है और परिणामस्वरूप नरभक्षी बन जाता है। शर का पशुमांस खाकर मनुष्य-मांस खाने का चक्का बहुधा किसी घटना के कारण लग जाता है। उदाहरणार्थ भस्म-द्वारे नरभक्षी का लीजिये। यह एक जवान शरमी थी और एक अवसर पर किसी शर्त में मुनाबला करने में अपनी एक आँख खो बैठी। समस्त शरीर में पचाने का

चुम गया था। गर्मी न जग जहा न बानों का नीत न पकड़न का प्रयत्न किया या बग-बहा पर भाव पक गया था। इसी घायल अवस्था में गर्मा एक झाडा में लटो हुई थी कि उधर एक ग्रामीण स्थायाम काटन निकल पडा। गर्मी न बाई ध्यान नहा लिया और अरन भावा का घाटना रहा। जब घसियारिन टाक गर्मी के ऊपर जा पहुचा गर्मान एक धप्पड म हा उमकी खापडा चूर कर दी। तन्काट हा स्त्रा की मत्त हा गई। लाग का वहा छाड कर गर्मी न लगाडान हुए एक गिरे हुए वल के काटन का दर्शन ला। दा निज वात गर्मान लय हाया एक एक डहारे का भा मार डाला। अभागा लकडहारे भी मत स्त्रा की भाति गर्मी के समीप पहुच गया था। लकडहारे के शत बिमत गरार से टपकन हुए रक्त का दख कर हा मभवन गर्मा का मवप्रथम यह मूक्षा था कि यह भा उमका खाच धम्नु हा सकती ह। दूसरे दिन गर्मी न जानबूच कर अकारण ही एक मनुष्य का मार डाला। उमकी जिह्वा में मनष्यमाम का स्वाद लग चुका था और उमो दिन से वह एक मुख्यात नरभरिणी बन गई। मत में शीवीम नर-भरिणी उ घकन के पचाते वह मारा जा सकी।

गायरे (लाग) पर बठा हुआ गर घायल गर अथवा बच्चावागे गर्मा बटुषा छड जान पर हा मनुष्य का मारन ह। परन्तु उहें नरमणी कहना अनचित है (जमा कि प्राय कहा जाता है)।

म स्वयं गर के नरमणी जान का घायला तब तक नहा करता जब तक कि मुस पूण विन्वात नहा हा जाता। गर एक दा अकमरा पर मूल भी कर सकता है। अक्सर पाने ही से पत्त गर द्वारा मारी गई लाग का जाच-यदतान करता है। लाग की चीर-फाड (post mortem) अयल महत्वपूर्ण है। कई बार नखवाट पगडा पर नरहत्या का सिध्या आरोप लगाया गया है।

जनसाधारण की यह निराधार धारणा है कि सब नरमणी दार बड हात ह और उनक घम में मजली (Mange) की बीमारा हाता ह। मजली का कारण मनष्य का नमकीन माम बताया जाता है। यह ना म क नहा सकता कि मनष्य माम अधिक मयकान हाता ह या पशुमाम किनु यह म दाव से कह सकता है कि दार पर मनष्यमाम का काई भी हातिकारक प्रभाव नहा पडता क्याकि जिन भी आत्मघार मन मार उनक घमों का अयल गुल्ग हाता में पाया।

कुछ लोग का मत है कि नरमणी गर का मजनि भी स्वयं आत्मघार बन

जाती है। यह मत यकिनपूण सा दिवाई देता है किन्तु मरत्य नहा ह क्याकि गर या तदुवा का प्राकृतिक गिकार मनुष्य नही ह। गर का बच्चा बहो खाना खायगा जा उसकी माता उमे लैगी। कई अवसरो पर मन स्वय बच्चा का अदनी माता का नरहत्या करन में सहायता पहुचान हूँ दखा ह। किन्तु एक भी वाक एमा नही हुआ कि माता पिता की मरक्षता छाड देन क पचात या उनके मारे जान के बाद गर का बच्चा नरभक्षी बन गया है।

लाग देन कर प्राय सन्देह होता ह कि हत्यारा गर ह या तदुवा? गाघा रणसया गर दिन क प्रकाश में मारे गय ब्यक्तिया लाग का उत्तरलायी जाना ह पर तदुवे रात्रि के अघकार म गिकार करते ह। गर और तेंदुवे दोना ही अर्ब निगावर पग ह और लगभग सभी आदत इनकी एक समान ह। परन्तु फिर भी य एक ही समय गिकार नहा करते। इसका मर्य्य कारण ह इन पशुओं क साहम का विभद। गर अल्पमखार बनन ही भय का परित्याग कर देता ह। शूकि मनप्या के चलन फिरन का समय गिन ह इसमिय गर का रात में उनके घरा पर जान की आवश्यकता नहा पडती। तदुवा मनप्य स सदब डरता रहता ह। अतएव या सा घट रात्रि में आप्रमण करता है या रात्रि में बस्ती में पहुच जाता ह। उपयुक्त कारणा से नरभक्षी गर को मानो अधिक मरल ह।

नरभक्षी गर का डारा की गई हत्याओं की बहुलता निम्नलिखित बातो पर निर्भर है

- (क) नरभक्षी क आसटम्बल में उमर प्राकृतिक आहार का कमी या अधिकता
- (ख) शरीर के घाव की अवस्था
- (ग) गर नर ह अथवा बन्धावाली मादा?

हम लाग त्रिनमें मौलिक विचार शक्ति की समता रहती है कुन्त ही अन्य लागों की धारणा का स्वाकार कर लन ह। त्रिन लगन न मदप्रथम गर की भाति मून का प्यामा या गर मा कर आति उपमाआ का प्रयाग किया हागा उमन राघमुच हा गर का क माय बडा अन्याय किया ह। उपयुक्त उपमाआ द्वारा उम लगन न बवल गर क पत्रि का मिध्याचिधन ही नहा किया किन्तु उम समस्त दिव में बन्नाम कर लिया। कुन्त ही मनप्य एम हाग त्रिन् स्वय पराग करके अपनी ब्यक्तिगन धारणा बनान का अवसर मिला हागा।

जब कभी मैं गरा के ऊपर ल्याय गये मिथ्या आगवा के विषय में कहा पड़ता है तभी मझ उम नहू बालक का याद आ जाती है जा एक टूटे फल नराऊ (muzzel loading) बन्दूक लेकर सराई भावर के जगला में भटकता रहता था। उम जमान में उपयुक्त बना में आज से दसगन अधिक गर किरा करत थे। थके जान पर यह बालक जगल में ही अरना डरा डाल लिया करता था। जब कभी सरा की गत्रना में उमकी नाक उचट जाता तभी वह थप में एक और एकड़ी डाल कर पुन करवट बल एता। उमके अनुभव में उम मिला लिया था कि न छह जान पर गर कभी भी हानि नहा पहुचाना। दिन के प्रकाश में यदि उस कभी रात शिखरी जाता ता वह निश्चल खड़ा रहता और घर बिना उमकी आर ध्यान दिये ही चले जाता। मझ उम अवसर की भा मली भाति माते हूँ जब यही बालक धन-मगिया के दूकत समय एक भामकाम घर के एकलम गमोप जा पहुचा था और घर माना अरे तुम यहा क्या करन का पहुच मुझा? कहमा हुआ खला गया था। फिर मैं मानन ल्यता हूँ कि प्रतिदिन महसूस नर-नारी बना में घाम-लकडा बढोलेन जान हूँ और सध्या समय मकुल घर लोट आत हूँ। उह आमास भी नहीं हाता कि घर की भाति खून का प्यासा और घर-मा बुर के कितन गमोप पहुच कर भी व सकुल घर लोट आय हूँ।

धन-मुगिया के दूकते हुए बालक के विस्म का बीत आज अधी गताञ्जा हा गई है जिममें अन्त के बलीम बयी तर निरन्तर आत्मभारका का अनमग्न किया गया। एस एम दूम में दख खुवा हूँ जिन्हें दख कर पापाण भा विपल सवना हूँ किन्तु एक भी अवसर पर मन यह नहा दखा जब गर न अरन या अरन गिगुआ का पट भरन के अलावा अबाग्न हा कूरतावग सहाय किया हा।

मूलि में घर के कतव्य प्रहृति के तुलाण्ड का मनुलित रचना है अथान वन पगुआ की आबाली का परम्पर में बराबर रचना। यदि कभी विवग हा कर वह एक-दा मानव जयाए कर भी डाल ता उमका मममन जानिका तर कर रना अमगत है। आगा है कि ममी मरे उपयुक्त निष्पत्ति में महमन हाय।

मनुव सरा के विरगत जुम्हार पगु हूँ और जब उह जगल में अरना प्राहृति गिहार कम मिता है तब ये नरभगा बन जान हूँ।

इसारे अधिकांश पहाड़ी लोग हिन्दू हैं और मत्तुवा का गह-बम करत हैं। कहीं-कहीं पानी बहुत दूर हाता है इसलिए मीला तक उह जाना पडता है। परंतु किसी सत्रामक राग व पै-न पर शव व मह म बलता बायला डाल कर उम घानी म गिरा दिया जाता ह। इही रागा से भल तदुव का नरभाम का शमका लग जाता ह और यह आदमखार बन जाता ह।

कुमायूँ व दी आत्मखार तदुव (बिन्हान मिन्बर ५२५ नर-ह-याण का) शमी भाति आत्मखार बन। पहला तदुवा हज के प्रकोप व पश्चात नरभाम बना और दूसरा १ १८ व रहस्यमय राग (War fever या लडाईँ व ज्वर) व बा।



चपावत का आत्मखोर

उस समय में मलानी में एही नावल के साथ गिकार चल रहा था जब मन उस शर के विषय में सुना जा पाछ चपावत का आत्मखोर नाम से प्रसिद्ध हुआ ।

एही उन भाग्यगाली मनष्यों में से था जो प्रायः जीवन के समस्त सुखों से सम्पन्न रहते हैं । उनमें इस प्रान्त में उत्तम गिकारी होने की विख्याती स्थाति प्राप्त कर लायी । उसने जान कितने गिकार के विस्तार किये । उसकी बन्दूक की मार के निशाना बजोड था । उसका एक भाई भारतवर्ष में छरों की बन्दूक का अन्तिम निशानवाज था और दूसरा भाई फौज में टनिम का मुप्रसिद्ध खिलाडी था । इसलिये जब मुझ एही ने बतलाया कि उसका बहनवाई जा समार का तबध्रष्ट गिकारी था इस नरभक्षा शर का मार्ग के लिए सरकार द्वारा भजा जा रहा है तब मुझे विश्वास हो गया कि अब इस निन्द्य पशु के जन्मांत का समय बहुत सामित हो गया है ।

चार वर्ष बाद में जब ननीताल पहुँचा तो मुझे पता चला कि किमा अगान कारणवश शर अभी तक मरा नहीं और सरकार अत्यंत चिंतित है । सरकार द्वारा पुनश्च धारित किया गया किंग गिकारियों का प्रबंध हुआ और बन्नाडा डिपा में गुरया मनिवा की टालिमा शर को मारने भजा गई किन्तु इन सब उपायों के बावजूद शर बलिया की मर्यादा निशानि भयंकर रूप में बढ़ता ही गई ।

यह शरना (बाद के पता चला कि आत्मखोर माना था) कुमायू में नवान स पूण नरभक्षण बन कर आई था । नेपाल में दासी मनुष्या के प्राण ल चुराने पर वह कुछ शगुन नेपालियों शरों वहा से मदद दान गई था और इधर चार वर्षों में अमन कुमायू में अन्ना शर व्यापार चालू कर रक्खा था । इस नये प्रयोग में आकर अमन अगानो नर शरों का मर्यादा में २५० के अब और जाँ लिख था ।

जब मुझे ननीताल में वापस आना पड़ा तो तब एक दिन वहाँ गान्ध मुझमें मिलने आया । वह उस समय ननीताल के टिप्पा कमिन्तर था और वह सारप्रिय साजन था । उसने मुझे बड़े दुःखरूप से दुई । वह

अब हल्लानी में अपनी छातीभी बत्र में धिक्काम कर रहे हैं। उन्होंने मुझ बतलाया कि नमस्त्र जिउ में दारना न किन प्रकार आतक फल रक्खा था। वयोँड स्वय अत्यन्त चितित थ। और जान समय वह मसस बचन एते गय कि भविष्य में नई लास का सूचना पात ही में अविष्म्व चपावत का बूध कर गूगा। मन उनक सम्मुख दा शतों रक्खी। एक ता यह कि सरकार द्वारा घोषित पुरस्कार बन्द कर लिया जाय और दूसरी दान थी कि अल्माइ में भज गय गिकारी एक मिपाही जगल स बापम बुला लिय जाय। यह नमझाना व्यथ सा हागा कि मन में शतों क्या रक्खा। मुझ पूग विश्वास ह कि बाई भी अग्टा गिकारी पुरस्कार के लालच में गिकार मारन के पक्ष में न हागा और जगल में एतन अधिक गिकारिया के बीच गिकार खलन में अपन हा ऊपर बाई न बाई दुघटना हान का भय सग बना रहना ह।

मरी दाना शतों का स्वीकार कर लिया गया और एक सप्ताह बाद एक दिन तइव ही वयोँड मरे घगन पर पहुच। उन्होंने मझ बतलाया कि रात्रि में एक पत्थर हुरकार द्वारा उनका सूचना मिनी थी कि घनाघात व देवाघरा के बीच पाली नामक ग्राम में आत्मघार न एक औरत का मार डाला था। मैं इस प्रतीक्षा में था था ही इमलिय मन पहिउ में ही छ मनप्य अपना सपरी गामान लानन के लिए तयार कर रक्ख थ। नान्ता एकर इमन अपना १७ मील का पहला घाघा बाल लिया। मध्या समय हम घारी पहुच गय। प्रात बाद का भाजन इमन मारनोला में विया और रात्रि देवाघरा में व्यतीत की। तीमरे दिन मध्या का हम पाला पहुच गय। उस स्त्री को मर हुए पाब दिन हाचुवे थ।

पचाम-नात्रि स्त्री पुरपा का यह गाँव था और वचारे घरी तरह में डरे हुए थ। दजगि मूर्याम्न हान में दर था किन्तु फिर भी मममन ग्रामवासी अपन दरवाजा पर कुछा चक्राय चुपचाप बठ हूग थ। नीकरा न आग जला ली थी और मैं बाद ही रहा था तभी एक-एक करके द्वार खुलन लग और भयभीत ग्रामाण बाहर निकल आय।

मुझ बतलाया गया कि गल पाब दिन में बाई भा मनप्य अपन घर में बाहर निकला हा न था। श्घर ऊपर फडी हुई गन्गा इस बात की पुष्टि कर रही था। ग्रामाणा की गाय गामघी दिन पर दिन कम हानी जा रहा थी और

यदि गीघ्र हा गरना न मारा जाता ता नि मन्दह व लग्न भूखा भरन लगत ।

यह स्पष्ट था कि गरनी अमा आसपास हा क घना में था क्याकि तान राता स लाग उस ग्हाइत हुए मुन रह घ और गीघ्र क पीछ की जनी भूमि में कुछ लाग न उम दखा भा था ।

गीघ्र क मुखिया न सहष भर लिय एक कमरा ठाक कर लिया । हम गग मख्या में आठ घ जोर कमरे का द्वार भी जागन की आर खुलता था जहा अत्यन्त गन्धी थी । अत मन रात बाहर हा बाटन का निचय कर लिया । ब्यालू क स्थान पर धाहा सा जल्पात करके ही मतोप कर लिया गया । जब मन देख लिया कि मरे आत्मी सजुगल कमरे में बल हा गए ह तब म बाहर आकर एक बक्ष स पाठ मला कर बठ गया । गीघ्रवाल मुझ यता चुन घ कि गरनी रात्रि में सहष पर घूमन आती था । चाँदनी खूब छिटकी हुई थी और मनि गरनी कहा मुझ पन्त लिमाई पहली सा गाली चालान का अवसर मि गकता था ।

म पहल भी कई रातें गिफार में बिता चुका था किनु आत्मवार के लिय रात में बठन का मरे लिए यह प्रथम अवसर था । मरे सामन थी सडक चाँदनी म नहाया रहा था और आगपास क बूख अपना विचित्र छायाए सहष पर डाल रह था । जब रात की हवा उनका गाराआ का हिला देती तब उनकी पर छायाँ गाव उठता था । कभा-कभा एमा लगता था कि दजना घर मर ऊपर दोड सा रह हा । म उन पडा का काम रहा था जब मन रात बाहर वितान का निचय किया । मुझमें इतना साहम न रहा कि गीघ्र को धारम लो पडू । मुझ इस स्वीकार करन में लगमात्र भा सकाच नला ह कि म अत्यन्त भयभीत हा उठा था । बिन काम का पूरा करन का मन कुछ हा न रह पहिँ बोहा उगाया था उम पूरा करन का महमें अब साहम नहा था । कुछ भय म कुछ जाड म बनीमोकिचिगा रहा थी और इग भाति मनें बठ-बठ गपूण रात्रि व्यनाम कर दा ।

गामन का मिमाच्छान्ति पकस-शुंगलाआ पर उपा फर रहा थी । नय त्रिन का जम हा रहा था । म घटना क बीच गर दबाय घन था और बाल में मरे आसपास न मझ इसा आगन में बर निरा में मग्न पाया । जब म गीघ्र वाग सौटा मन लागों का अत्यन्त विस्मित पाया । उनका आचय हा रहा था कि म जायिन कम यच गया । मन उनम अनुराध किया कि मरे माघ

बल्बेर मुझ के स्थान लिपिकाव जहा जहा शरनी न मनुष्या का मारा था किंतु उत्तर म वे केव सर हिलावर रह गय । आंगन म खड-खडे कुछ लोगान उपली से उम लिगा की आग इगिन कर दिया जिघर शरनी न कर् व्यक्तिवा को मारा था । शरनी का अन्तिम गिकार (जिसकी सूचना पाकर म चपावन आया था) गाव के पश्चिम में पहाडी की भजा के आमपास हुआ था । जिस समय शरनी न उम स्त्री पर आक्रमण किया उसके साथ लगभग बीस स्त्रिया व ाडकिया मवेगिया व लिय वन में पत्तियां बीन रही थी । मत यवनी की सहेलिया जो घटनाम्फल पर उपस्थित रही हागी मझ पूरा किस्सा सुनान का अतीव व्यथ प्रतीत हा रही थी । पता चला कि स्त्रिया की टाली जगल का मध्यान्ह स दा घट पूव खाना हुई और वहा पञ्च कर पेछा पर चड कर व पत्तिया फाटन लगा । मृत यवती अपनी एव सहेली व साथ नाल की कमार पर उग हुए एक वृष पर चड गई । यान म दखन पर पता चला कि यह नाला लगभग बारह फीट चौडा और चार फीट गहरा था । काफी पत्तियां बाल लन पर मुवनी पन पर से उतरन लगी । शरनी पहुँचे ही मे थावर वृक्ष के ममीप छिय गई थी और मुवती को उतरने देव आपन पिछे पीधा पर मडी होकर उगन यवती को टाग पकड नी । यवती की पकड ढीली पड गई और जिस टहनी का वह पकड हुए थी वह उसवे हाथ से छूट गई । शरनी न झटव के साथ उसका नाले में सींच लिया और उसकी टाग छाड दी । धरवाई हुई बचारी मुवती भागन का प्रयत्न कर हा रही थी कि शरना न उसका गला दबाच लिया । यवती को मार डालन व बाद शरनी लाग सहिल वन कर नाल व पार झाडा में अदख हा गई । स्त्रिया का पूरा मुड हम नृगा व्यापार का देवना रहा । शरनी व दष्टि मे ओझल हान ही गव लाग भाग कर गाँव वापस आ गय । खता न आत्मा शपहर का भाजन करन घरा पर आगय थ और जब मय लाग एकत्रिन हो गय तत्र दोल्क ताग पीनल के यत्न आदि गेनर एक टागे बालात्न करती हुई मृत मुवती को गात्रन वन पडो । आग-आग पुरप थ और पीन-पीछ भागिया ।

जब य लाग भाग पर पटूच गय और थापन में बाल-बिवाह ज्ञान गगा कि आग क्या किया जाव उमी समय तीग मत्र व पागल पर शाकिया व पाछ शरना दहाड उठा । शरना का गत्रना गुनवर गगा म भगन्ट मस गर् और सब लाग मर पर पर रग कर गाँव वापस भाग आय । कुछ मुन्ता लन पर व लग

एक दूसरे का कामन कि किमन पहने भगन्ड मचाई। गरम ब्रंस का निगम यह हुआ कि सबमुच ही में यन्ि सब इतन बहादुर व ता क्या न लोटकर युवती का घरना क पर्जों स छडा लिया जाव ? यह प्रस्ताव तुरन्त मान लिया गया और तीन वार साहम कर टांगे नाल तक गई। सासर बवसर पर टाली व एक सास्त्र सदस्य न अपना बन्दूक दाग दी पन्त घरनी गरज कर झाडी मे बाहर भा निवडा। अब भाग बचना बठिन था। अत यचना को सोजन का विचार स्पगित कर दिया गया। मन बन्दूक घडानवाल मनुष्य स पूछा कि उमन बन्दूक हवा में चलान का अपसा झाडा में क्या नहा चलाई, तव उत्तर यह मिला साहव घरना गुम्प में भरा बठी हा था कहा दुर्भाग्य स उसक ममस्थल पर गांग न लगता ता प्राणा पर हा आ वालना।

उम दिन प्रात काल म तीन घण तक गाय क बववर लगाना रहा कि विचित कहा घरना क मोर (पदचिन्ह) मिला जाव या स्वय घरनी स ही मुठनठ हो जाए। साथही साथ दिन में भय भी घना हुआ था।



धूमने धूमत म एक नाट पर पहन गया। इम नाट में गूब झाणिया थी। म कुछ झाडियों क बिनार-बिनार चल रहा था कि अगम्मान कुछ पन्त मृगिया का एक सड घागना हुआ भरभरा कर ऊपर उठा। एक दाग क लिय मरे हृत्प को घडनन रह मो गई।

मेरे नौकरा न एक अखराट के बख के नीच मरे भोजन के लिय भूमि साफ कर रक्की थी। भाइनापरालन गाँव के मलिया न मुझसे प्राचना की कि स्वता पर खड़ी फसल के बटन तक म भयभीत कृषका की रक्षा करता रह। उमन कहा कि यदि फसल भेर सामन न कटी तो फिर कभी भी न कट पावगी क्याकि समस्त ग्रामवासी भयानुर थ और उन् अपन घरा मे बाहर कर्म रमन तक का साहम न था।

लाघ घन बान गाँव के सब आत्मी खन कटवान में जात गय और मरे अपन आत्मी भा उनके काय म हाथ बटान लग। म भगे बन्दूक लिय मतरी की भाति उनकी चौकसी कर रहा था।

मध्या तक पाच बड़-बड़ खना की फसल काट कर बट्टी कर ली गई। केवल घरा न पास के दा टक रह गय जिनका कि मलिया न कहा दूसरे दिन काटा जा सकता था।

शव गाँव में स्वच्छता भी बढ़ती जा रही थी। मरे लिय अब एक अलग कमरा तयार कर दिया गया था और राति म दरवाज पर बटाने झाडिया काट कर फना दी गई ताकि हवा भी आता रह और दगनी भी कुछ दूर ही रह।

मरी उपस्थिति न घामीणा में नय प्राण फँक लिय थ और अब उनकी खाल में कुछ-कुछ स्वतंत्रता का आसाम थाता था। किन्तु अभी म उनका इतना प्रभावित न कर पाया था कि उनन जगल घमा लान का अंतराध करू। यह एक अयत आश्चर्यक काम था। य लाग जगल न चणे-चणे म परिवर्तित थ और यदि चाहत ता अवश्य हा मझ यह स्थान बतला सकत थ जहा दरनी या उमक गाँव मिलन की सभावना था।

यह बात ता अब ध्रुव मय थी कि नरभगी पग दार के अनिश्चित और कोई नहा ह किन्तु अभी य भगी भाति सावित न हा पाया था कि गर नर ह या माता और न यह मान्य था कि वह जवान है या बूडा। य गर बात बवाल था देगन पर ही मान्य हा मयता थी।

प्रात का जशा ता चाप पीकर मन गाँववाला न कहा कि मरे आत्मिया का माग गात का प्रयत्न इच्छा हा रहा ह और पूछा कि यदि आरापग में क्या घुसक (पहाड में पार जान वाला एक प्रकार की जगती बषगी) का ता बताव।

पूव स पश्चिम का आर जानवाला पहाडा क गिमत पर पाली समाहवा था आर जहा मन रात विनाई था उम आर घाम क शल मल नाच का आर चर गय थ । गाँववाला न बनाया कि इन मलना में बापा घुरड मिल सकत थ और बटुन स छात्रा मझ उघर ल चलन का प्रस्तुत हा गय । मन अरना प्रमत्रता का छिराने हा तीन आत्मा छात्र लिय और मुखिया स कह लिया कि यति नचमुच मलन में बापा घुरड मिल गय ना स एक घुरड अरन आत्मिया क लिय तथा दो गाँव वाला क लिय मार लाऊगा । मडक पाठ करक हम डात्र रास्म न नाच उतरन लग । हम बडा मावधाना न इघर उघर देखन जा रह थ किन्तु कुछ भा न लिखाई पडा । लगभग आध माल जान पर नोच दाना नाउ एक म्यान पर मिल गय थ । उन नाग क मगम क डात्रिना आर एक हाग मरा हाल मलन था । इघर स हम मलन का बडा मुत्तर दाय दिखाने ला था ।

कुछ ल स स एक चाड क बडा क भारे वग अरन सामन क मलन का निरीक्षण कर हो रहा था कि पहाड क ऊपर बाई बन्तु मझ हिलनी डलना लिखाई था । मावधानी स दयन पर पना चला कि हिलन वाला बन्तु एक घुरड था जा अरन शाना का पडपण रहा था । घाम में रात्र हात क कारण कवल उयका मिर हो लिखाई पड रहा था । मर माथियान उम अमानक दयावला था । अर घुरड न मिर हिलाना बर कर लिया था और उमर क्षण का रस आमागम का हरियाला में छिर गया था । अस्थिय उह स घुरड नहा लिखा मका । जानघर का स्थिति क विषय में उनका बाप मा अलात्र दकर मन उनका विरल्य लिया और फिर निगाना माधा । मर हाथ में एक पुराना मारिना 'नग' (नाच चलन चांग पुरान बिम्म का रास्फ) थी । अरना तगडी झा क लिय मट बन्तु बलनाम था किन्तु निगाना इसका बडा मन्वा था । फामला लगभग हा सौ मत्र का रहा हागा किन्तु हमस बाप फ न पडवा था । सुब कर मन चाड़ क एक टूट पर राइल माधा और लय मार क चला दा । एक पाऊर (जानघर वाला बास्फ) वा कानून क घण स मर सामन क दाय पर क्षण भर क लिय पणना मिर गया और माय क लागों न बनाया कि रात्र का क्षण कुछ भा न हुआ और य कानि विमा बट्टान मा पथर पर जा लगा था । अना जग पर बरबर मन पुन बन्तु भर ला । लिखा लिखा पर मन बन्तु चार था उयम कुछ नाच का पान हिल रहा था । अरन हा में

मुझ घुरड़ का पिछला घड़ लिप्ता पड़ा। फिर घाम में म छूट कर घुरड़ बड़ यग स नीच की आर लड़कन लगा। आप डाल तब लड़क कर वह फिर घाम में अदृश्य हागया। उसी क्षाहा में कहा दा घुरर और लट हूण य जो मृत घुरड़ के लुडकन की आवाज स चीक पड़ य। भयभीत होकर फुमकारते हुए वे घास स बाहर बूद पड़ और विद्युत गति से पहानी पर चढ़न लग। अब फासला कम रह गया था। कौआ चढ़ा कर म प्रतीक्षा करने लगा कि दा में म बड़ घुरड़ न अपनी पाल कुछ कम कर दी। मन तब उसकी पीठ पर गोनी धला दी और जैसे ही दूसरा घुरड़ मुड़ कर पहाड़ के दूसरी ओर भागन लगा मन उसकी काख पर भी गाली मार दी।

किसी अवसर पर असम्भव में असम्भव काम भी मनष्य कर लेता है। कष्ट में लेट लेट दा मौ गज क फासले पर घुरड़ की गदन पर क मफद धस्त्र पर लिपाना लगाना एकम अमाध्य सा था। किन्तु फिर भी एक पाउडर द्वारा फरी गई गोली अपन लक्ष्य पर मड़ी बठ गई और बन्दूक की आवाज पर घुरर घूर चानन लगा। जब तब पहला घुरड़ लड़कता हुआ चट्टाना क पाम पहुचा तब तब घाय दानो घुरड़ भी नीच को लड़कन लग गय थ। गाँववाला न पहलक कभी गइफन की घाट देगी न थी। जब तीना घुरड़ लड़कते हुए हमारे विस्तृत सामन आकर रुक गय तब उनक आन्ध्र की सीमा न रही। कुछ क्षणों क लिय चपावन क मरभानी का क भूल म गय और लपक कर घुरड़ा को उठान नाचे में उतर पड़। घुरड़ा क गिकार म मझ बड़ा लगन हुआ। पेट भर खान को माम मिलन क साथ ही साथ लगा का मुझ पर विवास मा होगया।

गिकार क किम्ब मघना ताड़ रहने है और बार-बार मुना चुबन पर भा उनका मजा बना ही रहता है। म कुछ दूर पर बठा हुआ जलपान करने हुए घामीणा की शपें मुनता जा रहा था। काँ जार जार म बिल्लिकर अपन मित्रा को बता रहा था कि किम भानि घुरड़ एक मोर को दूरी पर जादू की गालिया म मार लिये भय और काँ इस बात पर दाना नले उगती दवा रहा था कि भर हुए घुरड़ माह्व क परा पर कम आ रव।

मध्याँ का नात्रन कर चुबन पर मनिया न मुझम पूछा कि मझ बिनन मनुष्या का आवयवता हागा और म किम आर जाडेगा। मन पाम राँ लगा पर दृष्टि डाली ता गव ही का उम्भुत पाया। भर मन अपन दा पुरान गांधिया

का छोट्टिया और पय प्रदग्गन क लिय उह साथ लकर उस आर चल पडा त्रिपरे आत्मखार न अपना अतिम दिकार किया था ।

हमारे पहाडा में रहनवाले लाग अधिकांग हिन्दू ह और गवा का दाहकम करने ह । यदि कोई मनुष्य आदमखार द्वारा मार डाला जाना ह ता मृत व्यक्ति क बाघवों का यह मतव्य हा जाता ह कि दाहकम क हतु शरीर का कुछ न कुछ भाग भले ही हट्टा के टुकड हा त आव ।

इस मृत युवती का अभी दाहकम नहा हुआ था । इसीलिये जब हम वन का प्रस्थान करन लग ता उमक रिस्तगारा न हमम अनुराघ किया कि उसक शरीर का कुछ न कुछ अभाग लते आव ।

मुझ अपन बाल्यकाल मे ही जगल की वाता का पान व उनकी व्याख्या करन का ध्यमन सा (hobby) ह । इस वार मेरे मामन उन स्त्रिया का आखा देखा वगन था जा घटनास्थल पर उपस्थित थी किन्तु धर्मदीद गवाहा पर भरासा मही किया जा सकना । हा जगल क कुछ बिह स्वय अपनी बगनी माफ कह लिया करत ह ।

घटनास्थल पर पहुचत हा दखन पर मुझ मालूम हा गया कि शरती बिना त्रिखार्द पड वक्ष तक कच एह हा रास्त स पत्रव सक्ती था और वह रास्ता था नाग क ऊतर स । पेड स मो गज दूर स नाउ में घुम पडा और साजन पर दा बड़ी चट्टाना क बीच छती हुई मुगायम घूट पर अकिन शरती के साथ मुझ त्रिखार्द पड । पत्रिहां स पना वठ गया कि आदमखार धवय ही शरती ह और प्रोक्षावस्था में पनापण कर चुका ह ।

नागे क कुछ भाग और वृष स लगनग दम गज दूर शरती एक चट्टान क पाछ लट चुकी थी । गभवन बटवक्ष पर स उतरती हुई स्त्री का प्रतागा बग्नी रहा हागा । मृत स्त्रा न सबम पत्रव अपनी आकायकतानुगार पतिया का ली और जम ही एक पनका घागा क सहारे व वृक्ष स नाच उतरन लगा ता शरती गरव कर आग बड़ आई और अपन पिछल पाँवा पर सडा हावर उमन औरत क पत्र का पकड कर शत्रव स उस नाग में गीच लिया । वक्ष की वह टहनी त्रिगक सहारे मृत स्त्रा लटवा हुई अपन प्राणा का रक्षा बगन का ध्यय प्रयत्न करती रहा हागी अना कहाना माफ क रहा थी । त्रिम म्यान पर स्त्री क शाय स टहना त्रिगती हागी उग जगह धात क बन्व पर उमना हयत्त स नुच हुए

घमड़ के कुछ रंग अब भी लटक रहे थे। जिस स्थान पर शरनी ने स्त्री के प्राण लिए थे वहाँ हाथापाई के स्पष्ट चिह्न थे और पाम ही गिरा हुआ कुछ रक्त मूतकर जम गया था। यहाँ स रक्त की धार जा मूत चकन पर भा माफ लिखाई पड़ रही थी नाउ के दूसरे किनारे की आर खला गई थी। रक्त की धार देखते हुए हम उन झाड़ियाँ पर जा पट्टे जहाँ बठ कर शरनी ने स्त्रियों को मारा था।

जनसाधारण में यह पक्का विश्वास है कि आत्मखोर मनष्य या स्त्रियों के हाथ पर या सर या नहीं खाते किंतु यह विश्वास गलत है। आत्मखोर यदि खाते समय न छूट जावे तो सब कुछ खा लेते हैं यहाँ तक कि रक्त से मन हुए कपड़े भी। वर इस बार हमका मृत स्त्री के कुछ कपड़े के इन्हियाँ के टुकड़े मिले जिनको हमने एक माफ कपड़े में ढपट लिया। यह लंग का बहुत ही छोटा गप भाग था किंतु तो भी शक्तिशाली के लिये पर्याप्त था। हम उल्लवुल की स्त्रियों का राम्य का गंगा माना में विमजने करने के लिये यह हट्टी के थोड़े से टुकड़े काफी थे।

शायद ही चुकन पर मैं दूसरे घटनास्थल पर पहुँचा। गाँव का आम सड़क के कुछ इंच मरुब का एक टुकड़ा था। इस टुकड़े के मालिक ने अरन लिये एक शायदा बना रखवा था। इस मनष्य का पत्नी के उसकी वहिन शायद से कुछ ऊपर घाम घाट रहा थी कि अबस्मात् शरनी निकला और बनी वहिन का उगा ले गई। छोटी वहिन ने अरनी हसिया उठा ली और वह सौ गज तक दारना के पीछे भागना रही। चिन्ता हुई कि शरनी से अनराध करना जा रहा था कि उमकी वहिन के स्थान पर वह उम लेती जाय। उमके इस अविश्वमनीय दुस्साहसपूर्ण कार्य का गाँव के समस्त लोगों ने देखा।

सौ मंत्र तक दारना अरन गिनार का लाने शरनी और फिर उम भूमि पर रन कर शरनी हुई क्षणता पाछा करने वाला स्त्रियों पर झपट पडा। यह बार रमणी गाँव का आगे भागी लागी का गुनाज कि उम पर क्या चीत चुरी था। किन्तु उम मालूम न था कि गाँववाले मरुब सब कुछ देख चुके थे।

यकनी के गले में माफ आवाज नहीं निकल रही थी। लागी ने गाँव के विषय ध्यान और उत्तर्जना के कारण लगा हाथापाई लागी। किंतु जब वह मृत स्त्रियों की अथवा मात्र कर वापस लौटे तो उनका मालूम हुआ कि वह क्षमागिन अना वापस की गति ला बने थी। यह दुःख का नाम मृत गाँव में गुनाई गई। जब मैं उम यकनी के शरण पर पहुँचा तब मैं उम के गले धान में मालूम पाया।

उस मूंगी हुए बारह मास हा चुक था।

उसकी आवा में दुःख की स्पष्ट छाप थी किन्तु और सब बातों से वह एकदम तीव्र लगती थी। जब मैंने उसे बताया कि मैं पाला कबल आत्मखार को मारने हा आया हू तो उसने झुपकर धर पीठ छ लिये। मैं विमिया-भा गया क्या यह उम्मा था कि मैं आदमखार का मारने में सफल ही हाऊंगा ?

हा यह मन्थ था कि मैं हम नरभक्षिणी का मारने का प्रण ही करे इधर आया था किन्तु यह करने ही इन बातों के लिये कुम्पात थी कि वह एक प्रदण में दो बार हत्या नहीं करती था और लंग पर दुवारा नहा लीपता थी। कई मी वग माल लम्बा-सीडा उसका राय था जिममें वह खलती रती थी। एमी अवस्था में उसे खात्र पाना घाम के डर में मूर्च्छितना था।

यद्यपि मैं ननीमाल में कई यात्रनाए धना कर चला था जिममें मैं एक मैं आजमा ही चुका था और फिर मैं उस आजमान का भरी इच्छा न था। जगल में पत्रककर धप यात्रनाजा का मन उचित न पाया। वहा कई भा मनष्य एमा न था जो मुझ गय न गदता क्याकि कुमायू में यह मन्थप्रथम आत्मखार था। कुछ न कुछ करना फिर भी आवश्यक था।

तान्त्रिक मैं मुवह मैं गाम तक जगल में भ्रमना रहा। जो जो धरना व अट्ट मूल गविकाला न बनलाय उह मन छान डाला।

यहा पर मैं एक धान का गहन कर रना चाहता हू। पहला मैं यह आम अन चाह ह कि कई अरमरा पर आत्मखारा का आर्पित करने के लिये मैंने मिथिया का पागाव पहना ह और उनका हमिया या कुल्हाडी मैं मागा ह किन्तु बात एगा नहीं ह। मन बयल कभा-कभा गागल पन्नि कर छ म थप में घाम जाती ह और वृण पर चढ़ कर पस्त बाल ह। किन्तु हम खालकी मैं मुझ कभा भा सफलता नहीं मिग यद्यपि दो बार मैं एम थप पर चढ़ चुका ह जगल पर आत्मखार आकर सटान या गिर हूण वृण का आट में छिप गया था पर उमन मुझ गाली खगल का कभी अवसर नहीं लिया।

हा तो हम धार एगा प्रनात हा रहा था कि करने न यह प्रण छान लिया ह। मन मन पाग मैं १२ माग पश्चिम में पारान जान का निषय लिया। हम मरह हो खाना हा गय और धुनाया में जगल कर के मृपान्त के मण्य खरा पन पढ़े गय। यग मरह पर अरल पन्ना गतरन गागल गमगा न जाता था।

एक गाँव में हमारे गाँव का ज्ञान के लिये लग जल्य बना कर चलत था। चपावत पहुँचते पहुँचते हमारी आठ मनुष्या की टांग में २२ जवाना की ओर वृद्धि हा गई। इनमें से कुछ आत्मी उन बीस मनुष्या की टांगी में से थ जा दा माह पूव चपावत आय थ। उहान मझ निम्नलिखित विम्सा सुनाया।

‘चपावतकी यह बाजू सठक पहाड के दक्षिण आर होती हुई घाटी से ५ गज ऊपर का जाती ह। आज से दा माह पूव हम बीस जवाना की टांगी चपावत बाजार का जा रही थी और जब दोपहर के समय हम हम सठक पर होकर गजर रहे थ तब हमें नीचे घाटी में आती हुई किमी मनष्य की चीत्कार सुनाई दी। समाप आता हुई उन चीत्वा का सुनकर हम भय से बाप उठ और इतन ही में सामन से एक नग्न स्त्री का ग्य आती हुई एक दरनी लिखलाई पड़ी। दरनी के एक आर स्त्री के कंग भूमि पर घसिदत जा रहे थ और दूसरी तरफ उसकी टांगें। दरनी स्त्री का पीठ से पकड़ हुई था। स्त्री छाती पीन्ती हुई चिल्ला-चिल्ला कर सहायता की प्राथना कर रही थी।

हम लागा से पचास गज की दूरी पर दरनी अपन शिकार का लाट हुए निकल गई। फिर धीरे धारे स्त्री की चीत्कार बग होगई और हमन अपना रास्ता पक्का।

और तुम लाग सत्या में बीस हात हुए भी चपचाप देखत रह ? मन पूछा।

‘हा माहव हम चुपचाप दगते रहे क्याकि हम बहत डर हुए थ और हुजूर डर हुए आत्मा कर ही क्या सबत ह ? मान लीजिय कि अपन प्राणा का सबत में डाल कर हम उस स्त्री का छडा भा एते ता हमारा प्रयत्न व्यथ जाता क्याकि वह स्त्री शत विदात थी और घावा के मारे अवश्य ही मर जाती।

तत्पन्तर मुझ मालूम हुआ कि मृत स्त्री चपावत के एक गाँव का रहत याली था और दरनी के आक्रमण के समय जगल के इधर के लिये लक्षडिया थीत रही थी। उगकी गहनिया ने मन्त्राण गाँव में घन्ता का सूचना दे दी। जम हा कुछ लाग लाग का हुडन के लिये एकत्रित हा रहे थ कि घन्ता के सागी बास मनुष्या का टांग उग गाँव में पहुँच गई। इन् मालूम था कि दरना लाग का किम गिना में ल गई थी। अत वह भी ग्राजन धाला के गग हा लिये। आग का वृत्तल में उनी के घन्ता म सुनराता ह।

‘हम पचास-आठ जवान मृत स्त्री का ग्राजन चल और हम में म कई

बन्दूक से सगास्र था। हमें एक स्थान पर उम स्त्री की जमा की हुई खडिया मिनी और इस स्थान से लगभग एक फर्लांग के फासले पर उसके कुछ फल हुए बपडा। हम लागान जार स डोल पीठना थ हवाई बन्दूक छाडना आरम्भ कर लिया और इस भाति हममें स आध आग बर कर घाटी के ऊपर पहुच गय। महा हम मूल युवनी एक बडी गिजा पर पडी हुई मिल गई। गरनी न शव का घाट कर साफ करन के अनिरिक्त छा भी न था। चूकि हमार माय बाई स्त्री न थी इसलिय गन दाय का घाना म लपेटते समय हमनें मूह फर लिय। गनाबस्था में वह एमी प्रनोत हा रही थी मानो गहरी निद्रा में सो रही हो व जागन पर उम लज्जा मान्म होती।

लागा न कई रातें दरवाजा पर खुडिया लगाकर बठ-बठ काट दा। एम किस्म रात निन हा रहे थ। ग्रामीणों के चरित्र एव जीवन में एक महान परिवर्तन सा हा चला था। और होना भी क्या नहा क्यकि समस्त प्रदेश म आत्मचार का आतक पला हुआ था। इन लागान के बीच में यनि बाई वाहर का मनुष्य आ जाता ता उम लगता कि वह एक एस कण एव भीमल मसार में आ गया ह जहा सुबील दातों और पजा का राज्य ह और जहा पर व भय स लाग अधवारमय गुहाजा में कारण ल रहे ह। इन निना म अतभवहीन था किन्तु फिर भी भयभीत लोगा व उम देग में कुछ दिना रहत म मुस पक्का विन्वास हो गया कि आदमखार की मनहूस छाया के नाच रहन स बढकर भयकर बाई अन्य काम नहा। अब मेरा बत्तीस बरों ना अनुभव इस वान का पुष्टि करता ह।

बपावत क सहमीलार क निय मुस कुछ सरकारी परिवय पत्र निय गय थ। रात का सहमीलार मुसस मिलन डाकबगउ में आय। उहान मुस राय दा कि अगल निन म एक दूमरे मवात में चला जाऊ तिमव इन्-गिन् शरना न कई प्यक्तिवा का मारा था। दूगर निन तदक ही म सहमीलार का लकर नय बगल की आर चल पडा। म माना मा ही रहा था कि दा मनुष्य गवर लाय कि दम मी दूर एक गीय में शरनी न एक गाय मार डाला ह। सहमीलार का एक आचरक काम स बपावत वापस जाता था। थन मघ्या का आकर गन मर मग विनात का वापस करक बर चर गय। मर पय प्रणय पान में तत्र थ और एकम दातू रास्ता हात हुए भा लम मील का पागला हुमत पाल्य मारन

सय कर लिया। गाँव पहुँचने पर मन्न वह गाँगाडा में चै गय जहाँ एक नही भी बछिया मरी पड़ी थी और लाश का आधा भाग खाया जा चुका था। स्पष्ट था कि बछिया का इत्यादा शर नहीं बल्कि तदुया था। तदुव क लिय लाग पर बैठन की न ता मरी इच्छा थी और न मरे पास समय ही था। इसलिय खबर लाग वाला का उचित पारितापिक चै कर म डाकबगल वापस चला आया। सहगोल्लार अभी लौटा न था। त्तिन डूबन म अभी एक घट का समय था। म डाकबगल क चौकीदार का साथ लेकर उस आर घट पडा जिघर उसके कहन के अनमार घरनी पानी पिया करली थी। म स्थान से पानी का वह भाता निकला हुआ था जिसम सम्पूर्ण ग्राम की मिचाई होनी थी। सात के इद-गिद मुलायम बाबड म घरनी क कई दिन पुरान खात अवित थ। किन्तु य खात उन खाँदा म भिन्न थ जा मुझ पाली क नात में भिन्ने थ।

डाकबगल लौटन पर मन सहगोल्लार को उपस्थित पाया। बरामने म घठ कर मन उन्हें अपनी सम्पूर्ण त्तिनधर्या मुना दी। त्तिन भर जगल में भक्कन पर उतान दुग प्रगत करत हुए कहा कि रास्ता मराव हात के कारण वह अब चर रेंग। मुझ यह सुनकर बडा विस्मय हुआ कयाकि त्तिन में दो बार वह मुझसे कह चुक थ कि रात क मरे साथ रहग। उनक रात म मरे मग रहन का प्रस्न न था किन्तु क उस घन बन में स जात हुए यडा पतरा उठा रह थ। मन उत बहुत ममपाया किन्तु उतान एक मा न मुना। एक आत्मा की साथ लेकर वह चल पड। आत्मी क साथ म एक टिमटिमाता लालन थी जिसमें स धुधठ प्रकाश की क्षण रणायें निकलकर लज्जानी हई रात्रि क निविड अघकार में या मी जा रही थी। मरे मह म दबा आवाज में बाह निकल पड़ी और जय लालन का टिमटिमाहट अघकार म विनीत हा गई तब म कमरे में चला आया।

दूसरे त्तिन प्रात बाल म पास क विम्बुन चाय क पत्रा क बगीचा में घूमन में मगल्ल रहा। फिर मान में स्नान करके डाकबगल लौटा ता सहगोल्लार का बडा पाया। मन गताप का एक गहरी गाम ला। म खडा उनम यानें बरगा जा रहा था और नीप डात में बग हुए शाम की आर खलता जा रहा था जिसक पाग आर जत हुए मत थ। और तब मरा दृष्टि एक मनघ्य पर पडा जा गाँव म हमारी आर मगपत चला आ रहा था। उगवे कुछ ममीप आ जान पर मन ख्या कि कभा यह चल रहा था और कभी दौड़ परना था। मातूम हाना

था कि वह निम्ना आश्रयक सूचना का वाहक था। तत्कालीनर को ठहारा कर म दौड़ कर पहाड़ म नाच उतर पडा। मझ अपना आर आन दख वह मनुष्य मुस्तान घग्ना पर बठ गया। जम हा म उनक ममाप पहुचा वह विल्ला उठा ताहव जल्दी आश्रय आश्रमगाए न एक लडकी का मार डाला ह।

धुपचाप इमा जगह ठहरे रना कहन हुए म उन्ट पाव डाकबगल को भागा। राइपन व बारतुम उठान-उठान मन तठमालीगर का खबर सुना दी और साथ हा लन व गिय बहा।

खबरलानवाला मनष्य उलजिन स्वभाव वाल उन महानुभावा में न था जिनका जवान ओर गाय साथ साथ काम नहीं कर मवनी। जब यह वालना ता गडा हा जाता और चलन पर उमका जवान में नाला पड जाता था। मन्त में मन उमम बहा कि मह बल करक मरपट चलन चला और हमें रास्ता बतलाया।

हम चुरचाप पहाड़ पर म नाच उतरन ल्य। गाँव में पहुचन हा उमजिन म्ना-पुरवा क झड न मुझ घर लिया ओर जमा कि प्राय एम अवमरा पर हुआ करता ह प्रथक अरन गंगा में मुझ बिस्ता मुनान का प्रयत्न करन ल्या। भाड में एक आत्मा काटाएल का गाल करन का व्यथ प्रयत्न कर गहा था। म उमका हाव परन कर एक आर न गया और घग्ना का विवरण पूछा। उमन गाँव न लगभग एक पन्नीग दूर एक गाल का आर ग्नाग विया जिन पर कुछ बात क बग गड थ। उमन बताया कि गाँव क कुछ लग पडा क नाच लकडियाँ बढार हू थ कि शरना न झार कर १६ १७ वष को एक वालिना का परड लिया। उमक माया सुरल भाग कर गाँव में आ गय। उन् माटून था हा कि म डाक बगल म ठहरा हुआ ह। लन कलाल एक दून मुझ बलान दोडा लिया गया।

जिन मनष्य म म बाने कर रहा था उमका म्ना घग्ना का गागा था। उमन उगा म उम दखल का आर मकन विया जिनक नाच घग्ना न लडका का परहा था। जिना ना मनष्य न भागन ममय घट दखन का प्रयास न विया कि शरना लडका का जिन गिा में न मर्।

गागा का खरचाप गाँव में रह रहन का आगा कर म उम बग का आर बग लिया। य विहु गला हुआ म्थान था और विराग न जाना था कि शर क आकार का पन किम मानि विना गि वाग्न आश्रमिया क बाब पत्रक गया। गागा का ध्यान लडकी का हवी बागे मुनन पर आकषित हुआ था।

घटना के परिणाम स्वरूप घरती पर रक्त का एक सूखा तालाब अवक्षय था। रक्त का हात्मा के विपरीत पास ही पग बिलरा हुआ नात्र रग व मानिया का एक पटा था।

यहां से रक्त का धार पहाड व बिनारे तक चली गई थी। गेरनी के खास माफ दिव रहे थे। खाता के एक आर खून के बड घब्र पड थे जिधर लडकी का गर रहा हागा और दूमरी आर गगा व घमोटन के बिहू थे। आय मोल ऊपर घडन पर मझ लडकी को माडी पनी इई मिग और कुछ दूर आग पहाड व गिलर पर उसका लहगा। पुन घरती एक नगन म्ना का ल जा रही थी। विन्दु गनीमत थी कि इस अवसर पर स्त्री मर चुकी थी। पहाड के ऊपर गरनी व खास विघार का एक झाडा म चल गय थे। झाडी व बाता में मत बालिका व कुछ बाल वग उलझ हुए थे। इसका आग खास विच्छा की झाडी म डाने हुए निकले थे। म झाडी का चक्कर लगा कर आग बढन ही का था कि पाछ से जिगा व परा की चाप मुनाई पनी। मुड कर दखा तो बन्दूक से मुमन्नित एक मनुष्य मरी आर चला आ रहा था। मन उससे पूछा कि मरे आरग का उल्लघन करने हुए वह क्या मरे पीछ चला आया। उत्तर म उमन बताया कि वह तहनीगर की आगा म आया था और उनकी आगा का उल्लघन करने का माहम उगमें न था। मर मग चलन पर वह तुला हुआ था और बालकिया करन में अमून्य समय नल जाना था। अत मन उसका जूत खोल कर चुपचाप मर पीछ आन का जागा द दी। मन उमम यह भी कह दिया कि इधर-उधर मावधानी में नैवता हुआ चले।

म स्वय जाधिया इन्व मात्र और ग्वर व मल्ल वागे जूते पहिन हुए था। विच्छा का झाडा म वह निकलन का अय उपाय न दमर म कीटासे छिन्ना हुआ आग बड गया। झाडा व पीछ रक्त का धार विलुल दाहिनी आर मुड गई था और फिर पहाड म ललम नात्र चला गई थी। पहाड व नीचे घाग म निगल व 'भौन की घनी झाडियां था और रक्त की धार लगभग सी गज नाच एक पाना व गान तक चला गई था। अत म्यान म गिमन हुए पधरा व मिट्टा व दला म माहम जाना था कि घरती का मग पर जाना चाप लर चलन में बाधा ललगाव हुई हागा। पाच छ मो गज तक म पाना व बिनार बिनार चलता गया। जम जग म आग बड रहा था मर गाथा की भरगहू भी बरती

जा रही थी। कई बार उसने मेरा हाथ पकड़ लिया और सजल नत्रों से मरी और देख कर फुसफुसान लगा साहब मन अभी-अभी गर को हुआरते हुए मुना ह।

आध पहाड़ से नीचे उतर आन पर मुस एक २५ ३० फीट ऊची चट्टान नजर आई। मेरे साथी की आदमखार के गिकार के मज लूटन की शक्ति अब समाप्त हो चुकी थी। अब मन उससे कहा कि मरे लोटन तक यह चुपचाप चट्टान पर बठा रह। यह सुनकर उनकी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा और एक छलाग में चलने की भांति वह चट्टान पर जा बठा। उसे सबुसाल बठा देख म पुन पानी के किनारे चलन लगा। पानी का साता चट्टान के किनारे घूमता हुआ सी गज नीचे एक गहरे नाल में मिठ गया था। इसा संगम के पास एक छाटा ना पोखर था। पाम पहचन पर देखा तो पोखर के पास खून के घब्व पड हुए थे। धरनी अन्ध हा मृत बालिका का महा तक लाई थी और मरे पहचन से उमके भाजन में विघ्न पडा था। बीचड में अन्ध गहर खादा म मलमला पानी भरता जा रहा था और इधर-उधर कुछ टूटी हड्डिया विसरी पडी थी। एक बीज वहां पर एसा पडी हुई था जिस म बहुत दूर म देखता चला आ रहा था। समीप आन पर मालूम हुआ कि यह लडकी की टाग था।

इधर कई वर्षों से म नरमणो धारा का गिकार करता आया हू किन्तु एसा मनहस दृश्य मन अभी न देगा था। मृत बालिका की उस सुगठित टाग को धरनी के पन दाता न इग भांति बाट दिया था जम किसी न तेज कुल्हाडी की घाट से अन्ध कर दिया हो। ठीक घुटन से कुछ नीचे टाग बनी हुई था। अब भी उसमें से गम खून टपक रहा था। कटी हुई टाग का दमन में म इतना तमय हा गया था कि भूल ही गया कि म कस छतर म घिरा हुआ था। लपक कर मने चन्द्रक का कुला कम से गटा लिया और दाना उगलिया घाड पर रख ली। सर उठा कर देगा ता लगभग १५ गज ऊपर म मिट्टी का एक डगा लुडकता हुआ पक्षु स पोकर में आ गिरा। म एक नौमिगिया गिकारी की सी भूल कर बग था अन्धपा मुस इम प्रकार मुली जगह में गड न रहता चाहिय था। मन तत्काल अभी राइफल का ऊपर का उठाई उगी स मभवत मरे प्राण बच गय थे। धरना जब मुग पर कूटन से गनी या पाछ लीकर भागा उगी समय उगक परा म गिमक कर वह मिट्टी का डगा गिर पडा था।

पोखर का किनारा ऊँचा था और दीढ़ कर चढ़न के अतिरिक्त और कोई चारा न था। मन कुछ पीछे लोट कर दीढ़ लगाई और एक छलाग में पावन का गणधर हुए किनारे का झाने का पकड़ लिया और उचक कर ऊपर आ गया।

स्ट्रीविलिय के मुँह हुए डठल धारे धार तन कर सीधे हा रहे थे। शरनी अवश्य ही अमा इधर से गुजरा था। पास ही चट्टान पर रक्त के चिह्न पड़े थे। जब शरनी मल्ल हूँडन आई थी तब धायल लान का हमा चट्टान पर रख गई थी। आग घडा मा पघरीला प्रदेग था। इसी पर हाकर शरनी लान महित गई था। इन चट्टानों पर चरना बना बरिन था। चट्टानों की तरंगों के पावा के ऊपर किलमाड के रोन का घनी लनाग उग आई थी। एक भी बरम गलत रगन पर अवश्य ही गण-परो से हाथ धाना पडता। इन बाधाओं के कारण रक रक कर चरना पड रग था और उधर शरनी का अचना कलवा घट करन का अवकाश मिलता जा रहा था। मुझ के म्याना पर निगान मिठ जहा बठ कर शरनी सुम्ताई था। आग रक्त का धार कम होता जा रहा थी। शरनी का यह चार सो छतीमवा मानव शिवाय था और लान का राने समय लाना द्वारा छनी जान का ना यह आना था किन्तु भरा समय में उस समय प्रथम बार हा शरनी दखना से उमका पीछा किया गया था। फलतः गुर्रा कर वह क्षपना प्रायः प्रकृत करन लगी।

धरनी गैरलिट का पूरा आतक बरन रहा समय सक्ता है जा मरी जमी बरिन परिस्थिति में फस जावे। चारा आर घना वन इधर-उधर बड़ा-बड़ा चट्टानों और बरम बरम पर शरनी में गिर कर शरनत नुडवान का भय।

आप मड में आग के पान कर कर इस कहानी का पकड़ हाँगे। मैं इसकी कल्पना भी नहा कर सक्ता कि आप मरी भावनाओं का समझ पावग।

शरनी का गजिन से ब आत्रमण का सभावना से मुन भय भा लग रहा था और आगा भी। मैं सोच रहा था कि यदि प्रद्व हाकर शरनी मल्ल पर थकस्मात् आत्रमण कर दे ता मल्ल बना आन के बाय का गिद्ध करन और उमके समस्त अत्याचारा का बरला लन का गुज्रमर मिल जाय। किन्तु उमका गुर्राए एक घडरा मात्र था। जब उमने दखा कि उमरा गुगन पर से और भा तपारना से उमका पाछा कर रहा है ता यह चुप हा रही।

म धार पर से उमका पाछा कर रग था। गामन का शाडा का शिन्तन से कई

बार धन चुका था किंतु गरनी का एक बाल भी मुझ अब तक नहीं खिंचा था।

मामन के पहाड़ों पर चढ़ते हुए अधकार का देव कर आगे बढ़ना मन उचित न समझा।

इस बार भ्रामृत युवता हिन्दू का और गण्डम के लिये दाव का कुछ न कुछ भाग ले जाना आवश्यक था। इसीलिये पाखर के पास से गुजरते समय मन टांग का भूमि में गाड़ दिया ताकि रात में शरना उम उग न ले जाय।

चट्टान पर बठा मनुष्य मुझ दल कर बड़ा सतुष्ट हुआ। मरे दर तक न गैरत न और गरनी की गर्राहूँ मुनकर उम पक्का विश्वास हा गया था कि माहव का भी गरना न धपन भाजन में शामिल कर लिया है। उमन मुझे स्पष्ट कह दिया माहव सारी फिज इस बात का थी कि अकेले गाँव कम लौटूँ?

पाखर से नाथ उतरते समय न मोचना जा रहा था कि भरा हुई राइफल से सगहन मनुष्य के आगे कल्पि नही चलना चाहिये। किंतु मुझ गाल्र हा आना विचार बल देना पना। मरे साथी के हाथ में ४५० बन्दूक का जिममें मरती बच (घाण गालन के बल करन वाला पुड़ा) नहीं लगा हुआ था। चलते चलते अकस्मान् उग आदमी का पाव पिंगल पड़ा और वह गिर पडा। बन्दूक का नास ठोक मराआर मह वाय तक रही थी। तबस मन प्रण कर लिया कि आत्ममार करा के गिकार में माथ किमा का न ल जाऊगा क्याकि माथ का मनुष्य यदि बिना हथियार के हाता उमकी रक्षा करना कठिन है और यदि वह सगहन हो ता स्वयं अपना रणा करना और भा कठिन हा जाना है।

पहाड के गिकर पर पहुचन पर न बठ कर घूमपान करन लगा और अगले दिन के लिये नई यात्रनायें माचन लगा।

यह ता स्पष्ट था कि गन में शरना दाप लाग का साकर अगले दिन चट्टानों में पडा रहणी। बहा उम गत्रना सगहन कठिन था। और यदि उम पर गागा चलान का अयगर न मिलता ता ध्यय में छट ज्ञान के कारण वह कल्पित हमारा के लिये उग प्रण का छात्रता और उगम मरा मयक हूँ जाता। अनएव यदि काया धारमा मित्र मरन ता हाइ शरा हा सफलता का आगा को जा गता था।

५१९९९ का कपलर पर ३९९९९ था। नाथ पणना ग पिगा हवा एक मरान

था। चारों ओर वही भी आवादी नहीं थी। इस मैदान के बीच से बूल काटती हुई एक छोटी पहाड़ी नदी निकल गई थी। पूर में चट्टानों से टकरानी हुई यह नदी उत्तर को घूम गई थी और सामन के और उसके बाच में एक सजुचित मुहाना-मा था।

सामन लगभग २ फीट ऊंचा पर्वत था जिस पर हरियाली बिछी हुई थी और बीच-बाच में भीड़ के वृक्ष खड़े थे। पूर की ओर ता पहाड़ इतना ऊंचा था कि घुरड के अतिरिक्त कोई भी अन्य जीव वहा नहीं पहुंच सकता था। यदि मुझ नहीं मं लकर पहाड़ की चगार तक हूँकवान के लिय पर्याप्त मनष्य मिल जात ता अवश्य ही शरनी महान में से हाकर निकलती। हा यह अवश्य था कि यह हाँवा बडा कठिन था क्यकि पहाड़ का यह भाग घन जंगल से आच्छादित था। जिस जगह में शरनी का छोड आया था वह भाग केवल सवा तीन मीटर लंबा व आधा माल चौडा था। फिर भी यदि मुझ अच्छ हूँकवय मिल जाते ता अवश्य ही शरनी पर गानी चठान का अवसर मिल सकता था।

गाव में तहमीन्दार भरी प्रतीक्षा कर रहा था। मन उसे समस्त स्थिति भली भाँति समझा दी और अनुराध लिया वे बिना विलम्ब के अधिक में अधिक आदमियों को जमा कर लेव। जिस वृक्ष के नीचे लठनी मारी गई थी वहा दूसरे दिन प्रातःकाल १ बज मिलने के लिय मन उनसे कह दिया। भरसक प्रयत्न करन का वचन देकर वे चपावत लौट गय।

दूसरे दिन वो फलत ही में जाग गया और कुछ खा-पानर मन अपन आत्मिया से सामान बाधन के लिय बठ लिया और यह आदेश भी दे दिया कि चपावत में वे भरी प्रतीक्षा कर। इसके बाद में उस प्रदेश का निरीक्षण करन चल दिया जिसका हूँकवान का भरा विचार था। बहुत कुछ सोचन पर भी मुझ अपनी याजना में कोई त्रुटि नहीं लियाई दी और निश्चित समय से एक घट पूर ही में उस जगह जा पहुँचा जहा तहमीन्दार में मिलन का मन बापदा किया था। यह ता में जानता ही था कि तहमीन्दार का आदमिया का एकत्रित करन में काफी कठिनता हागी क्यकि प्रत्येक मनष्य के हृत्प में आत्मघार के भय की गहरी छाँ लगी लगी थी और केवल बुलान ही में लाग घरा के बाहर निकलन का तयार न था।

ठाक दम बज एक मनुष्य का लकर तहमीन्दार जा पहुँचा। फिर दो-दा

चार-चार का मन्था म मनुष्य एकत्रित हान लग ओर दोपहर तक २३८ मनुष्य इकट्ठे हो गये।

गावा में लग प्रायः चुरा कर बिना 'लाइसंस' की बन्दूक भी रख लेते हैं। इस अवसर पर तहसीलदार ने घोषणा कर दी कि एम गस्कानुनी दास्ता को देख कर वे मुह फिरा लेंगे। इतना ही नहीं आवश्यकता पड़ने पर तो लोग उनसे गाली-बाली भी ले सकते हैं। उस दिन जा मित्र-निमित्र प्रकार के गस्त्र लागा के हाथों में लिपटाई लिये उनसे एक अच्छा खासा अजायबघर भर सकता था।

सब लाग जब तहसीलदार से गोला-बारूक लेकर तयार हो गये तब म उन्हें पहाड़ के ऊपर उ गया जहाँ मूस बालिका का लहगा पड़ा हुआ था। फिर मन इतारे से उह एक विजला से गिरा हुआ वृक्ष बता दिया और कहा कि एक पक्षि में सब वहाँ पर गड रहूँ और नाच से मरूँ म्माल हिलान ही जिनके पाग बन्दूकें हैं वे उहें दाग दें और अन्य लाग नाच की आर बड़-बड़ ठाँवें लड़का कर काताहल करार रखें। इस बात की बड़ी चतावनी म उन लागों का देता गया कि मरे लोत्न से पहाड़ पगड से नीचे कोई उतरने की क्षणा न करे। जब मुझ विन्यास हुआ गया कि सब लाग न मरे आत्मा का मली भाति मुन लिया हूँ तब म तहसीलदार के साथ नाच उतर पड़ा।

तहसीलदार हकचर्मा के साथ रहने का तयार न था क्योंकि उन लागों के पास पुरानी बन्दूकें या जिनके फलन का डर था। एक लवा चक्कर देकर म घाटी के ऊपरी भाग का पार कर गया। फिर मामने के पगड पर खडबड़ विजला से गिरे हुए खोड़ के वृक्ष के समीप पहुँच गया। यहाँ म पहाड़ एकत्रित बालू हो गया था। तहसीलदार फल तल के जून पहिने हुए थे और छात्रों के कारण आग चलना उनसे लिये डूबर सा हो गया था। अतएव वे अरुण जू उतारने लगे। उधर लाग न माथा कि म बलाचित् म्माल हिलाना भूल गया हूँ। उहाँन मूब गार मवान हुए बन्दूकें दाग दीं। अभी म मुहान न बड़ मो गज हूँ था। म यक्षपन से हूँ पगडा में पला हूँ और चलने का बाधा आता हूँ अन्यथा उम दुगम पय पर दोड़ने म हाय परा का गेट जाना माधारण मो बात था।

पगडा से उतरने म लग चुरा था कि मुहान के पाग एक पाग का टकड़ा गा था। जल्दी में अन्य स्थान न मिलने म म कहा बट गया। मग पाठ उम पहाड़ का भाग थी त्रिपर म म अभा उतरा था। पाग लगभग दो पौं ऊँचा थी

और मर आष शरार का उमन टक लिया था। यदि म बिल्कुल निश्चल रहता तो समझ था कि धरनी मुझ न देखती। जिम पहाड़ का हाका हा रहा था वह मेरे सामने था। महान के सामने धरनी के निकलन की मझ पूण आगा थी।

पहाड़ के ऊपर धागाहल आरम्भ हो गया था। माग वन बन्दूका की आवाज लगेगी की धीमा व दोला के तुमूल नाच स गूज उठा। अकस्मात तय मन ऐसा कि दा मो गज पर दा नाला के धीष धरना उछलती हुई डाल मे नाच उतर रही थी। वह कुछ ही दूर गई होगी कि सहमीलनार न अपनी बन्दूक की दोना नाच उसपर छापी कर दी। आवाज सुनकर धरना लपक कर वापस लौट गई। उसका घाम में छिपने समय मन तन्परता से एक गोली उस पर निराग होते हुए भी चगा दा। पहाड़ के ऊपर आदमिया न बन्दूक का आवाजें सुनकर निष्कप निबाला कि अवश्य ही धरनी मर गई है। अन्तु। धरना बन्दूक चलाते हुए उहान एक अन्तिम हल्ला खोल दिया।

मुझ पूण आगा थी कि अब धरनी पहाड़ पर पहुँच जायगी। म साम राब हुए प्रतीक्षा कर रहा था। लगे व दार करने ही धरनी नदी का एक छगम में पार कर महान की आर आनी दिलाई पड़ी। मर हाथ में आधनिक ५ घाट राफल था। किन्तु इस की मझी मझी निवार के लिय चली हुई थी और इनका उचार पर अवश्य है। गाली चर कर लगनी। जब मर गाली चलाते पर यह लिख गई मन गाथा कि गागी पीठ के ऊपर से निकल गई और लोना मन्विल लपकर वह ठिठक गई है। किन्तु वास्तव में मरी गागी उगे रग गई था यद्यपि कुछ पीछ हटकर। फिर गर शकावर वह मुडी। फामला बयल गज का था और यह धरनी काय मरी आर विय हुए था। मन दूमरी गागी भी चला दो किन्तु जग ना बिहुष कर वह रह गई।

म बाप ने बन्दूक लगाय चगा माष रहा था कि यदि धरना आवरण कर लता क्या ना? म वत्र तीन बारतुंग माय में लाया था यह गाच कर कि सामरी गागी चलाते का अवसर आरगा ना मरा।

मोनाय म धरना न जायमण करन का निवार म्यगित कर लिया और नगा का पार करना है व पूर पयन के द्वारा पर बहुर एक साधा के पीर आ पड़ी। त्रड हावर वह शाड़ा का टरनिया का नाच रही थी।

मावधानी की परवाह न कर मन तहमील्लार का आवाज दी कि मुझ अपना बन्दूक द जाय। किंतु उत्तर में चिल्लाकर उठान एक लम्बा वाक्य कहा जिममें स बेबल पाव म मुन पाया। दूसरा उपाय न देखकर मन अरना राइफल जमान पर रख दी और दौडकर तहमील्लार के हाथा से बन्दूक छानक गी।

जस ही म नदा के किनारे पर पहुँचा गगना झानी स निकल कर मरी आर लपकी। जब वह मुसस बवल २० २५ गज पर रह गई ता मन तहमील्लार का बन्दूक माधी किंतु दगा कि कारतूम मरन का जगह एक सिरी खुले हुई थी। जब तस्सागार न खाना नाल साथ ही चला दा या तब नाउ फटा नहा था और शायद पुन खलान पर भी न पटना किंतु वारु का भभव स अवरान का भय था। अत्र यह खतरा उठान के अतिरिक्त और कोई माधन न था। मरुपा के स्थान पर लाहे की एक गिट्टी भी लगी हुई थी इसी म लय माधकर मन गरनी के खुले मुह पर गाला दाग दी।

परमात्मा जान मरा निगाना ही चलन बग या उम बन्दूक में २० मज तक गाला ठाक निगान पर फेंकन की शक्ति ही न था मरा गाटा धरनी के मर पर न लगकर उमक सहिन पज में जा लगा (वाक में मन गागी नामुना स निवाग)।

भाग्यवग धरनी में अब शक्ति नहीं रह गई था और पाय में गागी लगन हा उमन दम ताड लिया। खटान के ऊपर बल लडन गई।

म इधर हकबया की भूल ना ही गया था। ऊपर कोई चिल्ला रहा था वह पढी है खटान पर चला उम उतार कर उमक टुकड-टुकड कर डाल। लागा न धरना का दख लिया था और जाग म चिल्ला रह था।

हकबया के धरना के बाच में एक शरी था। म धरनी के पास पहुँच गया यह मर घुरा था यद्यपि मन उम बबड मार कर अभा तब निश्चय किया नहा था क्यारि मरे पास गमय न था।

हगा मवान हुए लाग दरें तक पथ गय। धरना का शर कर गुम्मे में बाँध बन्दूक बाँध मुस्ताड़ा का नाकें लिया रह था। पाय हा एमा बाद मनय्य ह दिगना धरना न नकमान न किया हा। भाड में एक मनय्य जा पाय उम दू का मरुपर था अरना तस्साग हवा में हिला-हिला कर चिल्ला रहा था

यह वही चुडल हू ज्विमन मरी औरत और दा छडवा का मारा था।

फिर अकस्मात् कालाहल छात हा गया और उस मनुष्य न अपनी तलवार नीची कर मुझसे बहा साहब जिस हत्यारित न हमारा सबनाश किया है उसे मरी देख हम पागल हा गय थ। हमारा एम असभ्यता के लिय आप व तहसीलदार साहब हमें क्षमा करे।

बन्दूक में से बचा हुआ कारतूम निकाल कर म नीचे उतर गया। मन लोपा की चट्टान पर पहुचन का रास्ता बता दिया। उहान दरनी का नीच उतार लिया। उस देखन चारा आर लोपा की भीठ ल्य गई।

जब गरनी चट्टान से मझार कूलन का प्रस्तुत थी मन धम्मा कि उमके मुह में कुछ कष्ट था। अब बली प्रकार देखन पर ज्ञात हुआ कि उमके कुछ ऊपर और नीच क दात टट हुए थ। किमी गिबारी की बन्दूक क छरों के कारण उसके य दात टूट हुए थ। बूकि अपना स्वामाबिब गिबार करन में उसे कष्ट होता था पालस्वरूप वह नरमसिणा बन गई थी।

गांववालों न मुझसे प्रायना की कि दरनी की खाल जगल में न उतारी जाय। व दरनी का लाग का समस्त घाम में प्रपान करना चाहते थ। साल्व अगर गांव के अंग्ते-बन्ध इम देख न ल ता उहे कभी मकीन ही न हागा कि यह हत्यारित मर चुकी ह। मन अपनी अनमति दे दा।

दो बड़ी टहनिया में घानो व माफा की महायता से गरनी का बाध कर कुछ आत्मिया न आदमशोर की टिक्ठी का कथ पर महप उठा लिया।

लाग पहाड पर चढ़ कर गाव को चढे। गरनी के भारी दात का साथ चलना अत्यन्त कठिन था किन्तु हाप से हाथ बाध गावधानी से वह चट्टाना पर चढते जा रहे थ। दरनी का लिय लागों का यह बल्य एमा प्रतीत हा रहा था जैसे पीटियां की मना गुबरन का लिय दोवार पर चढ़ रही हा। पाछ-भीछ तन्मील दार गाहव स्वय लदे चल आ रह थ। यदि भूल म किमी का पाव रण पडता या आत्मियों क बध हुए हाप ल जाते ता न जान कितन अभागों का इहनाग ममान हा जाती पर ममा न ह्या। लाग का झूठ विजय क गीत गाता हुआ चढ़ चला जा रहा था। तत्रमालदार चपावल ली गय और म भी उनके साथ थ लिया।

पहाड न बगार पर गड-गड मन नीच की आर एक बलिम दृष्टि डाली।

नीच मदान था जिसमें आज का भयानक नाटक कुछ क्षणा पूर्व समाप्त हुआ था। और पास ही वह झाड़ी थी जिसके काटा में अब भी मृत बालिका के कुछ बेशक लटके हुए हवा में झूम रहे थे।

मुद्गर मुहान के पास मृत बालिका की चिता से धूम्रराशि ऊपर उठ रही थी। चपावत की नरभक्षिणी के अन्तिम गिवार की चिता धू धू कर जल रही थी ठीक उसी स्थान पर जहाँ आज स्वयं आदमखोर न दम ताठा था।

भाजनापरान्त म बाहर आगन में आ सटा हुआ। नीच गाँव में गाँववाले उत्सव मना रहे थे। लोग नाच नाच कर अपने पहाड़ी लोकगीता का गा रहे थे और बीच-बीच में चीठ की मंगा-धमक उठती थी—छोट-छोट स्पहल जुगनुआ की भाँति।

एक घट बाद लाग शरनी का मेरे पास ल आय। इतनी भीड़ में साल उतारना सम्भव न था। अतः मन लाग स बचक पत्र व सर काट कर दण काम दूगरे तिन के लिये छाड़ लिया। दूगरे तिन लाग पर एक पुलिमवाक का पहरा लगा लिया गया और शरनी के पजा व पूछ व टुकड लागों में वितरित कर दिय गय। इन वस्तुआं के ताबीज बच्चा के गले में पहिनाय जात ह। इनक पहिनन न मृत प्रतों स बच्चा की रक्षा हाती ह एमा लाग का विवाम ह। शरनी के पेट में मृत बालिका की उगलिया मिती। इनका मन बाद में ननीताल के ताल में मन्गरेवी के मन्दिरे के पास गाड लिया।

गाववालां न अगठ त्रिवम एक समाराह का आयोजन किया था जिनका समापति व मस बनाना चाहा था। मुझ दा [तिन में ७२ मील की यात्रा करनी था। इगलिय कामा भागने हुए मन सहसोत्तर मे अनराध किया कि मरा स्थान व ग्रहण कर लें।

तद्व ही घाड पर शरनी का सात थाप कर हम खाना हा गय। दबीधुरा में मस रात में पहाव डालना था। पाली के पास शापड के आग म गुजरत समय उग गुगी स्त्री का यात्र आ गई जिनकी पहिन का गरता उग ल गई था। सोचा था कर उम भी गवर गुना दू। घाड का मन नीच थाप लिया और शरनी की गात्र का शापड के दरवाजे पर विछा लिया। बच्च मरा इस कारवा का दग चुक था। थाप-शोय कर उहान अनी मा का रमाईपर में गवर दो।

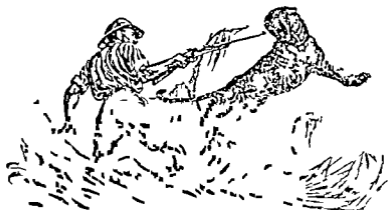
कुछ लाग का मन ह कि किमी प्रकार के घका लगन न मनप्य कभी अपनी

कुछ शक्ति या बलना है जोर पुन एम धनर लगन पर इत्या की वह शक्ति घापम ली जाती है। म इस विषय म अपनी सम्मति नहीं दना चाहता हू। हा यह अवश्य मन मय्य अपनी आत्मा म दखा कि गत एक वष म जो स्त्री बिल्कुल गुणा थी वरु इस समय चिल्ला चिल्ला कर अपन पनि का पुकार रही था कि साहब की गई हुई चीज का दाघ दय ल। गूगो व मह मे निकले हुए इन स्पष्ट दाग का मुनकर वल्धा के विश्वास की सीमा न रही।

कुछ दर गाँव में वि ग्राम करन मन पायवा और पुन खाना हा गया। गाववाले चील-वीरु कर मुस आगारवाले रहे थ।

दूगरे दिन प्रातःकाल मेरा मठभर एक तेंदुव मे ही पडा। इमव कारण कुछ विरुध हा गया और मेरे घाड पर याहा सा धाज और बड गया। घाडा तगडा था और चलन-चौकते बिना भानि हमन ० घट में ८५ मीन का रास्ता चल लिया और ननीताए पहुच गय।

कुछ मास बाद ननीताल म मर जान हीवट व ननुरव म एक दरवार हुआ और अपावन व तहमीलदार का एक बद्रुक तथा लडका का लान का खानन समय मेरे साथ चलनवाल मनुष्य का एक मुल्लर गिबारी छग में स्वल्प प्रान्त किया गया। इन ताहफा पर उनका नाम चुने हुए थ। व उन कुल्म्बा की पतुव सम्पत्ति रहेंग।



रौविन

मैं उनके माता पिता का कभी स्मरण था। जिस 'झाड़ू व मरणा' (मगा) मं मन उम गरीश था उमका बहना था कि वह 'स्पनियल' जाति का प्राणी था। उमका नाम पिचा था और उमका पिता एक कुशल गिकारी नुमा था। हमन अनिरिक्त म उमका बगावगी व विदय में और अधिक कुछ नहीं कह सकता।

मूझ छान पिन्ड की आवस्यता न थी किनु जब मन उम गरीश उम समय मरे माय मरी एक मित्र भा था। एक गंगा टोकरा में पिचा अपन छ भाई बहिना व माय पढा हुआ था। इमा टोकरा में म निकाल कर य पिन्ड मित्र का स्थलाय गय।

पिचा अरन परिवार का रुबन छाया एक दुबला-यशस्य प्राणा था अतएव मरु था कि वह जायन मद्राम का अन्तिम माहा पर पक्षपण कर चुरा था।

अरन अभाग भाई-बहिना का हाड कर उमन एक बार मरा परिव्रमा का और फिर मरे बह पावा व वाष टुक् कर बर गया। उम तिन मकर बरु ठड था। मन उम उगा पर भान काट व अरु कर लिया। वृत्तता दरमान हुए उमन मरा मर काट लिया।

तब उसकी आय बेवकल तीन माह की थी और पन्द्रह रुपय में मन उस खरीद लिया था। आज उसकी आय तरह वय की है और ममस्त भारत का साना भी उसे नहीं खरीद सकता।

जब मैं उसे ले आया तो प्रथम बार उसका परिचय अच्छे भाजन गम पानी व साबुन से हुआ। उसका पुराना नाम पिशा छाड़ कर नया नाम रौबिन रख दिया गया।

जब मरी आयु छ वय की और मरे भाई की चार वय की थी ता बौली जाति के एक कुत्त न एक भुद्ध रोछनी के आक्रमण से हमारे प्राण बचाय था। उस कुत्त का भी नाम रौबिन था उसी का स्मृतिस्वरूप पिशा का नाम हमने रौबिन रख लिया।

गन्ध धरती का जिम भाति चर्पा की आवश्यकता होती है उसी भाति रौबिन को भोजन की आवश्यकता थी।

जब उस हमारे साथ कुछ मज्जाहू हा गया ता यह साबत हुए कि बच्च या पिल्ले का निवारण भी ही जाना चाहिये मैं उसे अपने साथ एक दिन बाहर ले गया। मैं चाहता था कि दो-चार बार मामन बन्दूक खला कर उसे बन्दूक की आवाज का आदी बना लूँ।

हमारी जागीर के नीचे की आर बाग की कुछ घना झाड़िया थी। इन्हा झाड़िया का मैं बरतार लगा रहा था कि एक मागनी उड़ कर ऊपर उठी। मेरे पीछे पीछे रौबिन मेरा अनुसरण कर रहा था जिसका मैं भूत हो गया था। मैं बन्दूक खला कर मारना का गिरा लिया। पक्षपातो हुई वह एक बटीली झाड़ी में गिर पड़ी और उमा समय रौबिन भी उगपर झपट पडा। झाड़िया घनी तथा बगीचा भी अत बड़ा मेरा पहुचना अगम्भव था। झाड़िया के पीछे कुछ तुली हुई जगह थी और उसके बाग पन बसा व पाग का जगल था। मैं जानता था कि पागल मारना उम जगल में पहुचन का प्रयत्न करेगी इसलिए दौड कर मैं वहा पहुच गया।

भूत हुए मगल में धूप पूर गड़ी था। यदि मेरे पाग का चित्र बमरा हाता ता एक अद्भुत चित्र मानन का मुखवगर मग मिल सकता था।

मारनी बूडा थी उसका एक डेना टूट चुका था और प्रायः के कारण उगकी मगन के पर पूर गया था। वह मीथी जगल की आर अपर हा रहा था उपर

रोबिन भी रणभूमि में डूब चुके थे और मोरना का पूछ के सहारे घिसटत हुए चले जा रहे थे।

बदबूफा में मन दौड़ कर मारना की गदन पकड़ कर उसे जमीन में ऊपर उठा लिया। दूसरे ही क्षण उसने ऐसा दुल्सी झाड़ा कि रोबिन कुछ दूर पर बलावाड़ा साते नजर आय। किन्तु पलक मारते ही रोबिन फिर खड़ा हो गया और जब मन मृत मोरनी को भूमि पर रख दिया तो वह नाच-नाच कर उसकी परिश्रमा करने और बीच-बीच में उसका गप्पन व पूछ का नाचन लगा। इस प्रकार उस प्रातःकाल का पाठ समाप्त हुआ।

जब हम घर वापस लौट रहे थे तब यह बताना कठिन था कि हम दाना में से अधिक गव किसका था—रोबिन का अना प्रथम गिकार मारने पर, या मुझ हम 'गुदड़ी के लाल का पान पर ?

गिकार के मौसम का अन्त समीप आ रहा था और फिर बाद के कुछ दिनों तक रोबिन का बटर फाला या इक्के-दुक्के तीतर का उठा लान के अतिरिक्त कोई अन्य काम नहा दिया गया।

गर्मियां हमने पहाड़ पर काटीं। नवम्बर में हम मल्हटा के पहाड़ा पर उतर आए। पन्ध्र माल का लंबा रास्ता समाप्त कर हम एक माड़ पर पहुँच ही थे कि लगूरा का एक दल पहाड़ पर से चल कर सड़क पार कर गया। ये लगूरे रोबिन के विलुक्त समाप से निवृत्त।

भरी सोटी की परवाह न करने हुए रोबिन झपट कर लगूरा के पीछे गहू में उतर गया। लगूरे तत्परता से एक बंश पर जा चढ़े। ऊपर म्यान खुला हुआ था केवल कहीं कहीं पर पेड़ थे। म्यान कुछ घोंडा हुआ हुआ नाच घाटी में मिल गया था। इस घोंडी जगह का दाहिनी ओर कुछ झाड़ियां थीं। बरसाती पानी के बन्धन से इन झाड़ियों के बीच में एक नाला सा बन गया था। रोबिन इन झाड़ियों में घुमकर पुरनी न बाहर निकल आया और दूगर ही क्षण बाना का पाछ कर और दुम लवा कर उगन दौड़ लगा ली। उसका पाछ-पीछ एक भामकाम तेंदुजा मरपट चला आ रहा था। प्रतिक्षण रोबिन ये तेंदुव के बीच का पामन्य कम होता जा रहा था।

य मगन्य न था और हा मगन्य करने के अनिश्चित में बिया भानि भा रोबिन का महायता मगी कर मकता था। एम का दाखयता न मा बागह

में भाग लिया और जब सक्डा लंगूरा न भी चौखना आरम्भ कर दिया तो कालाहल का सीमा न रही। बीस पचोम गज तक रौबिन घ तेंदुव का शौँ घालू रगा किन्तु जस हा रौबिन तत्त्व की पक्क म आन को था कि तेंदुवा न जान क्या घूम कर घाटी में गापव हा गया। उधर रौबिन पहाड का शक्कर लता हुआ मुक्षय आ मिला। उम तिन रौबिन न दा पाठ मौख जिह वह आजम न भूला। एक ता यह कि लंगूरा का अनसरण क्या सरनाव हाता ह और दूसरा यह कि लंगूरा का चाल का अय होता ह आसपाम म वही तेंदुव की उपस्थिति।

बसत में रौबिन की गिगा में डाषा पड गई थी किन्तु अब पुन वह आरम्भ कर दा गई। अब यह स्पष्ट हा गया कि अवन गाव म प्राय भूख रहन से ब ठाय प्रकार दररख न हाल के कारण उमक दिल पर हमका प्रभाव पड गया था क्याकि जब तनिक म भा धम क उपरान्त वह अवन या जाता था।

दिलारा कुन का मरमे अधिक निगदा तय हाता ह जब उसका स्वामी उमे घर पर अकला छाँ पर गिकार का चल देता ह। बूकि अब बिडिया के गिकार का रौबिन क लिय एक प्रकार म निपय सा हा गया था मन उमे अवन माय बड गिकार म ल जाना आरम कर लिया। इस नय खर का उमन बड चाव म अगावार कर लिया और तत्र मे आज नख जब भी म राहफल लेवर निकला ह वह मरा महधर रहा ह।

मरा सराका यह ह कि तडा ही गिकार का निकल जाना और घर या तेंदुव क भाग का गात्र कर उमका अनसरण करता। जब जानवर के खाँ दिवन लगे म उनका पछा कर और यदि जानवर झाडिया म हा ता पछा करन का काम रौबिन करे। इग माति अतक अवगरा पर उमन माला जानवरों का अनुसरण कर उह पा लिया ह।

पल्ल बर कर गिकार मार लता अधिक महर ह बजाय हमक कि जानवर पर हासा की पाल पर न या मवान क ऊर म। एक ता पल्ल गिकार में यह लान ह कि घायल गनु का पछा करन में व्यय म गाला नहा खलाई जाता और दूगग यह कि जानवर क ममस्थाना पर उमान म अँठा लक्ष्य गाया जा गयता ह क्याकि गिराग और गिकार एक ही घरानल पर लन ह। उचार म जानवर क गरीर क ममस्थाना का अना पर मायता बरिन हा जाना ह।

गुन मायवान गन पर भा मन म्बर क अवगरा पर घर या तेंदुवा का

केवल घायल ही कर पाया जिहान मझ पर आक्रमण किया और उनका समाप्त करने में मुग हुसरी या तामरी वार तक बन्दूक चलाना पड़ी। इतने वर्षों में हम साथ साथ गिकार चलते रहे किंतु कब एक बार रौबिन मुझ बड़ा कठिन परिस्थिति में घिरा छाड़ भाग गया था। उस दिन जब वह कुछ दूर की अवस्थिति में पचास मर पाम लौट आया हमने निश्चय किया कि इस घटना का जिक्र कभी न करेगा। अब हमारा आय रुक चुका है और सम्भवन अब हम उनमें भावुक भी नहीं है विपत्तियों रौबिन जिनमें अनेक श्वान आघत की चरम सीमा का अतिक्रमण कर गया है और इस समय मर पाधा के पाम लटा हुआ है जहां से अब वह कभी नहीं हट पावगा। अपना भूरा भाला में मम्बरा कर नन्दा-सी मुम हिलाते हुए उमन मझ आपन मह कहाना कहने का जनमति ले दी है।

गाडा में शान्त निवासन के पक्ष हम उम तेंदुब का नहीं लय पाम में और तब उमने टिक कर अनेक बाय कच के पाछे मड कर दिया। वह एक भीमकाय तेंदुबा था। उमकी माल बड़ा मुत्तर लय चिकना थी। गहरे पीले रंग का शान्त पर पड हुए काल कृष्ण लय लयत में जम किमीन मलय पर चित्रकारा की हा। मर पाम भूमि लयवाला राहिल थी। पलट गज के पाम पर मन मुन्ता कर उमका दाहिना बाग पर गाग चला है। तेंदुब के हृदय में और गाग में कितना अन्तर रहा इसमें कोई मतलब नहीं। जब गाग तेंदुब के पार निपल कर पचाम गज पर घुल उठा रहा तो तब वह हवा में बलावाजी गाकर जिन गाडा में निकला था उमा में जा गिरा। ६०-५० गज तक हम गाडा के पीछे उमने चलने का गहगहल गुनत रहे। फिर निस्वच्छता छा गई। हम निस्वच्छता के कषण दो मय हा मवन में—आ ता तेंदुब ने हम ताड लिया था या वह लुप्त मगन में पहुंच गया था।

उम जिन हम काफा चले पर थे। सूर्यास्त होने का था और हम पर न चार मील दूर थे। जगत् के इस भाग में मनष्या का आक्रमण किन्तु न था और गन में उपर में किया के गजरन का लयमात्र भा मभावना न थी। अब हमारे लिये वरुण एक ही धारा था। यह यह कि तेंदुब का उगा भाति छाड़ लिया जाय। हम के पाम बंदूक न था इर्माय न ता हम उम यहा चलने छा

सकते थे और न तेंदुब का खाजन उस माघ ही ल जा सकते थे। अतएव उत्तर की धार मूढ़ कर हम घर को बल पड़। इस जगह कोई चिट्ठ छोड़ जान की मझ आवश्यक्ता न थी क्याकि लगभग गत २५ वर्षों मे म कई बार रात तिन इस घन में घूम चुका था और आग बल करवे भी म अना रास्ता ढूढ सकता था।

पौ घटन को हां थी कि म और रौबिन गत रात्रि के घटनास्य पर पहुँच गय। एक कुत्ता मनिक् की भाति रौबिन न जमीन का विरीक्षण किया और गहन उग कर बाव सूचना शर कर दिया। फिर वह बढ कर उम झाडी के समक्ष जा पड्का जहा तेंदुवा गिरा था। झाडी के पास ही रक्त व छोट पड हुआ थ। मझ रक्त का देख कर यह निश्चय करन की आवश्यक्ता न थी कि गोली तेंदुब व किस अग पर लगी ह। समीप म बन्दूक चलान के कारण मझ गोली को लगन लेव लिया था और तेंदुब के दूसरी ओर धूल उठन म माफ मालूम हाता था कि गाला परार को पार कर गई ह।

कुछ देर बाद रक्त की धार का अनुसरण करना अनिवाय था। किन्तु धार मौल के धावे क बाद कुछ मुस्ता लेना भी आवश्यक था। इमसे हम लाभ ही हुआ।

मूय निवृत्तन का ही था और समस्त वन में पगुआ का आवागमन शुरू हा गया था। आग बदन म पहा यह जरूरी था कि पगुआ की गतिविधि को भी दख लिया जावे।

पाम ही एक धुन के नाच जमान सूखा हुई थी। पेड की छाया व बाण्य यहा पर आम नहा गिरा था। इस जगह म बट गया और रौबिन भी मरे परत व पाम का दुवका। मन अभी अनो गिगस्ट समाप्त ही की थी कि मामन झाई आर एक चितगिया बक उगी। फिर दूसरी फिर मामरा और फिर कई चीतला की प्रयात चीत्पार म मारा जगत् गूज उगा। रौबिन चौक कर उठ बैठा और चुपक म उपर बग पहा त्रिघर म पातला की आवाजें आ रही थी। लगुआ वाली घटना क बाद उग और भी कई बट अनभव हा चुके थ और व अन्य वन्य प्राणिया व समान मला भाति जानता था कि चीतल चिल्ला कर उनका तेंदुब का उरगियात की सहायता कर रहा थ। त्रिग भाति पातल चिल्ला रहा थ उमम मान हाता था कि उरग तेंदुबा मान मडर था रहा ह। मनिक् थय गन म य हमें बता मसन थ कि तेंदुबा जाविल ह था नहा। लगभग ५ मिनट म व बूच रह

थ और तब अकस्मात् एक धार बूक कर के साधारणतया उसी तरह चाखन लग जिम भाति चीतल चाखता ह । तेंदुवा अभी जीवित था और एक झाडी से चल कर दूसरी में पहुच कर निश्चय हो गया था । अब बंवल यह जानना था था कि तेंदुवा किस स्थिति में बठा ह और यह केवल चीतला को बूक कर ही जाना जा सकता था ।

बाब के विपरीत ५० गज चल कर हम झाडी में पहुच गये और चीतला का बूकना आरम्भ कर दिया । यह कठिन काम न था क्योंकि लव अम्यास से मझ जगल में चुपचाप चलन का अच्छा अम्यास हा गया था और रौबिन तो किसी भी जगल में घिल्ली की भाति बूकन में निपुण ही था । चीतल हमें तब तक न दिखाई पड जब तक कि हम उनके समीप न आ गये । खुले मदान में खड-खड वह टकटकी लगा कर उत्तर की आर देव रहे थ (जिघर कल गाम तदुव की खडखडाहट बल हो गई थी) ।

चीतला से हमें बड़ी सहायता मिली यद्यपि हममें एक घट का समय नष्ट हा चुका था । यदि चीतल अब हमें देव लत ता घना मनाया लल चौपट था क्योंकि वह पुन बूक कर समस्त वन को हमारी उपस्थिति बना देत । म यह मान ही रहा था कि बापम चलकर चीतला व पीछ से तेंदुवे का देखा जाय या तेंदुव की बोली बाल कर उह सामन से हटा लिया जाय कि एक बितरिया की दष्टि मुझ पर पड गई । दूसरे ही क्षण 'सावधान ! भवुप्य !' की बूक लगा कर उनमें भगद मच गई । मुझ में और खुड मदान में बंवल पाच गज का अन्तर था । म पुरती से साग बूदा किंतु तेंदुव न मुझ से भी अधिक पुरती लियाई । मुझ बयल झाडा में छिपती हुई दुम की एक झलक लियाई पडी ।

चीतला न मारे परिश्रम पर पाना पग लिया था और अब फिर म राज आरम्भ जाना थी । किंतु इस बार यह काम रौबिन के निपुण था ।

म गुन मदान में खडा हो गया । म तेंदुव का समय देना चाहता था कि पुन किमी स्थान पर रफ जाय और हवा में अपना गध छाड दे ताकि रौबिन का उमका अनमरण करन में सुगमता हा । वायु उमर को लिया म यह रहा था । म रौबिन का बाव म हटा कर पश्चिम का ओर ल गया । हम लगभग ६० ७० गज गये हाग कि रौबिन टिडक कर बाव का आर मुड़ गया ।

जगल में घटन समय रौबिन लक्ष्म मूक हा जाना ह । उगल समस्त स्नायु

उमक बग में रहने ह । तदुव का गव पा जान पर था उस दक्ष लन पर जन शरीर के एक विंगप अंग का वह हिलने से नही रोक सकता और वह ह उमका पूछ । इस समय भा उमक दुम हिल रही था ।

गत बप जगठ के इस भाग में एक जवदस्त अघड आया था जिमके कारण बर्न वृक्ष गिर गय थ । इस समय एक गिर हुए वृक्ष की आर रीविन देख रहा था । वृक्ष का शाखाय हमारी आर था और उमके आमपाम कुछ झाडिया था । बाई और अवमर ज्ञाना ता में ओर रीविन एकत्रम आग बढ जात । किंतु इस अवमर पर विंगप सावधानी से काम लना उचित था । हमलिय नही कि हम एक एस जानवर से अस्व-मिथोना खल रहे थ जा घायल हान पर यह जानता ही नही कि भय क्या बन्तु ह । बर्न-इमलिय कि हमारा पाला एक एस तेंदुव में पडा था जा कि गत पन्ह घटा में बन्ला लन का याजना बना रहा था और जिमकी लन की ममस्त प्रवन्तिया इस समय जाग्रत थी ।

धर में चलते समय मन बल गामवाला २७५ राइफल उठा ला थी । लब गिषार में लादन के लिय यह एक अच्छा बन्दूक था किंतु घायल तदुव का मखाबला करन के लिय यह पर्याप्त न था । हमलिय मीध आग में बढ कर थ गिर हुए वृक्ष के समानान्तर आग बडा-आग-आग रीविन था और पीछे-पीछे में । कुछ हा दूर बडने के पन्चान् रीविन ठहर गया । मन भी उधर मुड कर देखा कि रीविन का ध्यान सामने तदुव का लहरना हुई दुम का आर आकर्षित था । जय तेंदुवा मनप्य पर आक्रमण करता ह ता पन्ह इसी भाति लुम का उमान पर पन्कन लगता ह । यह उमके हमले का खतावनी ह । मन पुरता में धूम कर राइफल बाध में लगाने हा था कि वह हम पर बूँ पडा । जानवर का हल पलटन के के लिय मन जहना में बन्दूक चला दा । गांग पेट के नीचे में निबल कर गिछली जाय में जा लगा । गाला में अधिक प्रभाव बन्दूक की आवाज का हुआ । मरे दाहिने बाध के ऊपर में उछल कर यह कुछ झाडिया में अदृश्य हा गया । मुस दूमग वार करन का अवसर न मिल पाया ।

रीविन मरे पावा के पास में जना न था । हमने माथ माथ जमान का निरागण किया । बाफा रक्त गिरा हुआ था किंतु यह कहना बठिन था कि रक्त मात्र पाय में गिरा था या जार पडने के कारण तेंदुव का पुगना घायल गया । रीविन का हल गव बाना में बर्न ममलब न था । उमने बडी सतारता में रक्त की

घर का अनसरण करना आरम्भ कर लिया। आग घुटनों तक ऊँची घास थी। हम कुछ दूर गये कि मूँस सामने तेंदुवा उठता हुआ दिखाई पड़ा। राइफल उठाने तक वह दृष्टि से आसन्न होकर भौरमार (Lantana) की एक झाड़ी में जा घुसा। झाड़ी काफी बड़ी थी इसलिए उसमें तेंदुवा मजबूत से छिप गया। अब उसे हम पर आक्रमण करने में भी आसानी होनी।

रोबिन का व मेरा आज का काम बड़ा सतापजनक रहा था। अब आग पीछा करना मूँसता था। अतः हम साधे घर का चले पड़े।

दूसरे दिन प्रातःकाल हम पुनः उस जगह पहुँचे। रोबिन बड़ा उतावला सा लगता था। आज मैं अपनी बड़ी राइफल ४५०।४ ० उठा लाया था इसलिए मूँस बड़ा प्रसन्नता ही रही थी। घायल जानवरों की खोज में बड़ी मार की राइफलों पर बहुत भरामा रहता है।

जब हम भौरमार की झाड़ी से लगभग २-३ मी गज दूर रहे गये मन इन्हारे से रोबिन को मावधान कर दिया। यह भरोसा तथा करना चाहिये कि घायल जानवर जहाँ छिप गया जाये वहाँ पर दूसरे दिन मिल जायगा। उदाहरणार्थ निम्नलिखित घटना का विवरण पढ़िये।

मैं एक मित्र के एक वार एक शेर का घायल कर लिया। कई मील तक वह एक घाँगे के किनारे रक्त का धार का अनुसरण करते रहे। दूसरे दिन सबसे वह कुछ आत्मियों का लेकर शेर का स्वाजन चले पड़े। आग-आग माहव की माला बन्दूक लिये हुए एक आदमी चल रहा था। गन लिये की रक्त की धार के ऊपर हाथर से चल रहे थे और जहाँ गन छोड़ दिया गया था उस स्थान से लगभग एक मील इधर हीम था कि आग वाला मनुष्य का पैर घायल शेर पर जा पड़ा। शेर ने तत्काल ही उसे मार डाला। गन लाग प्राण बचाने के लिये वृक्षा पर जा चढ़े या मर पर पर रण कर बापग दोह आय।

मैं भौरमार की झाड़ी की स्थिति जान गया। रोबिन का बाव बधाकर मैं एक आरंभ गया। बाय के विररान चल कर जानवर का स्थान में रोबिन बड़ा दया था। कुछ दूर जाकर रोबिन रुक गया और फिर बाय का गूँध कर मरने आर ताकन लगा। यह मैं बसा रहा था कि उसे बाय में तेंदुवा की गंध मिल गई थी। चल की भाँति आज मैं यह एक दूसरे गिर हुए पक्ष का आर मरने ध्यान आकर्षित कर रहा था। गिर हुए वृक्ष के इस आर ता गूँधी हुई भूमि था किन्तु उसे

ओर कमर तक ऊंची बसोंग' की झाड़ियाँ थी। रौबिन का इगारा दब हुए हम एक सूखे नाले पर पहुँच गये। मन अपना कोट उतार लिया और उसकी जबों में ठूम-ठूम कर राइ भर लिये। पत्थरों में मन इस झाल को लेकर मसल मदान में बापस आ गया। गिरे हुए पेड़ से १५ गज की दूरी पर खड़े होकर मन कोट पहन लिया और रोहफल तयार करके उस वृक्ष पर तथा आसपास की झाड़ियों पर डल मारना शुरू कर लिया। मैं चाहता था कि इस भाँति तेंदुवा हम पर आक्रमण करे। उसके खर मदान में निकलने से मुझे माली बलान का अवसर मिल सकता था। पत्थर समाप्त हो जाने पर मन ताली बजाकर खासना और चिल्लाना आरम्भ किया किंतु न तो तेंदुवा बाहर हाँ निकला और न बोला ही। क्या वह मर चुका था ?

यह सब कुछ कर के मैंने वहाँ से मीघ आग बरस कर वृक्ष की उस तरफ भाग सकता था किंतु तिन्दुवा मरा तब जानिये जब धाक निकाली जाय। वाली इस पुरानी बहावत का माद करत हुए मन इस गिरे हुए वृक्ष की चक्कर लगाता आरम्भ कर लिया। मरी इच्छा थी कि इस भाँति चक्करों को छाटा करता हुआ वृक्ष की एकलम समीप पहुँच जाऊँ। पहला चक्कर देकर मैं दूसरा आरम्भ कर ही रहा था कि रौबिन रुक गया। गुरोता हुआ तेंदुवा हम पर दौड़ा आ रहा था। गामन हिलती हुई घास की अलावा मुझे कुछ न दिखाई पड़ा। इतने ही में पास की झाड़ी में बाहर तेंदुवा निकला। मैं इस इतना ही समय मिला कि दाहिनी आर धूम कर बन्दूक गाघ ल।

तेंदुव का मुँह पर बूटना और मरी बन्दूक का गरजना यह दोनों काम साथ ही साथ हुए। फिर तेजी में पत्थरों बरस कर मन बगल में ही बन्दूक का दूसरा फायर पास में गरजते हुए तेंदुवे पर कर लिया।

जब फायर घर या तेंदुवा मीघा आक्रमण करता है और अपने गिबार का पकड़ नहीं पाता तो वह बिना मुँह मीघा ही चला जाता है और जब तक पुन लडा न जाए, लौटना मरहा। रौबिन का बचान हुए मैं बाँई आर हट गया था। धब दगा माँ उम नगरा पाया। आज प्रथम बार उमन मुँगणी बरिण परिस्थिति में अकाल्य छान लिया था। बरिणित वर जगल में घर का राग्ना मात्र रहा है। जगल राग्ना वर नगरा म उमका याना बरिण था। इगल अनिर्गिन वचार का

१ तिन्दुवा गुलार



हृदय अत्यन्त क्षमबोर हो गया था। अतएव किसी ब्रजात आगका से विचलित हो मैं उमे दूढ़न मुडा। तभा मझ एक ठूँ न पीछ म निवलना हुआ उसका सर लिखाई पडा। जब मन हाथ के इगारे उमे पास बुगया ता वह पुन घाम म छिप गया। कुछ रर बाल नतमस्तक हा आखेँ झुनाय हुए वह आकर मेरे परां से लिपट गया। मन राहपल जमीन पर रख गी और उमे गो म उठा लिया। अपन जीवन में दूसरी बार उमन आज फिर मैं मेरा मुह चाट लिया और दबी हुई गुराँट से मझ सूचित करन गा कि मुझ सकुगल दम कर व कितना प्रसन्न था और मुझ अवेग छानेन पर वह कितना लजित था।

जब मन रोबिन का विन्वाम लिग लिया कि हमारा साथ छन जान में उसका बाई दाप न था ता उमन कापना घन किया। फिर उस गा स उतार कर हम सेंदुवे की लान के पास पहुच। एमा घहादुरा का युद्ध लडकर जिम वह करीय कराव जात हा गया था सनुवा जमान पर मरा पडा था।

म आपका कहानी सुना चुका हूँ। म लिखत समय मेरे साथ रोबिन नहा ह—मनुष्य का सबसे वीर एक विन्वामपात्र मित्र! अब वह (परलाक के) उस सुमन आसटस्थान में मरी प्रतीक्षा करता हागा।





चौगढ के ओर

मेरे मामन पूर्वी सुमायू का नक्का टगा हुआ है जिनमें कई स्थाना पर X के चिह्न बन हुए हैं और प्रत्येक X के नीचे एक तारीख लिखा हुई है। प्रत्येक X चिह्न अधिष्ठित लकड़-पत्रों में एक नरभगी पर द्वारा मारे गए मनुष्या का मृत्यु एक मृत्यु का ताराल्या का सूचक है। एक ही ६६ चिह्न में सम्पूर्ण नक्का भरा हुआ है। मक्का का एक सूखा का ठीक मानन के लिये म तयार नहीं है क्योंकि एक नक्का का टाग मस दा बप हा खब है जोर हम यात्र का कई मौता का सूचना मस नक्का दा गर्त। हमक अनिश्चित जिन लक्या का धर न कयल घायल करन छाड लिया ओर यामें उमका मृत्यु हा गई व वचार X चिह्न के या ताराल्य के अधिकारी न हाए।

नक्का के अनमार प्रथम हस्या १५ डिसेम्बर १००५ का तथा अन्तिम २१ माघ १००० का हुई थी। उमर व हीन के X चिह्न के बाव अधिक म

अधिक ५० मील का अन्तर है और पूव से पश्चिम तक ३० मील का। बीच का यह प्रदेश लगभग १५० यग माल है। इस प्रदेश में अधिकांश घाटियाँ एवं पर्वत हैं जो जाड़ा में हिमाच्छादित रहते हैं और गर्मियाँ में तो इन घाटियों में झुलमानवाली गर्मी के कारण रहना दुष्कर हो जाता है। इस प्रदेश में शीत के शरत अपना आतंक जमा करता था।

इस प्रदेश में छाट-बट कई गाँव बस हुए हैं। नग पावा से चलन के कारण यहाँ प्राकृतिक पगडडियाँ बन गई हैं और इन्हीं पगडडियाँ से ये गाँव आपस में संयुक्त हैं। इस कुछ माग घन वना में से हावर निकलते हैं और जब इन पर आदमस्वार का प्रवीण रहता है एक ग्राम से दूसरे ग्राम तक सवाल चिल्ला-चिल्ला कर पहुँचा दिया जाता है। किसी ऊँची चट्टान पर थोड़ा हावर ग्रामीण जार से बूक लगाता है और उमका उमर दूसरे गाँववाला देता है। इस भाँति मन्त्रेण यही शीघ्रता से आमपाम के ग्रामों में दूर दूर तक फैला दिया जाता है।

फरवरी १९२९ के एक जिला सम्मेलन में मुझ इस शरत का मारन का काम सौंपा गया। उस समय कुमायू द्विविजन में तीन नरमही शरत थे किन्तु अधिक शक्ति बचल शीत के शरत ही की थी। अतएव इसी का पीछा पहले करन का मन निश्चय किया।

मरवार द्वारा श्रिय गय X विन्सा व तारासाजाते नका से मुझ यह मालूम हो गया कि बालाआगर की चानी के उत्तर और पूर्वीय भाग के गाँवों में आत्म स्वार का विषय आतंक है। पन्नाड का यह ६ मील लंबा भाग ८५ फीट ऊँचा है और इसके गिण्डर पर घना जंगल है। चानी के उत्तरीय भाग में लगी हुई एक जगती मडक बाल और बंधूक (Rhododendron) या बरग^१ के घन वन में से निकलता हुई जंगल और जुता भूमि के बीच में सीमा बन गई है। एक स्थान पर यह मडक घूम गई है और सभी माड़ पर बालाआगर का डालबगना स्थित है। इसी बगने पर मुझ पशुधना था। अप्रैल १९२९ की एक गध्या की में ४ फीट की बड़ी चट्टाई चटकर यहाँ पहुँच गया। नरमही का अंतिम गिण्डर एक २२ यद का युवक था। सर्वगियाँ का चरान समय उस शरत न मार डाला था।

दूसरे श्रिय गय इस घन युवक की शानी मुझमें मिलन आई। उगत मुझ यतलाया

^१ बंधूक—बूटा का पहली नाम

कि बिना किसी छद्म-छाउ के घर न उसने एकमात्र पौत्र को मार डाला था। मृत युवक के गणा की सरहना करने हुए उसन मुझे उसका समस्त इतिहास बता डाला। फिर उसन मुझमें अनुरोध किया कि मन्वान के नीच वाचन के लिये मैं उसकी मौत दुष्कार भसा का लता जाऊँ। उसका कहना था कि यदि इन भर्सा की सहायता से तरभसा मारा जावे तो उस बड़ा सन्ताप हागा कि अपन पाते की हत्या का बदला तेन मैं उमन प्राय वटाया। भरे लिये य बड़ी भर्से किसी काम को न थी किन्तु इह अस्वीकार करन मैं उन वृद्धा के हृदय का ठस लगता। अतः मैं उन आश्रय दिया कि भरे बार बटारा के समाप्त हो जान पर मैं उमस भर्से ल ल्या।

पास के गोवा के मन्विया न मुझ सूचित किया कि अन्तिम बार घर २० मील दूर एक गाव में देया गया था। दस दिन पूर्व उमन गाव के पूर्वोच डाल में एक मनष्य तथा उसकी पत्नी को मार कर ला डाला था। घर के दस दिन पुरान भाग का अनुसरण करना व्यथ सा था। अतः मुनिष्या मैं यातवीत करके मन लक्ष्मिमा जान का निश्चय किया। दलबनिमा बालाआगर मैं १० माल दूर ह। त्रिम गोव में पूर्वोच पुष्प व म्या का ल्या हुई था वह मैं यहा मैं बवल इनना हो दूर ह।

नका मे मालूम जाना था कि घर का अहू लक्ष्मिनिमा के आमपाम हो ह।

दूसरे दिन प्रातः काल जलपान के उपरान्त मैं दलबनिमा का चल लिया। त्रिम गडक पर मैं चल रहा था वह घन जंगल के बीच मैं गर्भ थी। इस गडक पर गर के गाल इत्यादि यात्रता हुआ मैं ली बज्र उग म्यात पर पट्टी जग एक दूसरा रान्ना गडक मैं मिलता था। यहा मैं कुछ लक्ष्मिनिमा के आत्मा मिल। बाला आगरबाला न इह आवाज लगा कर सूचित कर लिया था कि मैं उनका गोव में पडाव हालत आ रहा ह। मैं मैं गवर लन के लिये आग बड़ आय थ कि उग गवर १० माल दूर घर न पगल बाला हुई कुछ म्विया पर आश्रयण कर लिया था।

मरा इरा लानबाला कुलिया का टापी आग माल पल घुरा था और भाग यडन का भा तयार थी किन्तु त्रिम शमीषा न मुझ बगाया कि रान्ना वडा ऊषड-भाबड़ ह और घन जंगल में हावर निवन्ता ह सा मैं धन्नाम्प पर अवाज हो जान का निश्चय किया। भरे नौकरा न जगल मैं पाषा नाता बना

गिया। उस साकर बत्रम अरन १० माल के घाव पर चल गिया। साधारणतः १० माल का गन्ता घन में सरलता से जाता जा सकता है किन्तु इस समय परिस्थिति कुछ और थी। रास्ता पत्ता के पूर्वोक्त भाग से जाता हुआ कई घाटियाँ से होकर गुजरता था। स्थान स्थान पर घट्टाना झाड़ियाँ तथा वृक्षाँ से गन्ता रुका हुआ था। इन रुकावटों के पाछे कृष्ण भाँ नरभंगा छिया रण सकता था। प्रत्येक क्षण एक एक कर खसना पड़ता था। अतः चलन में बिल्कुल हाना स्वाभाविक सा था। अरन अन्ध से से अन्धा के माल दूर था किन्तु मध्या समाप्त दक्षिण मक्ष अगि बडन का विचार स्थगित कर लेता पडा।

विना भाँ अन्ध प्रण से गारा के नीचे मूल पत्ता का गन्ता पर साकर रात्रि आगम से जाता जा सकता है किन्तु घना भूमि पर माना खल हाथा मस्य का आह्वान करता था।

एक अभ्यास के कारण बदन के लिये जोक पडे छान्न और उमम आराम से बैठ जान का आनन से ऊचा जगह से रात्रि जायना मरे लिये मरल था। इस समय मन एक वास का वक्ष पमल किया। एक दायाँ के मगरे बन्दूक का मखबूना से बाधकर से सा गया। कुछ घना बाँ पत्ता का मरमराहल से घेरी नाँ मल गई। वृक्ष के नाथ के जानवरा के चलन का आवाज आ रही थी। आवाज बडनी ही गई और उमा समय वक्ष के घल्कला का मराचने हुए पत्रा का आवाज सुनाई पडो। कुछ दूर पर काफल^१ के वक्षा पर भाँआ का परिवार खड रहा था। स्थान समय राँ आपम में घरी तरल लडा करत है। भाँआ के इस भावन के समाप्त हान से पहले नाँ आना क्षति था।

मूल निरल कुछ लर हा गई था जय से गाव पहुँचा। जगल के बीष से कुछ गुला हूई भूमि था। उमा भूमि से एक गाँगा तथा दो झाँडा से निमित्त दलकनितो का गाव बसा हुआ था। सामान अस्थान भयान था। मग लय कर उनक लय का मामा न रही। उमान उम्पुका से मग वह गल का गल गियाया त्रिममें छिप कर फमल जायना हई नाँ गिया का रकता हुआ गुर

^१ काफलका वक्ष इमार पत्ता से ६० फल के ऊचा पर जाता है। यह वक्ष प्रायः ४ फल ऊचा जाता है। इसका पल लाल रंग का और स्थान में भाँगा जाता है। इस मनस्य और राँ हानों बड खोव से मान है। फल का आकार बल से भाँ कुछ छाना जाता है।

दमा गया था। जिस मनव्य न मित्रिया को पुकार कर सावधान किया था मक्षम वाला माहूब! हमारा हल्ला सुनकर गर जगज का लौट गया। वहा स एक दूसरा गर भी उमके साथ हा लिया और फिर व दाना साथ-साथ घानी में उतर गय।

दोना झावण में रहनबाउ गत भर न सा मने क्याकि अरना अमफरता पर नुद हा दर रात भर दनाउत रह। गाव म मर पहुचन व कुछ हा दर पहल उनका दनाउना बल हुआ था। इन मव वाता का मुनकर म इस परिणाम पर पहुचा कि नरमधा गर व साथ म एव जवान पाठा भा ह।

पनाहा हाण बड अतिथिपूजव ह। वह इस बात पर जाउ दन लग कि म उनक गाव म भाजन करता जाऊ। उनक अनगध का मझला म टालत हुए मन बदल एव गिलास घाय का इच्छा प्रकट कीं किन्तु गाव में घाय न था। अत काफी माथा में गड मिलाकर कुछ दूध म मरा मन्वार किया गया। महमानगरी की रम्वे पूरा हा खुबन पर साधना न मक्ष म प्राथना का कि गहू का फसल बटन तक में उनका पहरा लेता रह।

मध्याह्न व समय घामीणा का दामकामनामा सहित म उस घाटा का आर बल लिया मिघर दर दहाडन मुनाई लिए थ।

जिम स्थान पर लध्या नघोर और पूर्वी गीला मन्धिया अलग जाना ह उमम २० मील आग तक नकृत्य का आर यह घाटी बला गई थी। घाटा में घना जंगल ह इगलिय गाल आदि दखकर दारा का अनमरण करना अमम्भव था। या ना अरना आर आर्वापिन करन पर ही गर लिवाई पडन या फिर म अन्य बय प्राणिया का मुगयता और फलायन म उनका स्थिति का पता चलता।

जिनरा पन्त पन्त नरमिया का गिवार करन का आवाणा हा उह यह जान लेता एनमलयक हागा कि जगल व पन-पना एव साथ व शवाह का एम गिवार में बडा मन्थ्य रहता ह। यहा पर उन जानवर का नाम नहा लिय आ मवन जिनक घान्त पर निभर हा गिवारा अरन। प्राण ग्या कर मचता ह और साथ ह साथ अरन गिवार का मात्र मचता ह। एम प्रश्न में अहा ६ माल व ही चलन पर ऊर्वा में हजारा फाल का अन्तर हा जाताह कम्-कम् पर भिन्न प्रवाह व पन-पना लिवाई पहन ०। हा ऊर्वा का अमर हवा पर नहा पडता। बुकि आत्मगार व पन्त गिवार में इगवा मन्थरूप स्थान ह अतएव इय

विषय में कुछ लिखना म आवश्यक समझता ह ।

गर का यह पान नहा होता कि मनष्य में घ्राणगारा अदृष्ट पंगु को पहचानन की शक्ति नहीं होती । जब गर नरभक्षी बन जाता ह तब वह मनुष्य को भी अन्य बन पागलों-सा समझता ह । जब वह मनुष्य को ढकता ह तब वायुप्रवाह से विपरीत दिशा में अपन भक्ष्य की आर बतता ह या प्रवाह की ओर उमकी घात में छिप कर बठ जाता ह । इस बात की साधकता तब स्पष्ट होती ह जब यह मली प्रकार ममज्ञ लिया जाय कि गिहारी जब गर की तक म रहता ह घर भी बहुत उमका प्रतीक्षा में छिपा रहता ह या उस ढकता रहता ह । गर का अपन रग आवार तथा छिपकर घटन की योग्यता से कई लाभ ह । यदि गिहारी का वायु की महायता न हा तो घर स उमकी कोई बराबरी नहा ।

अपन गिहार को घर चुपके म दूबकर मारन में पीछ मे आप्रमण करता ह । इसलिय एम बन में जहा नरभक्षी का आना-जाना हा बिना वायु प्रवाह की महायता त्रिय घमना एक प्रकार म आमन्त्र्या करना सा ह । उत्तरिणाय मान लीजिय कि गिहारी का परिस्थितिमा स लाचार हाकर उस आर बठना ह जिघर स हवा घट रही हा । इस भाति अवश्य ही स्वतः उमके पाछ रहेगा क्याकि पीठ के पीछ गिहारी की गंध जानवर का मज में मिल जावेगी और पीछ क आप्रमण म वचना बहुत कठिन ह । यदि वह वायुप्रवाह क प्राय आरपार चलता रह ता स्वतः उमक गाय या वायु रङ्गा और आत्मरक्षा अधिक मरल हागी । बागड क ऊपर दू म मात्रना उतनी आवकव नही लगती किनु आजमान पर म काम दनी ह । अन्यया घन जगल में जहा भूला नरभक्षी छिपा हा वहा वायु क विपरीत चलन क सिवाय और काँ अच्छा क सुरगिन उपाय म नही जानता ।

मध्या तक म घाती क ऊपरा भाग पर पट्ट ब गया । अभी तक म ता मुझ घर ही लियाई पडे थ और न पंगु-मक्षिया न ही काँ चनावना दा थी । आवारा का एक मात्र चिन्ह जा मात अर लियाई लिया बर थी घाती क उत्तर में स्थित एक गापाला ।

इस रात मान क लिय मन गावधानी म एक अच्छा पड छात्र लिया । रात भर म आग्रम म माना रहा । अघर हात क कुछ दर पन्धान गर घात और गाय ही गाय भराऊ बन्दूक की दा आवाजें आई । इसक बाद कुछ ग्वालों क चिन्तान का आवाज गुनाई दी और फिर सब धात हा गया ।

दूसरे दिन दोपहर तक मन घागी का चप्पा चप्पा छान डाला और जब मजन आगिया स मिलन दलबनिया की आर घान लगा तब गोगाला की ओर से किसी क पुकारन की आवाज सुनाई दी। जब मन उस पुकार का उत्तर द दिया तब मामन का चट्टान पर एक आदमी दिखाई पडा। उसन चिल्लापर मुझसे पूछा क्या आगिया का मारन क लिय आय हुए ननीताल क साहब आप ही ह ? मेरे हा कहन पर उसन मुझ सूचित किया कि दोपहर का घाटी म भरत हुए उसके मवेनिया में भगदड़ मच गई थी। गाय भसा क घर लोटन पर गिनता का गई ता एक सफद गाय कम मिली। उसका सन्ह हा रहा था कि गाय रात में दहाड़ते हुए धारा द्वारा मारी गई थी। इस सूचना क लिय उमे घन्यवाद दता हुआ म घागी की आर चल दिया।

कुछ ही दूर जान पर मुझ वह स्थान मिल गया जहा से मवगी भाग थ। जानबरा के खानों का अनुसरण करन पर म उस स्थान पर पहुंच गया जहा शर न गाय का मारा था। गाय को मार कर शर उस घाटी का गहराई में धसीट क गया था। शर के खानों पर चलना उचित न था अत म एक लवा बकर लगाकर उस स्थान पर जा पहुंचा जहा मझ लाग मिलन का आगा था। नाचे का यह भाग दूसरे भाग म कम गहरा था और 'रोन' (Bracken) का घनी झाडिया से भरा हुआ था। यहाँ बड़ मझ से दूकनर आग बडा जा सकता था। सावधाना स पाव रखन हुए मन कमर कमर तक ऊपी रोन का झाडिया में हा चलना शुरू किया। नाल की तलह्नी म म लगभग ३० ही गज रह गया कि मुझ गायन काई वस्तु हिलती हलती दिखाई पडी। फिर अकस्मात किसी पनु का एक सपन पर उगता हुआ लिया और दूसरे ही क्षण गर की त्रायभरा गुर्माट सुनाई दी। शर लाग का स्थान में जुट हुए थ और बाच-बाच में आपस में लड़ पहत थ।

बापा देर तक म मुत्तियन मझ रहा। शरा का गुर्माट बल्ला गई थी किन्तु क सपन पर अब भी हिलता जा रहा था। शरा क और ममीप जाना उचित न था क्वाकि यनि म ममीप पनुव कर एक शर पर गागी चगा जा एता ता भा दूसरे क आपमन का भय था। भनि यहा पर एमा था कि अरना बचन का काई सम्भावना हा न था। आग मरा काई आर एक चट्टान था। दनि विमा भानि पवताम म उस चट्टान पर पहुंच जाता ता अबय ही शरा पर गाग चगन का अगम धि मकता था। बरूर का आग-आग मरबाना हुआ आग शय पावा क

विषय में कुछ लिखना म आवश्यक समझता हूँ ।

शर को यह ज्ञान नहा हाता कि मनष्य में घ्राणगारा अदृष्ट पग को पहचानन की शक्ति मही होती । जब शर नरभक्षी बन जाता ह तब वह मनष्य का भी अन्य बन पगआ-मा समझता ह । जब वह मनष्य को डकना ह तब वायुप्रवाह से विपरीत दिगा में अपन भक्ष्य की आर बढ़ता ह या प्रवाह का आर उमकी घात में छिप कर धठ जाता ह । इस बात की साथवता तब स्पष्ट हाती ह जब यह भंगी प्रकार समझ लिया जाय कि गिबारी जबशर को ताक म रहता ह शर भी बहुधा उमका प्रतीक्षा में छिपा रहता ह या उस दृक्ता रहता ह । शर को अपन रग आवार तथा छिपकर चरन की योग्यता से कई लाभ ह । यदि गिबारी का वाय का महायता न हो तो शर से उसका काई बराबरी नहा ।

अन गिबार का शर खपक से डककर मारन में पीछ म आश्रमण करता ह । इसलिय एम वन म जगुनरभक्षा का आना जाना हो बिना वाय प्रवाहकी महायता लिय घमना एक प्रकार म आत्महत्या करना मा ह । उतागणाय मान लोजिय कि गिबारी का परिस्थितिया म लान्दार होकर उस आर बढ़ता ह जिघर मे हवा चल रही हो । इस भाति अवश्य हा खतरा उमक पीछ रहेगा क्यकि पीठ व पीछ गिबारी की गध जानवर का मज में मिल जावेगा और पाछ व आश्रमण मे बचना बहुत कठिन ह । यदि वह वायुप्रवाह व प्राय आरपार चलता रह ता खतरा उमक दाय या बाय रहेगा और आत्मरक्षा अधिक मरत हागा । बागड व ऊपर यह धात्रता उतनी आकषक नहा लगता किनु आजमान पर यह काम देनी ह । अन्यथा घन जगल में जग भूला नरभक्षा छिपा हा बहा वाय व विपरीत चलन के सिवाय और काई अच्छा व सुरगिन उपाय म नहा जानता ।

गध्या तक म घाटी व ऊपरी भाग पर पत्रव गया । अमा तक न ता मूझ शर हा लिगाई पड घ और न पगुनी गया न हा काई चतायना हो या । आवादी का एक मात्र चिन् आ मझ अब लिगाई गया वह धा घाटा व उत्तर में स्थित एक गापाला ।

इम रात मान व लिय मन गावधानी म एक अच्छा पड छाट लिया । रात भर म आगम म माना रहा । अधरा जिन व कुछ देर पश्चात शर बाट और गाय हो गाय भराऊ बन्दूक की दो आवाजें आई । इमके बाद कुछ ग्वालों व चिन्तन का आवाज सुनाने ली और फिर शर शान हो गया ।

दूसरे दिन दापहर तक मन घाटी का चप्पा चप्पा छान डाला और जब म अरन आदमियों म मिलन दनकनिया का ओर चलन लगा तब गोपाला की आर से बिभी व पुवारन की आवाज सुनाई दी। जब मन उस पुवार का उनर द लिया तब सामन की घट्टान पर एक आदमी लिखाई पडा। उसन चिल्लाकर मुझस पूछा क्या आत्मक्षार का मारन क लिय आय हुए ननीताल व साहब आप हा ह ? भरे हा कहन पर उसन मुझ सूचिन किया कि दोपहर की घाटी में चरन हुए उसने मवगिया में भगदड मच गई था। गाय भसा क घर गैरन पर गिनती की गई तो एव सफ्त गाय कम मिली। उसको सन्देह हो रहा था कि गाय रात में दहाडते हुए घरा द्वारा भारी गई थी। इस सूचना के लिय उस धन्यवाद देता हुआ म घाटी की आर चल दिया।

बुछ ही दूर जान पर मुझ वह स्थान मिल गया जहा म यवेरि भाग प। जानवरों क खाना का अनुसरण करन पर म उम स्थान पर पहुच गया जहा गर न गाय का मारा था। गाय का मार कर गर उम घाटी की गहराई में घसा ल गया था। घर के सादा पर चलना उचित न था अत म एक लवा धक्कर लगाकर उम स्थान पर जा पहुचा जहा मुझ लाग मिलन की आगा थी। नाल का यह भाग दूसरे भाग से कम गहरा था और 'गेन' (Bracken) का घनी झाडिया स भरा हुआ था। यहा बड मड म डूबकर आग बडा जा सकता था। सावधाना स पाव रखन हुए मन कमर कमर तक ऊचा रीन का झाडिया में हा चलना धरु विया। नाले की तलप्टी म म लगभग ३० ही गज रहु गया कि मुझ सामन कोई वस्तु हिलती कुलती दिमाई पगी। फिर अकस्मात् किमा पगु का एक सफ्ट पर उठना हुआ लिया और दूसर हा हाण गरा की त्रापमरी गरौण्ट सुनाई दी। गर लाग का मान में जट हुए व और बाव-बाव में आपम में लड पडन व।

काफा दर तक म मृत्तितन मडा रहा। गरा का गुराण्ट बल हा गई था किन्तु यह सफ्ट पर अब भा हिलना जा रहा था। गरा क और मधाय जाना उचित न था क्यकि मरि म ममीप पदध कर एक गर पर गाली चला ना लडा ना ना दूसरे क आग्रमण का नय था। भमि यहा पर लगी था कि अरना बवन का हान मन्मानना ही न था। आग मरी बाई आग एव घट्टान था। मरि किन न्ति पुनपाव म उम घट्टान पर पदध जाता ता अवय हा मरा एव गरा चला क अवगार मि गकना था। वन्दूक का बाग-आग मकाना हुआ आर गट के क

बन् रगता हुआ म चट्टान व तल पहुँच गया। एक मिनट सुस्ता कर मन देखा कि मेरा गयफट टाक म मरा हुई है फिर म चट्टान पर जा बैठा। उस आर झाकन पर मझ गाना घर लिखाई पड।

एक गर गाय व पिछल घड का समाप्त करन में मलग्न था और दूसरा पाम हा लेटा हुआ अरन पजा का चाट रहा था। आकार में दाना घर कराव एव समान था किन्तु जा गर अपना पजा चाट रहा था उमका रग दूसरे म हुआ था। ली हई गाना का रग पाका सा दख कर मन सोचा कि यहा बड पुराना नर भक्षिणा ह। गावधानी म निगाना माघकर मन बन्दूक चला दी। गाला लगन हा बड पिछल पाँया पर खडा हाकर पाछ की आर मडक गई। दूसरा गर क्रूर कर घाटा म अदुन्दु गी गया। मझ दूसरा घाडा खान का मौका तक न मिल पाया। मरा मारा हुई घरना न पछ तक नहा लिखाई। गावार बबड मारकर म उमक समाप्त जा पहुँचा। समीप खान पर मरा प्रमदता निरगता म परिणित हा गई कयाकि मल म मन घरना के बच्च का मार डाला था। मरी डम तनिक मी भुण व कारण आगाया वय तक जिल व १५ मनघ्या का प्राणा म हाय धाना पडा। मम्मवत म भी स्वय अपन प्राणा मे हाय था बठता।

गर का यह पाठी हई अवमरा पर मनुष्या का हग्या करन में अतनी माता का हाय बना सका था और मनघ्य व माम का खाल भा उमक मूह में लग ही सका था। वह स्वय नरभक्षिणी म कम न था। यह गाव वर मरी निरगता मुछ कम हा गई।

मूठ मगन में मनघ्या का एक उपयक्त औजार का महायता म गर का खाल उतारना मरल ह किन्तु यहा पर यह काय अत्यन्त बठिन था कयाकि म चारा आर म बना झाडिया म घिछ हुआ था और चम उतारन व लिय एक जडा चाक व अतिरिक्त मर पाम अय काई हथियार न था। यद्यपि दूसरा घरना का मझ भय न था कयाकि गर अपना आवपवता म आवक गितार बना नहा मारता। फिर भा न खान कया मझ लया प्रवीत हा रहा था कि घरना का पाम हा लिता हुई मर प्रयक काम का लय रगा।

गुय ऊने पहाण के पाछ आत्मिचीता मलता वृक्षा पन्चिम की आर मिम बना हा बना जा रहा था। मरा बठिन काम भा समाप्त हा चुका था। गर मझ आर भी जगल ही में भ्यनित करना था। अन मन उया स्थान पर टहरन

का निश्चय कर लिया। शरनी के खाना में मुझ भाग्य हो गया कि वह पुरानी गरनी था। उस जिक्र में लगभग प्रत्येक मनुष्य के पास बन्दूक था। अतः इस गरनी की मनुष्य जाति तथा उसके वस्तुत्व का अच्छा अनुभव था। अधिक आयु हानि में शरनी काफी मत्तक था किंतु फिर भी लाग पर उसके लौटने की सम्भावना थी।

यहां पर पड़ अधिक न था इसलिए एक साधारण में वृक्ष पर मैं जा चढ़ा। इस वृक्ष में बैठने पर रात भर बड़ा कष्ट रहा। बीच बीच में शरनी घाट उठनी थी। जब जस प्रातःकाल हानि लगा वैसे उसका बालना क्षीणतर होना गया और अन्त में ऊपर की चाली पर समाप्त हो गया।

भाजन किये मझ ६ घट हो चके थे। भूख-प्यास से बुरा हाल था और पकान में ममन्त शरीर मुझ हो गया था। रात का पानी बरस चका था इस कारण कपड़े शरीर में धिपके हुए थे। जब कुछ उजला हो आया तब काट में शर की साल बाधकर मैं लकड़िया का खल लिया।

शर का ताजा गाल का मन कभी सींग नहीं है (मय पजा व मिर के) किन्तु यह मैं दाव के साथ कह सकता हूँ कि भले ही अन्त समय उसका वजन २० मर रहा हो किन्तु कप पहचान पहचान उसका वजन १० मर हो गया था।

मरे आसमी एक आगन में सबड़ा प्रामोणा के साथ परामग में लग हुए थे। रक्त और पाना में मना हुआ लक्ष्यशाना हुआ मैं जब उनके पास पहुँचा तो उनके हृदय का पारावार न रहा। मरने उन्मत्त जो स्वागत किया उस में आज मैं नहीं भूल सकता।

मर २ मरवाला मरगा तम्बू कुछ दूर पर ठिकिया के एक स्थान में लगा दिया गया था। मर बस्मा पर तम्बू रखकर मंड बनाया गई और इसी मंड पर मर लिये साथ लगा दी गई। मर नोकर काफी पुराने थे और कई अवसर पर गिहार में साथ यात्रा कर चुके थे। बाल की मुझ पना चला कि जब गाँववाला न यह गाथा कि शर न मुझ मार डाला है तो उन्हें विचाराग न हुआ। और जब लकड़िया के धरिया न यह प्रस्ताव उनके सम्मुख रक्ता कि आमाड़ा व ननागा का मरे साथ हानि की सूचना भेजना जाए तो उन्होंने इसका विरोध किया। उन्हें पूरा आशा थी कि मैं लौट आऊंगा। इसी आशा के प्रतीक रूप साथ की बतली आग पर पड़ा हुई खोल रहे थे।

श्वान व गन्गी के कारण स्नान करना अत्यंत आवश्यक था। गम पानी म नहाकर म स्नान को जा ही रहा था कि आकाश में बिजली की चमक-दमक शुरू हो गई। मार आसमान में काली घटा उमड़ आई थी। भावी क्षशावन व लक्षणा को देख कर तत्काल ही खीम की रस्मिया का खूटिया के सहारे मजबूती से बांध दिया गया। अघड व साथ बलि भी हान लगी। एक घट तक अघड पानी जारी रहा। मरी सभी वस्तुएं भीग गई थी और तम्बू के अन्दर ता एक नन्ही-सी नदी हा बह रही थी। बबल मरा विस्तरा भीगन से बह गया था। अन्न में १ बज के करीब हम लोगों ने विस्तरा की शरण ली। मरे आर्मिया के लिये गाँववाला ने एक कमरा दे दिया था। उसी में कुडिया बठाकर बसो रहे। म भी मरा बन्दूक बगल में टांग कर सा गया।

दूसरा दिन कपडा का मुस्ताने और गर की खाल को खूटियों पर तानन में व्यतीत हुआ। गाँववाले भी छुट्टी मना रहे थे। बलाग मुस घर हुए थे। कोई अपन अनुभव गुना रहा था ता बाई मेरे अनुभव सुनन को लालायित था। विरला ही ऐसा व्यक्ति था जिसके किसी न किसी रिश्तेदार का आदमत्वार न न मारा हा। प्राय कई लोगों के शरीर या चहरे में गर व दात या पजा के निगान पड़े हुए थे। मल्लत गरनी के मारे जान पर जब मन दुख प्रकट किया हा वे इस मानन का तयार ही न हुए। हाल हा में एक मनष्य व उमवी पत्नी साथ साथ मार गय थे इसलिये उनका दूध बिबाम था कि नरभक्षिणा एक नहीं बल्कि दाना शरनिया ही थी।

मरा खामा पहाड के ऊपर एम स्थान पर लगा हुआ था जहा से धारों आर का दृश्य साफ दिखता था। मरे नीचे नधौर की घाटी थी जिसका दूसरी ओर लगभग ९० फीट ऊचा पवन था। पहाड पर कभी भी आवादी के चिह्न नहीं दिखाई देते थे। म मातानुमा खता की मड पर दूरबीन और मरवारो नवगा लिय बटा था और गाँववाले मस व स्थान बतात जा रहे थे जहा गन तीन वर्षों में २० व्यक्तिया का हत्याण नरभक्षिणी कर चुकी थी। ४ बग मील के प्रान्त में ये हत्याये हुईं थी।

आगा का घहा व जगला में मक्का खरान का अनुमति मिला हुई था। इहा मरगिया के मास पर अन्न चार बटर बाघन का मन निबन्ध किया।

अगले १० दिना तक शरा का बाई खबर न मिली। मवर नाम म ममा का

प्रमानुसार श्रावणा और वाचना रहता था और दिन भर जंगल का नाचता था। बस यही भरी दिनचर्या थी। ग्यारहवें दिन मर हुय में आगा का कुछ-कुछ संचार हुआ। खबर मिला कि पास के नाल में एक गांव मारा गई है परन्तु लगे पर पड़चन हुआ मान्य हुआ गया कि हयारा घर नहा बलि वाध है। फिर भा यामीणों ने आग्रह किया कि मैं इस तेंदुव का मार डालू। कई वर्षों में मवेगियों का वह साफ करन में लगा हुआ था। इसलिए मन तेंदुव के लिये बठन का निश्चय कर लिया। लगे के पास ही मैं एक गुहा में जा छिपा। कुछ ही दूर बाट नाल का उम आगे में आता हुआ तेंदुवा मुझ लिये पड़ा। लम्बे साध कर मैं बन्दूक चलान का प्रयत्न हुआ ही था कि गांव से किसी की भवदार्ई हुई आवाज सुनाई दी। मुझ बाईं पुकार उठा था।

पुकारन का बचन एक ही अर्थ था मरना था। अपना टांग उठाकर मैं पुरता में बाहर बूट पड़ा। तेंदुवा बचारा ताबता ही रह गया। पल्ल ता वह पट के दल परला पर निकुड़ गया किनु फिर घुड़वता हुआ बूट कर भाग गया।

दौड़ता हुआ मैं नाल की घार पर पहुँचा और चिल्लाकर मन पुकारनवाले का अरन आन का सूचना दे सा। वह आत्मा बचारा गाँव में साधा दौड़ता ही चला आया था। दम लकर उमन मुझ बजाया कि गाँव में बाध माल की दूरी पर आत्मगार न एक म्त्रा मार डाला था। यह खबर सुनते ही मैं गाँव का आर दौड़ पड़ा। आगन में लडका का घरे हुए कद मनुष्य बट य।

बालिका के ऊपर के म्त्रा का गरना न फाइ लिया था। सर पाछ का झुकाए हाथा के सहारे वह चुप बसा था। तत्र मीम लन के कारण उसका बन्धन बन्धन-बन्धी ऊपर-नाच हा रहा था। मारा चरगा रक्त में मना था और गान पर गुन बट कर बसता जा रहा था।

मैं दग्ग हा भाग हयन उधर हा गईं। मैं लडकी के पात्रों का निरीक्षण कर रहा था कि लोगों ने मुझ आचनता का हाल सुनाता आगमन कर लिया। मर हुए मजान में कई लोगों का उन्निधि में गरना न लकरा पर हमला किया था। पटना के ममद लडका का पति मा यों पर था। मर के बिल्ल लन पर गरनी लडका का घायल छात्रक जगल का भाग लड था। लडका का दूरे अन्तर मय लगे मुझ खबर दन चल लिये य किनु हाग पान पर लडका स्वय ही गाँव बाधम आगा था। लोगों का मत था कि कुछ हा

शरों में लडकी मर जावेगी और उसकी लाश पर बैठ कर मैं शरनी का मास लूंगा।

बिभी भयभीत एवं घायल पशु की भांति वन बालिका टकटका गगाम मस देख रही थी। उसकी दृष्टि में याचना थी।

लडकी का स्वच्छ घाय वी जाघरदवता थी। और इस बालाहृत्पूण वातावरण में मुझ स्वयं कुछ न सूझ रहा था। अतएव कामलता का परित्याग कर मन बलपूर्वक भीड़ का वहा में हटा लिया। पाम ही गडी एक लडकी का मूच्छी मी था रही थी अतः उस मन बचा दृढ़ कर लान का भज दिया। फिर कुछ प्रिया का पानी गम रग्न का तथा मरा कमाज फाटकर पट्टिया बनान का आरंभ किया।

गम पानी व पट्टिया मयार गी चुकीं था कुछ दर घाव वह लडकी कची ल आई। गाव मर म यही एक नची थी और वह भा एक मन दर्जी की विधवा म प्राप्त हुई थी। वह विधवा उमरा आरंभ स्थान व काम में लाया करती थी। बचा व फला पर चरी तरह में जग लगी हुई था और काटने न बनना था। अन्त में घब कर मन लट म गन हुए बाग्य की लटा को उसी भांति छाड़ लिया।

मवम बड़ घाव लडकी के माण पर थ। शरनी न पज म गोपडो को खोल लिया था और दूसरा घाव माथ म था तब था। इन बड़ घावा के अतिरिक्त लाहिन स्तन बंध और गलन पर भी बंधे घाव थ। ऊपर का अधिवाग अग धन-विधन था। लाहिन हाथ पर भा एक घाव था जा घायल आत्मरक्षा करत समय लय गया था।

मेरे एक शस्त्र मित्र न बभी मुझ एक शापी बिभी पीले रंग की तरल औषधि की दी थी। एक ही अवसर का लिय यह मुझ बनाई गई था। इस समय भी यह शीगी मरा जब में तयार थी। घत लिन पुरानी हान व कारण दवा का बाकी भाग उड़ गया था किंतु फिर भा शीगा में पयाप्त औषधि थी। तुल्य ही शीगी का मर ताप कर मन लडकी क घावा में मारी तथा उल्ट दी और फिर पट्टिया बांध दी। तत्पनंतर बाग्यका का उगाकर मन उमक घर पहुंचा लिया।

एक दिन बाल शरन जान म मुझ मन उम लडका में मर की। गाव में आन गिग का लिय वह द्वार पर बंधा हुई था।

गदन व गहरे घाव के अतिरिक्त अन्य सब घाव भर चुके थे। अरन हाथा स बना वा हटाकर उसन मुझ खापडा का घाव दिखाना। खापडी क टकड़ अपन स्थान पर जुड़ गय थ। मुस्कराते हुए उसन कहा साहब अच्छा हा हुआ कि उस दिन भरी महिन जग लगी हुई कची ले आई। (मुठा हुआ सर वधव्य का चिह्न ह।)

यदि कमा य पकितया मरे डाक्टर मिय पठ तो जान ल कि उनकी दो हुई पींगे औपधिन एव वगदुर नवयुवती व प्राण बचाय थे।

यह सब कर चुकन पर मन उस स्थान पर एक बकरी बाध दा जटा करना न युवती पर आक्रमण किया था और पाम ही खड बाध के एक वृक्ष पर बठ कर मन गात्रि काटी। घरती क मुह से मास छीन लिया गया था अत भाजन की मात्र म उससे लौटन की सम्भावना थी। परन्तु यह लोट कर न आई।

दूसरे दिन प्रात बाल मन भूमि का निराक्षण किया। लडका पर आक्रमण करन क पश्चात घरती घाती क ऊपरी भाग में चली गई थी। घरती मवेगिया क माग पर जाकर गई थी। यही माग आग चलकर नर नघोदी का पार करता है। न माल आग जिस स्थान पर यह माग जगल महक स मिता ह चलकर घरती क घात करा गय थ।

दा दिन तक आसपास क शामदामी अपन घर म डूर नहा गय। कवा आयपक कामा क लिय ही व बाहर निकलने थ। सामरे दिन एक हरबान न आकर मझ सूचना दा कि दलबनिया स ५ माल दूर गहानी क गाव में नरमदिणा न एक हत्या कर टाले थी।

मन गौघ हो अनी तधारिया कर ली और दोपहर क कुछ बाल अपन चार पय प्रणाका का सवर म चल पड़ा। दा माल का बडा चकड़ी ममाप्त कर हम दलबनिया क दीण में स्थित पहाड का चानी पर पहुच गय। तान मीन नीच घात में घरती न हया की थी। इसके अतिरिक्त मर पय प्रणा और कुछ मुझ व बना स। लाला क समीपस्थ ग्राम क व रहनवाड थ। १० घंटे उठे व गहर मिया थी। लालावाला क अनुराध पर थ मुझ सूचित करन दलबनिया चल थाय थ।

पगड क डार जग हम गड थ घुग भाति न थ। मुन्तान क लिय बहा बठ कर म घुमगान करन लगा। मर गाया डार म मुझ धामपान की मुख्य

जगहें बनाते जा रहे थे। हमारे नाच एक बड़ी चट्टान के नीचे छाटी सी झापड़ी थी। इस झापड़ी की कहानी मेरे माथियों ने मुझे इस प्रकार बताई

चार बड़े बूढ़े एक भाटिया (मूठान की एक जाति जिन्होंने मुख्य जायिका यकरा के यात्रा पर सामान लाए कर व्यापार करना है) इस झापड़ में रहता था। जाड़ा में वह अपनी बकरियाँ पर नमक गुड़ आदि ाद कर दूर दूर के पहाड़ी प्रदेशों में व्यापार करता था और गर्मी के ळरमात में अपनी बकरियाँ लकर इसी झापड़ में रहता था। इस प्रकार बकरियों को आराम भी मिल जाता था और वे आगामी षय के काम के लिए तयार हो जाती थीं। एक बार इन बकरियाँ ने उस किस्मा सुनानवाले मनुष्य का फसल का नजसान कर दिया। जब ये आग निवायत करने ऊपर पहुँच तो भोटियों को नदारत पाया। पाम ही जजीर ने बधा हुआ भरा कुत्ता पड़ा था जो झापड़ा की रखवाली करता था। आग का यह रहस्य मय व्यापार दब सन्देह हुआ। अतएव कुछ आग का एक टोला ने भाटिय को सोजना आरम्भ कर दिया। ४०० यज्ञ की दूरी पर विजय का कटा हुआ एक बाँस का ळण था। इसा वृक्ष के नीचे भाटिय का अस्त्रिपिंजर पड़ा हुआ था और उसका फल ळपड़ भी। यही चौगड़ की नरभक्षिणी का प्रथम मानव निवास था।

पहाड़ से एकत्रम नीचे उतरने का मार्ग माग न था। आशमिया ने मुझे बताया कि कुछ आग बड़बूट एक ढालू रास्ते से ाहाड़ी पहुँचा जा सकता था। रास्ता खराब था।

इस आग आधा माग तय कर चुके थे कि अचम्मात मझ एसा आग जैसे बाईं हमारा पीछा कर रहा है। यद्यपि लिल इस आग की मानने का तयार न था क्योंकि इस प्रश्न में अब केवल एक आत्मसंशय धरनी रह गई था और उस धरना ने तीन माग दूर बिना का मार डाला था। उसकी आग को छाइन की कोर् मन्भावना न थी। अब हम चोटी के चौड़े भाग पर पहुँच गये थे किंतु फिर मा मर हृष्य में मन्नु धना था। अत आत्मिया का बहा पर धरा कर म बालनिव धरनी का खोत्र में चल पड़ा। जगत् में वापस पहुँच कर म गायधानी म धरने आत्मिया का आर ळण। जगत् में धरनी के मार्ग भा विज्ञ न थे। फिर भी इस घटना के पश्चात् मने आत्मिया का आग चलने का आत्म निवा। पाछ-पीछे बन्दूक तथा ळिय म ळण। जब हम उन आग म गीव में पहुँच गये जहाँ म ये आत्मो मझ बलान भज गये थे मरे माथियों ने मझम विज्ञ भागी।

मैं वही प्रसन्नता से उठे अनमति दे दो यद्यपि अभी एक मील और घन जंगल में मुझ जाना था किंतु इतन आत्मभिया की रक्षा करने के बदले केवल अपनी ही रक्षा करना मन आसान समझा। कुछ नीचे एक स्वच्छ जलसात था। इसी सोते में गाँववाले पानी भरा करते थे। यहाँ मुझ गाला मिट्टी में आत्मसौंर के ताज खोजे। य खोद गाँव का आर से आय था। कुछ ही दूर ऊपर थोड़ी दूर पहले मुझ एसा लग रहा था कि घरना हमारा पीछा कर रहा है। इन सब बातों को सोचते हुए मुझ प्रतीत हुआ कि लाग की खोज में मरा जाना निरर्थक हुआ है।

जंगल में जम हा में बाहर आया कि सामन साह्याली का गाँव दिखलाई पड़ा। यह गाँव ५६ मकानों का था। एक घर के द्वार पर इस समय सब लोग एकत्रित थे।

मुझ जंगल में निकलने हुए लागों ने देख लिया था। मरा स्वागत करने के लिये कुछ मनव्य आगे बढ़ आये। एक बूढ़े ने मुझे कर मरे पर छू लिया। उमका अगला में अदिरण अश्रुधारा बह रहा थी।

माहब मरी लड़की को बचा ला उमन अश्रुत म्वर में मुझसे प्राथना का।

गक्षप में उमन अपनी दुख बचा मक्ष मुना दी। उमकी एकहीनी पुत्री जा विधवा था धपन कुछ रिक्तारों के साथ जंगल में इसन जानने गई। पहाड़ का एक ओर घाटी में हाता हुआ एक सोता बहता था। इसा मान की दूरी तरफ कुछ मीठानुमा सत थे। इही गता में उम बूढ़े की लटना लक्षटिया चीन रही थी। कुछ दूर घाट घात के किनारे ऊपर घाता हुई स्त्रिया न लडकी का चीखार सुनी। दया ता घरना लडकी लिये हुई कुछ बटींग झाडियों के शूरमू में बनी जा रही था। ओरते गरपट गाँवको भागी और हल्ला मन्नाया। अयभीन गाँववाला न लडकी का गात्र में जान का कोई प्रयत्न न किया। हा मुझ बुलावान के लिये पाग के गाँव में चार मनव्य भक्त लिये गये। लक्षण साध घन घाट घाट लडकी लडगाइती हुई घर आ पहुँचो। उमका बन्ना था कि जब घरना उम पर उठगी तब रदा का अन्य जाय न देख वह पहाड में नीचे बू पड़ा किन्तु घरना न उम हवा में ही पकड लिया और लडगा का लिये नाल आगई। इसका घा उम कुछ घा न था। हाँ आन पर उमन अमन

का पानी के समीप पाया। चिल्लान की घबित उसमें न थी अतः हाथ-परा से घमिटी हुई वह घर पहुँच गया।

वह भी कान्नी मुन केन पर मन दरवाज से भाँड का हटाया और अन्दर जाकर घायल लडकी के ऊपर पड़ी हुई गून से मनी चान्दर का अल्प किया। लडकी की दयनीय दशा का वणन करन का म साहस भी नहा कर सकता। यदि म आघुनिव यत्रा से सुसज्जित अक्षर होता तो भी समथल म उसको जानन वचा पाता। फिर म तो या एक माधारण मनष्य। श्वाई के रूप में मरी जब में धाँडा सा पातामियम पमॅगनट पडा हुआ था। एसा परिस्थिति में लडकी के प्राण वचाना अतम्भव था। वरु कमरे में बहुत गर्मी के कारण धाव एक चुन था। गनीमन थी कि वह यचारो बँदल अपचततावस्था म थी। लडकी का पिता भरे माघ ही कमरे में आगया था। बँदल उस सतुष्ट करन के लिए मन लडकी के घावा को अच्छी तरह पातामियम पमॅगनट मिश्रित जल से धा लिया।

अपन पढाव पर लौटन के लिय अब विन्ध्व ही चुवा था। अन रात जातन के लिये काई स्थान ग्राजना था। कुछ दूर माने के किनारे एक बहुत्वाय पीपल का वृक्ष था। इस पीपल के नाच पूजा आदि करन के लिये एक खबूतरा बना हुआ था। इल खबूतरे पर कपड उतार कर मन सात में स्नान किया और फिर भरा राइफल लेकर पेठ से पीठ सटाय रात जातन को तयार हा गया। वस यह स्थान रात व्यतीत करन के लिये अनकूल न था किन्तु गाँव के उस धक्कारमय गम कमरे से जहा मकिगया का झुड भितभिना रहा था और यातना में पड़ी हुई एक स्त्री अपनी अन्तिम घडिया गिन रही थी यह स्थान हर प्रकार से बहतर था।

रात में गाँव से आनी हुई कण्य प्रलन से मालूम हा गया कि घायल बालिका के कपडा का अन्त हा गया है। प्रातःकाल म जब गाँव से गुजरा तो उसकी अन्तष्टि त्रिया का आयाजन हो रहा था।

दल्हनिया तथा ओगालीवाली हत्याभा का दण्ड कर यह स्पष्ट हा गया था कि बुडा शरनी मामाजन अपनी पाठी पर ही निभर रहा करता था। घायल कर लन पर मनष्या का सस्म करन का काम शरना पाठा म कराना थी।

प्रायः नरमगिया द्वारा आयाजित मनष्या में ग बिरला हा काई बच कर नाग

पाता ह किन्तु इस विशप नरभक्षिणी द्वारा आक्रमण हान पर अधिकांश लोग बचल पाय लहा हुए थ। ममापस्थ अस्पताल ५० मील दूर था। बादम ननीताल लोटन पर मन सरकार से निवेदन किया कि एस गाँवा क मुखिया को जहा कि धामखोरा का प्रकोप हो नीटाणुनागक औपधिया एव पट्टिया आदि भज दी जाय। दूसरी धार उधर लोटन पर मुझे जान कर हप हुआ कि मेरी यह प्रार्थना स्वीकार कर ली गई थी और इन औपधिया क द्वारा कई लोगों के प्राण बच गय।

दलकनिया में एक सप्ताह ओर रह कर मन रानिवार का ननीताल वापस लोटन का निश्चय कर लिया। नरभक्षिणी के राय में मुझ लगभग एनभास हा चुका था। निरन्तर खुले स्थाना में सोन से ब खतरे के स्थानों में न जान किनन मील चलन से म अपन का अस्वस्थ सा धनभय करन लगा था।

मेरी यह घोषणा सुनकर घामीणा को बड़ा दुःख हुआ। मुझसे उन्होंने अनुरोध किया कि म जान का विचार स्मगित कर दू। मने उनका वचन दिया कि म जदी ही लीट आऊगा।

इतवार क दिन गाव का मुखिया बोला माहव जान म पहक हमारे लिय कुछ गिबार मारत जाइय।

मन उसकी प्रार्थना का तत्काल स्वीकार कर लिया और थाप पट धाम म अपनी २७५ राइफल व पाँच कारतूम एवर ५ धामिया महित जगल को धाम पडा। सामन पहाड़ की ढाल पर मन अपन घोम से कई बार घुरडा का चरत हुए देगा था।

मेरे साथ क ५ धामिया में से एक काफी लडा एव दुबला-पतला था। उसका बहुरा अत्यंत क्रूर था। वह पहल कई बार मेर नामे में आ चुका था। म उगका धाता का बड ध्यान से मुतला था। कई बार यह मुझ आती धामखोरा म मुठभट वाले बहानी गुना चुका था पटा तरु कि मुझ उगकी बहानी बठाव हो गई था और म नील में भी उस टुहुरा गकता था। उसी क घामा में म उसकी बहानी लिगता हू। यह पन्ना ४ बय पूय पत्ति हुई थी।

पन्ना की शाल पर उग घोठ क पड का आप देग रहें ह न माहव ? उगन उगना उगना हुए कहा।

हा हा थ। पड त्रिमा पूव की आर यह बग मा पट्टन ह। बग इगक उगर शाल में धार म माा पर आवमण किया था। यह हगियाला धाम

मकान की दीवार की भाँति एकदम सीधा खड़ा है। पहाड़ियाँ व अतिरिक्त इसपर कोई भी घर नहीं जमा सकता। उस दिन मैं और मेरा आठ वर्षीय पुत्र इस ढाल पर घास काट रहे थे। घास काट कर हम ऊपर मदान पर रखते जाते थे। ढाल के किनारे पर खड़े होकर मैं घास का गटठर बना रहा था कि अकस्मात् आदमखोर मुझ पर कूद पड़ा। मरी दाहिनी छाँव के नीचे तथा ठोड़ी के गदन पर उसने अपने दाँत गड़ा दिया। उसने वजन से और हमले की झपट से मैं पीछे के काल गिर पड़ा। शर मेरे ऊपर आ गया था। उमड़े मोन से मेरा मोना छिपका हुआ था और मरी टांगा के बीच उसका पेट था। गिरते समय मैं ब्राँस की एक शाखा पकड़ ली थी। उस देख मेरे मस्तिष्क में एक विचार आया। यदि मैं अपना टांगा को समेट कर शर के मोन से भिगा दूँ और उसे दबल दूँ तो कदाचित् बचकर भागने का अवसर मिल जाय। शर मेरे चहरे की हड्डियाँ को धूर चूर करता जा रहा था। आहूँ कसी घातना थी! ग्राहब मैं फिर भी बहोत न हुआ।

मारे गाँव का सबसे लम्बा युवक मैं ही था उसने सगव अपनी माम पेनियाँ को मुहलाने हुए आग कहा। धीरे धीरे मैं अपने पर सिबाह कर घर की छाली में लगा लिया और बाय हाथ का जार लगात हुए एक झटक के साथ मैं शर को अपनी टांगा पर गाधत हुए हवा में उठा लिया। दूसरे क्षण शर ढाल में नीचे लटकता नजर आया। यदि पेड़ की टहनियों का मैं कम घर पकड़ न जाता तो स्वयं गिर जाता।

भय के भारे मेरा लडका मंत्रमुग्ध सा रत्न हो रह गया था। मैं उसकी घाली में अपना मूँ लपेटा और गाँव पहुँच गया। घर पहुँच कर मैं अपनी स्त्री को कहा कि मेरे मित्रों का बरखा दो। मरने में पहले मैं सबसे मित्रों का शरिता था।

मेरे मित्र महा चारपाई पर लगे कर ५ मील दूर अम्बोड के अम्बोडाले जाते शरिता के बिलु मैं उन्हें मना कर लिया। पीछा अगल ही मेरा अन्त समाप्त था और मेरा प्रबल इच्छा थी कि मरी मृत्यु उता प्राम में ही अहाँ मेरा जन्म हुआ था।

जब लाना न महा पानी पिपान का प्रयत्न किया वह मेरे गले के घावा से बाहर बह निकला।



म घबराता म मड़पता हुआ अनन अनन का प्रताणा बन रहा था क्योंकि उस पीड़ा से मर्या हर प्रकार अकठी थी। धारे-धार मरव ही मरे पाव भर गये और म स्वल्प ही गया। माहिय जमा क्षाप अब मर रहूँ म बुझा हा पला

हू। अब मेरा शरार भी दुबल हो गया है। लगभग मुझ धूनाधूवक देगन है।

मेरी शत्रु वह नरमक्षिणी अमी जीवित है। वह शरती व रूप में कोई प्रतात्मा है और जब कभी भी उस खन की जख्मन हाती है वह शर का रूप धारण कर लिया करता है। लगा का बहना है कि आप साधु हैं। जा शक्तिया आपकी रक्षा करती है वे प्रतात्मा से बड़ा है अन्यथा आप तीन दिन रात जगल में अकेले रह कर कैसे लौट आयें ?

उमन स्पूलकाय शरीर का दस कर मालूम हाता था कि वह अगन समय में सचमध ही एक बड़ा बलिष्ठ पुरष रहा होगा अन्यथा साधारण मनष्य की शक्ति नहीं कि वह शर का टागा पर रख कर उछाल दे।

यही विन्दक्षण मनष्य हम समय हमारा पथ प्रभाव बना हुआ आग आग चल रहा था। उमन शय पर एक गुन्धर भी कुहाडी थी। टड-मन् रास्ता से ल जात हुए उगन हम नाथ घाटा में पहुँचा लिया।

साघोरमणी पार करके हम कुछ एम त्वना व पार आ पहुँच जिनका आत्ममदार व भय से उत्राड छाड लिया गया था। हमन बाण हमें बड़ी बड़ी बडाई बहना पडा। मेरे साथी में अब भी तावत की कमी न था। म बाच-बीच में ठहर कर आसपाम व गुन्धर दस्य का शरारता जा रहा था अथवा उमने साध-साध चलना कठिन हो जाता।

पडा व जगल से निबल कर हम घाम व डाल पर पहुँच गये। इसी आर एक परधर की विनाल बहना थी। लगभग १ फीट तक यह ऊपर की बजा गई था। इसा बहना व ऊपर बाडी भी हरियानी था जिम पर चलत हुए धुरदा का म अगन गीम से दस चुका था। हम लग कुछ ही दूर गये हाग कि नीच घाटा से एक धरद निबल कर ऊपर का बहना लगा।

मेरा गाग गान हा धर डर हा गया और लडकता हुआ आँगा से आँसल हा गया। बहना का ललहती से गाया हुआ एक लुमरा धरद यदून की आवाज से चौक कर बहना व ऊपर दोडा। पथर का बहना पर परड़ एक पार व अनिरिक्त अथ बाई भा जानकर अथ प्रकार दोड़न का गानन नहीं कर सकता।

धरद ऊपर का बहना हो जा रहा था। यदून का मसगा का १० गड व

साथ पर रख कर म उमक रकन की प्रतीक्षा करन लगा। अन्त में ऊपर एक चट्टान पर खड़ा हाकर वह हमें ताकन ग्या। मरी गात्री गन पर वह उड-खड़ाया सभला और फिर धीरे-धारे चढन लगा। दूसरी गोली स वह गिर पडा और लुडकता हुआ वहा जा गिरा जहा म वह चला था। लुडकता-लुडकता अन्त में वह हमसे १५ गज नीच एक पगडडा पर ख गदा।

इसक बाद जो घटना घटित हुई वह भरे लव शिकारी जीवन की एक अन्तिम घटना थी। इससे पूव केवल एक अवसर पर मन एसा दृश्य देखा था किन्तु उम समय लटरा एक बाघ था।

पुरड लुडकता हुआ आकर जम ही रका वम ही पास के नाल म बड़ा-सा रीछ (Himalayan bear) निकल कर सीधा पुरड के पास आ गया। फिर वह वहा पर बठ गया और पुरडका गाल म उठा कर मूषन लगा। उसी समय मन गाली खग दी। या ता मूषस बन्दूक चलान में कुछ जल्दी हा गई या मन अधिक दवा कर निगाना साधा क्याकि मीन क बजाय गाला भालू के पेट में जा लगी।

इम आश्चर्यमक यथ्यापात को रीछ न पुरड की ही करतून समझ कर उन जार म उछाल कर दूर फेंक लिया और गरना हुआ नीच का भागा। त्रिम समय कह १ गज नीच स भागता जा रहा था मन अपना अन्तिम कारतूम उन पर दाग दिया। गाली पिछल घट क माम में जा धमी। मन आत्मिया का पुरड उठान भत्र लिया और स्वय खक क चिन्ह देवन चल लिया। मून स मानूम हा गया कि राछ का घात करारा लगी ह किन्तु फिर भी गाली राइफल लकर उगका राजना उचित न था। प्राय एम अजररा पर भालू का मुकाबला करना बडा कठिन हाता ह। साधारणतया भी रीछ स्वभाव का सत्र जानवर हाता ह।

सीमा पती म बहुत दूर था। अत वहा म कारतूम मगवान का समय न था। इमालिय यह निश्चय हुआ कि पन्पर और कुम्पाडा म भालू का समाप्न कर लिया जाय।

पन्पर कापा ऊचा था और उग पर शाडिया त्रिपकरण न म थी। ऊपर ऊपर चलन रान म हमारा काम बन सकना था और न यथा मय था कि हमारा टाली का कर्ई ना सन्ध्य गतर में रहगा। आग-आग मन चलना चुन लिया और

पीछ पीछ व दा मनस्य एक-एक घुरड को अपनी पीठ पर लाद हुए चले आ रहे थे।

रक्त की धार नीचे नाले की ओर चली गई थी। यहाँ से हमारी टांगी दो भागों में विभाजित हो गई। मैं और मर्रा कुल्हाड़ीवाला साथी नाके व करीब करीब चल रहे थे और शेष आदमियों को कुछ दूर पर चलन का आदेश दे दिया था।

हमसे पचास गज नीचे नाले में कुछ छांट बासा का एक पुंज था। जब इस क्षुरमुट में पत्थर फेंका गया तो भालू गुस्से में चाखता हुआ बाहर निकल आया। दूमरे ही क्षण हमारी टोपों व गंग पुरती में पहाड़ पर जा चढ़। मर्रा इस ढग की कमरत का अम्यास नहा था। जब मन पीछ मठ कर लेता भालू नीचे को धावन भाग रहा था। मन आवाज लगा कर अरन सामिया से पून रीछ का पीछा करने के लिये कहा। हम लाग दाच-बीच में उमपर पत्थरा की बीजार करते जा रहे थे जिनका उत्तर रीछ गुर्गीर देना जा रहा था। अन्त में एक माड़ पर भालू अदृश्य हो गया। अब फिर आगे रक्त की धार का अनमरण करना उचित न था क्योंकि हम लाग पथरीले प्रदेस में जा गये थे। बिना भी चट्टान व पीछ भालू छिपा रह सकता था।

कुछ गंग गुम्ताकर दाना आर से हम लाग आगे बढ़े। मैं एक ऊँचा चट्टान पर जा चढ़ा और मुँह कर नीचे झाना ता भालू का लगे हुआ पाया। मैंने एक १५ गज का टाँचा उठा लिया और निगाना लेकर उम रीछ पर गिरा दिया।

पत्थर रीछ की नाक व कुछ आगे गिरा और उगी समय यह उठ कर चल दिया। फिर वह हमका पहाड़ की बगल में लिपटाई पड़ा। फिर मैं उगवा पीला मरगर्मी में धुंरू हो गया। यहाँ मरगर्मी गला आया था अब हम भी लौटत हुए उगवा पीछा करने रहे। लगभग एक मीटर दौड़ने पर हम लाग कुछ मीट्रीनमा गंगा में जा पहुँचे। यरगान व पानी में इन गंगा में नालिया-गो बन गईं थी। लगी ही एक नागी में राछ न जाकर धरण ला।

मरग बुला मित्र धार ग मल्लयद्ध करनेवाला थकल एक एता पाड़ा था त्रिमर पाम कुल्हाड़ी थी। अब स्वगम्भनि मे जम्लाए व काम के लिये उगी को चुना गया। बिना बिगी मित्रक व और मानवानों में यह रीछ व पाम

पहुँच गया और एक वार हवा में अपने कमबील कुल्हाड़ का घुमा कर उसने फल व उल्टे भाग से रीछ के माथे पर एक भरपूर हाथ जमा दिया। अपने परिश्रम का परिणाम उल्टा देखकर वह स्तम्भित रह गया। कुल्हाड़ी का सिरा राछ का खोपड़ी पर से ऐसा उछलता जैसे मानता वह खर के डर पर मारा गया है। राछ गुस्से से चीखकर पिछले पाँव पर खड़ा हो गया किंतु भाग्यवश उसने हमला नहीं किया।

रीछ कुछ दूर चल कर फिर एक नानी में छिप गया। अब मरी बारी थी। परन्तु एक घोट खा लन पर रीछ सतक हो गया था और मुझ पास पटकन भाग न देता था। बड़ी धठिनाई से मैं खबर काटकर उसके समीप पहुँच गया।

मुझ बचपन से ही बनना जाकर एक लकड़हारा बनने की आकांक्षा थी। इसलिए मुझ कुल्हाड़ से चाट करन का अच्छा अभ्यास था। मैं त्रियामलाई की सोब की कुल्हाड़ के फल में एक वार में खर के दाँव के मक्ता था। मुझ कुल्हाड़ के स्वामी की भाँति कुल्हाड़ के फिमलकर पत्थरों पर खराब हान का भय न था। जस ही मैं रीछ के समीप पहुँचा मैंने कुल्हाड़ का समूचा फल उसकी खोपड़ी में घसा दिया।

रीछ की खाल पहचानना के लिए एक बहुमूल्य वस्तु है। जब मैंने कुल्हाड़ के माथे में कहा कि वह घुरड के मास के दाँव हिस्से के साथ ही माथे रीछ की खाल का भी एक सक्ता है तो उसके गव की भीमा न रही। अन्य लोग उस ईर्ष्या मरी दृष्टि में दख रहे थे।

अब घटनास्थल पर गाँव के और भी कई मनुष्य आ गये थे। घुरडा के मास का बखारा हो रहा था और भाँटू का गाल निवाला जा रही थी। मैं गाँव वापस चला आया।

मैं जिन भर के घसा हुआ था। यदि उम रात नरभक्षिणा उघर आने लगी तो मैं मृत हो जाता। मुझे यह ऊपना हुआ पानी।

जिसे देख मैंने मरना निवाला आया था वह बड़ी गगन था। कई स्थानों पर विषय खड़ा था खड़ा पानी था। जब मैंने अपना विचार गाँववालों का घनाया उठाने राधे दाँव में मैंने हड़गत हान हुए जाना पाँस। हम गमन में बड़े एक घसा मित्रता था और फिर गाँव नीचे गनावाग पटना जा सकता था। गनावाग में मैंने नानाकार कर में जा सकता था।

याना की तयारी करन के लिये मन अपन आदमिया से रात ही में कह दिया था। उन्हें सामान बाधन के लिये पीछ छोड़कर मन्त्र निकलन से कुछ पूरा ही दूबनियाबाला से विदा लेकर चल पार। जिस पगडड़ी से म इस समय जा रहा था वह उसमें भिन्न थी जिसमें हम लोग दूबनिया आया था। इस पगडड़ी से गाँववाले पहाड़ की तलहटी के बाजारों में मौला लन जाया करते थे। यह पगडड़ी बाँध और चीन के जगल म से होकर गई थी।

गल मप्लाह से धारना की कोई सूचना नहीं मिली थी। इसी से म और भी मनर्त हागया था। अल में एक घण बाद म वन में से निकल कर पहाड़ की चाटी जा पहुँचा। पहाड़ का यह खला हुआ भाग लगभग १० गज लम्बा एक ५० गज चौड़ा था। इसका आकार कुछ-कुछ नागपानी सा था और इसने बीच में बंध हुए पानी का एक पावर था। साँवर इत्यादि इस पावर से पानी पिया करते थे और बिनार पर लाटा करते थे। साँव दखन के लिये म पावर के समीप चला आया। जलाशय के बिनार गोरी मिट्टी पर धारनी के साँव अकिन थे। जिधर से म आया था उसी ओर से धारनी भी आई थी। मेरे पहुँचन से यह बदाचित्त सामन के घन जगल में चला गई थी। मन एक मुअबसर गवा लिया था क्योंकि यदि जरा सावधानी से म आग देगता हुआ चला जाता तो पहाड़ मन ही उस लम्बा होता। फिर भी म नर में था क्योंकि धारनी अवश्य ही मुझ देव चुकी थी अथवा वह पोगर से हठबडा कर भागती नहीं। वह यह भी दख चुकी थी कि म अनेका था। कर्नाचिन वह यह अनमान लगाती होगी कि उगी की भाँति म भी पावर में पानी पीन जाउंगा। अवश्य ही यह आड से मुझ देखनी जा रहा होगी। अब तक मरी मन्त्र विलुप्त स्वामाविन थी और यदि म उस विन्वास लिला पाना कि उसकी उपस्थिति या मझ जान नह। इ लो मभवत वह मुझ दूगरा अवसर से दनी। अब मुझने हूण मन कई बार गागा और पानी का हाथ म हिनाया। गाँव ही गाँव बड़ी मनवता से म टार के नीचे म इपर-उपर दगता जा रहा था। दगर बाँध कुछ गूगी लकडिया बोनता हुआ म धोर-याने पट्टान के नीचे आगया। यन्त्र मनें कुछ आग जगल ला और पट्टान से पाट मठा कर गिगरेट पान लगा। गिगरेट के समान ज्ञान तक आन

भोवझ चुकी थी। फिर मैं अपने बाय हाथ पर सर रख कर लट गया। गड़फल
मन जमीन पर रख दी किंतु जगली घोड़ पर तयार था।

मरे ऊपर की चट्टान काफी ऊंची थी और उस पर किसी भांजानवर का
मजा होना अमम्भव था। मुझ केवल मामन की ओर स मतक रहन की
आवश्यकता थी। सामन की झाड़ी भी लगभग २० गज दूर था अतः मैं भंगी
भाति मुरक्षित था। यद्यपि अभी तक मन शरनी की आहट नहा पाई थी
और न उसे देखा ही था परन्तु मुझ दब विश्वास था कि वह मझ देख
रही है।

मरे टाप के विनारे मैं मगी आग ढकी हुई थी किन्तु मैं नीच से भंग भाति
दग मकता था। जहा तक मरी दृष्टि पहुंच सकती थी मन जगल के चणे-
चण का भंगी भाति देख डाला। बाय निस्पल थी और पेठ के पत्त तक
स्थिर था। मैं अपने आत्मिया का आग दे आया था कि ये दकट हावर गात
हूए मुझस मिले। अभी तक वे पहुंच न थे और कम मैं कम डब घट तक
आन की आगा भी न था। इस बीच समवन शरनी मुझ पर आनमण करन या
माक्को बुझन के लिय आड ग बाहर निकल आय।

कुछ अवसरा पर समय की गति बड़ी मन् रहनी है। कभी एक-एक पल
एक एक क्षण के समान प्रतीत होता है और कुछ अवसरा पर पता भा नहा चलता
कि समय बच बट गया। मरा बाया हाथ जिम पर मैं सर रक्य हुआ था
बड़ी दर स मुझ हा गया था किन्तु फिर भी नीच घाटी स आती हुई मेरे आत्मिया
के गान की आवाज मुझ एक दम मुनाई पडी। आवाजे तज जाती गई और उमी
समय मुझ ये एक माह पर शिवाई पड। समवन इसी माह पर शरनी न मझ पानी
पीकर लोन समय दग लिया था। यह दूगरी अमफलता थी और इस बार का
अंतिम क्षणर।

अब कुछ शर मरे आत्मी मुन्ना लिय तक हम हटवान के डारवग के आर
चल गिय। ये रास्ता २० माल लया था। लगभग १०० गज मुन् मगत
में बज बनन पर हम आगा का रास्ता एक घन जगल में म हाता हुआ चल गया
था। यों मैं मन आन आत्मिया का आग कर लिया और पीछ पीछ स्वय
करन लगा। इस भाति ११ माल चल लन पर हमें माह में बज हुआ एक मनुष्य
शिताई लिया। ये आनी भमा को बरा रहा था। हमार जलान का

और उममें घास और झाड़ियों का घना जंगल उग आया था। नरभक्षिणी शरनी का उत्पाता का अभी अन्त नहीं हुआ था और वह अब भी स्वच्छन्तापूषक जंगल में विचरण कर रहा थी। इसलिये इस झाड़ी में जाना उचित न था। दाहिनी ओर एक हरा भरा ढांग था किन्तु बिल्कुल खली जगह होने के कारण उधर न छिप कर लाना के समीप पहुँचना कठिन था। पहाड़ की चोटी से लकर नीचे नघौर नदी तक एक नाला खला गया था। इस नाग में घना जंगल था और यह नाला लाना के पास से ही निकला था। जिस वक्ष पर गिद्ध बैठ हुआ था वह इसी नाले की बगार पर था। इसी नाले में होकर आगे बढ़ने का मन निश्चय किया। जब तक मैं घामिणा की महाघना में दूबन की यात्रना बना रहा था तब तक मेरे आत्मिया न मरे लिये साय तयार कर दो। तिन दूबन को था किन्तु इतना समय था कि मैं लाना को लेव कर अपने पहाड़ पर घामिम गेट धाऊँ।

जान मैं पहले मैं अपने मनष्या का आशेग दे गया कि यदि वे बन्दूक का आवाज सुनें और मुझ लाना के पास की मूली जंगल में गडा दख ता २-६ घामिमी खुले मदान में हाल हुए मर पास भज लिय जाय। यदि इगक विपरात वे बन्दूक की आवाज न सुनें और मैं मुबह तक न लौट ता मुझ मोजन का आयाजत किया जावे।

इस नाल में बड़ी-बड़ी खट्टानें थीं और वह रसभरी (Raspberry) की झाड़ियाँ में भरा हुआ था। इसलिये मुझ धीरे-धीरे आगे खटना पड़ रहा था। अन्त में बड़ी खट्टाई खड खडन पर मैं उम वृक्ष के पास पहुँच गया जिस पर गिद्ध बैठ हुआ था। परन्तु इस स्थान में लाना नहीं लिये गई पड़ रही थी। जिस उजड़ हुआ गत का मैं दूरबीन में माघा दख चुका था पास जान पर जात हुआ कि वह अथक्ताकार है। एक बार घना जंगल था और दूगरी ओर पहाड़। लाना का दखन के लिये या ता वृक्ष पर खटना पड़ता था एक लम्बा खक्कर लगाना पड़ता।

मन वग का शरण लाना उचित ममसा। गाय की लाना पड मैं लगभग २० गज दूर पशे हई था और बलाचिन् तेंदुवा हमस भा समीप था अतएव बिरा लेंदुरे को छट इत वक्ष पर खट्टनर अममभव था। यदि वक्ष पर गिद्ध न हाल ता मैं पेड़ पर खट्टन का प्रपन्न भी न करना। वृक्ष पर लगभग २ गिद्ध

बस हुआ था। दो और गिट्टों के आ जान पर वृक्ष में कलरव सा मच गया। यह वृक्ष पहाड़ की कगार पर झुका हुआ था और गाल की ओर इसमें से एक मोटी गाथा निकला हुई थी। बन्दूक चिप हुआ इस गाथा तक पहुँचने में मुझ कठिनाई हुई। इस बार जब गिट्टा में फिर से झगडा गुरू हुआ तो मैं आगे बढ़ कर एक टहनो पर जा बठा। यदि जरा भी पाव डघर से उधर हो जाता तो नीचे गिरने से हड्डो-समली धूर-धूर हो जाती।

इस स्थान से लाग साफ दिखाई पड रही थी। लाग का यात्रा-सा भाग खाया गया था। मुझ टहनो पर बठ काई १० ही मिनट हुए हाग कि दोनों नवागतुक्ष गिट्ट पड से उठकर जमीन पर आगय। बक्ष पर कं धय गिट्टा न उनका विगप आन्य सत्कार नहीं किया था। य गिट्ट भूमि पर बठे ही य कि पुन उड गय। उमो क्षण मरी आर की झाडिया में मैं एक मुन्दर तेंदुवा बाहर निकल आया।

जिन लाग न तेंदुव का अपन प्राकृतिक घर जगल में नहीं देखा ह व उमकी शपयता और मुन्दर रगान खाण की कल्पना भी नहीं कर सकन। हमारे भारतीय जगला का यह सब से मुन्दर और गानगर जानवर ह। उमका मोल्य बचण यादगो ही नहीं ह क्योंकि उमका शरीर की प्रयक मामपेगा में बल भरा हुआ ह। माहम एक बल में उमकी तुलना किमी अन्य पशु से नहा की जा सकना। भारत में कई जगल तेंदुवे का परिभाषा का जाता ह — गल्ल आनि का नुवमान पशुषान वाला एक बकाम जानवर (Vermin) किनु इस मुन्दर पशु का य नाम दना अयाम ह। तेंदुव का बकाम हानिकर जानवर बयल के ही बिह सकने ह जिहानि विद्वियामानां में बल बमजोर, रागा और भूम से क्षणकाय तेंदुवा का दगा ह।

सर इस समय मरे मामन गहा तेंदुवा मुन्दर ला था किनु दण्टनीय था क्याकि उमन गाँव के मवणिया का मानना करू कर लिया था। मैं गाँववाणों का बचन द चुका था कि उनका इस छान पान का मैं अरमर मिलन पर अवय्य मार दू गा। वह अवगर अब आगया था और मरा समय में तेंदुव न बन्दूक का आवाज भी न मुनी हागो कि वह लाट गया।

मनुष्य का आज जपन में कई अकल्पनाय परिग्यितियां का मामना करना पटना ह। इनमें मरग विनिष ह—विगा मनुष्य विगप या परिवार पर दुर्माय

का आना। उदाहरणार्थ इसा मृत गाय व स्वामा का एक गजिय। उसकी आम आठ बप का थी। दो बप पूव घास काटते समय उसकी माता का आत्म स्तार न मात्र डाला था। इस घटना व ठाक एक बप पचास उसका पिता की भी यहा गति हुई। पिता व छात्र स ऋण का चवाने में घर की हांडी तक बिक गई और इस लक्ष्य न भवल एक गाय लेकर अना जाविना आरम्भ कर दा। गाँव व २० - ० मवगिया व स्रद्ध म सतदुये न दया लक्ष्य की गाय का चना। (लक्ष्ये व दुस को दूर करन व लिय मन उस एक नई पन्डी गाय ल दी। किन्तु इसस उस विनाप सावना न मिला—वह मृत सफल गाय उसकी चिरसगिता था।)

दलकनिया पहचते ही मन अपन बटरा का वाचना आरम्भ कर दिया यद्यपि मुझ शरनी द्वारा इन बटरा व मार जान का आगा कम था।

नधोर घाटी क पास भाल नीच एक बड़ी सी चट्टान की तलहटी पर एक छाटा-मा गाँव बसा हुआ ह। यह चट्टान गगभग हजार पाट ऊचा ह।

गत महीना में छान्मखार इसी गाँव की सीमा पर चार मनघ्या का मार चुका था। तेंदुव का मारन व बाए ही मर पास गाँववाला व कुछ प्रतिनिधि यह अनरोप लेकर पहुच कि म अपन वनमान पडाव का उठा कर गाव व समाप ल चल। शरनी का कर्म शर गाँव के ऊपर का चट्टान पर ग्रामाणी न दम लिया था और एमा प्रतीत हाता था कि चट्टान के ऊपर की किसी गफा में ही उसकी मां थी। मुझ बताया गया कि आज ही सुबह घाम काटती हुई कुछ स्त्रिया न शरनी का दल लिया था। इसी कारण समस्त ग्राम में आतक था और लोग का घरा मे बाहर निवलन तक का माहग मनी हाता था। मन गाँववाला गरा नजा गने प्रतिनिधि मडला का बचन लिया कि म मरमक उतरी मशायता करगा। म दूसरे दिन मडल हा रवाना हा गया। गाँव म सामनवाठ पन्ड पर चत्र कर म वहा दर तक अपना दूरबात म चट्टान का दखता रहा। इसका मां घाटा का पार कर म गाँव व ऊपर चट्टान पर पहुच गया। यहा चहन में मश यदी बठिनता हुई क्याकि पाव कियलन म नाच गिर पडत का भय था। यदि बडा शरनी इस जगह आनमण कर दता ता अपना रक्षा करना भी अगम्भव था।

हा बचन मन चट्टान का भत्री प्रकार दल लिया और भाजन करन के

लिय अरन खीम का लोट हो रहा था कि पीछ की ओर मे दा आत्मो मरी आर दौडन हुए गिवाई पड। मर पाम पहुचन ती उहान मस घनाया कि एक गहरे नाल में (जग म तिन में जा खवा था) गरनी न एक बल का अभी अभी मार राना था।

यह नाग दा मो गज गहरा और मो गज चौडा था। लान पर पहुचन म मात्म हवा कि गिदों न कुछ हड्डिया ओर खान न अतिरिक्त कुछ मो गप नही छाडा। यह स्थान गाँव मे बवल एक मो गज क फामल पर था किन्तु ऊपर जान क लिय काई सीधा रास्ता न था। अत मरा पथ प्रत्याव मुस दा फर्निग घानी म नीच ल थाया। इसी स्थान म मवदिया के चलन का एक माग भी गुरु हुआ था। यह माग घन जगल में म हारा हुआ घूम का गाँव का जाता था। इसी माग म हम गाँव पटूच। गाँव पहुचन पर मन मुनिया का बनाया कि गिदा न लान का समाप्त कर लिया ह। मन उमम एक कटरा और कुछ मजबूत रस्मिया का प्रबन्ध बनन का भा कह लिया। जब तक य प्रबन्धानि ह। रत थ मरा भोजन दलकनिया म जागया।

सूर्यास्त में रा न था जब म कुछ आत्मिया का लकर नाल वापन गया गप में एक लगडा कटरा भी ल लिया था। लान म ५ गज दूर बरमानो पानी डाग रहा हुआ एक पीठ का वन पडा था। उन वन का एक मिठ नाल क ल में गूब गहरा घुगा हुआ था। इसा वन क बाहर निकल हुए मिर म कटर का मजबूती म बाध कर गाँववाले गाँव को यागिग बल मय। आगरान में कना बूदा न य इमलिय मुस नाग की बगार पर ही चला पडा। यह बगार नाड म २० फीट ऊची थी। बगार क कुछ नीचे चट्टान अन्त की ओर मुड गई थी और यह महा हुआ भाग ऊपर म नगी गिगाई पडता था। बनन क लिय यह वन गरार जगल था। मर त्रिधर म शरनी क जान की सम्भारना थी उमी आर पाल कक म बठ गया। मुसम २ गज दूर मामन बरगा बपा हआ था।

गूब दूर चुका था जब कया गह हाजर नाड क ऊपर की आर गवन लगा। दूरर ही शान ऊपर म एक पत्थर लडकता हवा नीच आ गिग। त्रिधर म आबाद काई थी उम आर बन्दूक पना रना मय था इगलिय म पुरबाप बंगा रता। कुछ देर बाद कया मरा आर मह गया। मरल था कि बहू

जानवर का दम्ब कर भयभीत हो गया था और वह जानवर चट्टान के नीचे की गुफा में था।

घानी ही दिन में अपने नीचे मन शर के सर का निकलत हुए देखा। शर के गिर पर गाली कबल विनाप अवसरा पर ही चढ़ाई आती है और तनिक भी हिलने हुलने से शर मज्ज देव जाता। तो या तीन मिनट तक शर का सिर स्थिर रहा और फिर एक छलाश में वह कटरे पर टूट पड़ा। जसा कि मैं ऊपर बता चुका हूँ कटरे का मह शर की ओर था। मामन से आक्रमण करने में कटरे के सींग से शर का घाट आन की सम्भावना थी। अतः शर ने कटरे पर पाश से आक्रमण किया। न तो शर को इधर-उधर दात ही मारने पडे और न कोई यद्ध ही हुआ। दो शरीरा के परस्पर टकराने के गन्त के अनिश्चित कई आवाज तक न हुईं। दूसरे ही क्षण शर कटरे के ऊपर था। कटरे स्थिर पडा हुआ था और शर उस गले से दबाव हुए था।

प्रायः लोगो का ऐसा विश्वास है कि शर अपने गिकार का गदन पर थपथप मार कर मारता है। यह असत्य है। शर अपने गिकार का दाता में मारता है। शर की दाहिनी कास मरा ओर थी। सावधानी से निगाना लेकर मन अपनी २७५ उस पर चला दी। कटरे का छाड कर बिना बाण शर मुडा और वह कर घाटी में अदृश्य हो गया। अदृश्य ही मरा निगाना चुक गया — बारण मुझ स्वयं मालूम न था। यदि शर ने मुझ या राष्ट्रपल की चमक का नहीं देगा तो उसके लौटने की सम्भावना थी। इसलिये मैं राष्ट्रपल फिर से भर कर बटा रहा। शर के चल जान पर भी कटरे उमा भाति स्थिर पडा रहा। अब मुझ भय होन लगा कि वहा भूल से मन शर के स्थान पर कटरे पर गोली न चला दी है। इस या पन्द्रह मिनट बीत चुके हाग जब शर दूसरी बार फिर मरे नीचे की गुफा से बाहर निकला। इस बार भी वह वही तरह तक गया रहा फिर धीरे धीरे चला और कटरे के पास आकर उम देगन लगा। इस अवसर पर निगाना चलने की सम्भावना न थी क्योंकि शर की पूरा पीठ मेरी ओर थी। सावधानता से निगाना लेकर मन घाडा गया लिया। मरने की अपेक्षा जमी कि मज्ज आता थी शर बाईं ओर उछल कर बगल के छोट से नाल में पम गया। नीचे उतरने में वह पचर सड़वाता गया।

कवल ३० गज के फासले पर काफी खन्टी रागनी में मन दोना गोलिया बगई था और चारा आर भीला तक उनकी आवाज गाँववाले मुन चुक थ। यदि व मुझसे आकर इन गालिया के विषय में पूछत तो बटरे पर लगी हुई गालिया के दा छिग के अतिरिक्त म उहें बतौ ही क्या मकना था? यह स्पष्ट था कि भरी दृष्टि क्षीण हो गई थी या बट्टान पर बहत समय टक्कर लगन म बन्दूक की मक्को अपनी सीध से विमक गई थी।

आसपास की छाटा छाटा वस्तुजा पर दृष्टि डालन से पता चल कि भरी बीना में कोई भा दाप न था और ठाक म देखा ता मक्की को भी मही म्यान पर पाया। दानों चार निगाना चुकने का कवल एक ही कारण हा मकना था—मन निगाना हा महा नहा माथा।

गर के तीसर चार लौटन की कोई सम्भावना न थी और यदि बहु लौटना भी ना घुमल प्रकाश में उम पर चार कर के उम घायल बग्ना उचित नहीं था। इमनिय बट्टान पर बठ रहना व्यथ था।

भरे कपट तिन भर के परिश्रम के पचात पसीन म ल्यपम हा गय थ। ठहा घामु चल रही थी और प्रतिक्षण उममें ठह बढ़ती ही जा रही थी। बट्टान भी गहन और ठही था। इन कर्णों के मार बरा हाल हुआ जा रहा था। उघर म गोप में तयार गम चाय के भा म्यप्त देख रहा था। किन्तु इन सब बातों म अधिब मनरलाज था आत्ममर्ग के मय। अधवार हा चल था। गाँव पहुचन के लिये फलान का दुगम पथ धन जगला में हा कर गया था। गाँववाला का मन्त्र था कि उगान बल गर का देखा था। इमके अतिरिक्त भरे पास व्यथ कोई मकूल न था कि धरना कहा है या फिर जिम गर पर मन अभा माला चलती थी आत्ममर्ग था। धरनी इम समय ५० माल दूर भा हा मक्की थी और बिलुत्त मसीध भी। इन सब माना का गाववर उम म्यान में रहना कल्पनायक जान पर भा मन उगा बट्टान पर गाँव ब्यतीन करन का निश्चय कर लिया।

गरन म आत्ममर्ग दगों के गिवाक करन का य मनाविना मस जथा मना। ज्या ज्या मन इम विषय में माना गया था म घागता का मता पाया। जब यह धरनी तिन के प्रकाश में नहीं मारी जा मका ता फिर उम अचना आय पूरा करके मरन के लिये छाट देना हा उचित था।

जब प्रातःकाल का धुंधला प्रकाश उधर-उधर चलन लगा तो मैं चट्टान पर से उतर पड़ा। उतरने में मेरा पाव रफ्त गधा किन्तु भाग्यवश मैं रेत में गिरा।

मैं जब गाँव पहुँचा तो लोग जाग खड़े थे। एक छोटी मोटी मीठ न मसत घर लिया और मुझ पर प्राना का बौछार भी शुरू हो गई। उतर में मैं बेबल यही कह सभा मैं तो मनगढ़त शरा पर खाली नारतूम चलाता रहा।

भभकती हुई आग के समाप बटखर गम पाय पीन से भर सुन्न शरा में गर्मी लोप आई। फिर कुछ मनुष्या का लकर मैं रात्रि के घटनास्थल पर पहुँचा। मन अपने साथिया का बताया कि किस भाति गुफा से शर बाहर निकला था और किस तरह मन उस पर गाली चलाई थी। जम ही मन नामे की उस ओर इगारा किया जिधर शर भागा था कि बाईं चिल्ला उठा य दमिय माह्र नर मेरा हुआ पड़ा है।

रात्रि के जागरण में मेरी आँख बकी हुई थी। परंतु सामन गिरे हुए शर का पदचानन में मुझ कोई कष्ट न हुआ।

जब गाँववाला न मुझसे साधा सा मवाल किया कि दुबारा मन नर पर गाली क्यों चलाई यन उन्हें बताया कि दूसरा बार फिर शर निकला था और गाँव चलाते पर नाल के उम और चला गया था। इनमें मैं ही लाग फिर पीछे उत गाँव में पड़ा है दूसरा शर।

दाना शरा का आनाए एक मा था और जहा से मन गाली चलाई थी वहा मैं ६० गज के पामन पर से पड़ हुए थे।

जब मन गाँववाला मैं दूसरे नर के विषय में पूछा उन्होंने बताया कि आज तक कबल एक ही नर धक्का देता गया था। अय पगुआ का अपला शरा का गहवाम काल कुछ अधिक लदा जाता है — नववर में अग्रल तक। यदि इन में हुए शरा में मैं एक भा नरभिणीनी गर्नी थी तो यह स्पष्ट था कि उम जाश मिल गया था।

नाए में पहुँचने के लिय एक पगल्लन बदा गई और मस गाँववाला के साथ मैं साथ जा पहुँचा। शरनी के समाप आन पर मेरा आना बड़न लगी क्याकि वह एक बदा शरनी थी। उमसे पजा का निरोपण करने लिय मैं उताव पाग बने गया।

गहू की फसल काटता हुई स्त्रियों पर जब शरणी न आक्रमण करने का प्रयत्न किया था तब वह सतत व किनारे अन्न साफ खाए छाटना गई थी। नरभक्षिणों से खाए तब मन प्रथम बार दखल व और सूख सावधाना से उनका निरीक्षण कर लिया था। खादां से मुझ मालूम हो गया था कि शरणी अत्यन्त बड़ा थी और बड़ी आयु प्राप्त व कारण उसने पाव बाहर की आर मुड़ हुए थे। अगले पजों की गहिया में गहरा लकीर पडा हुई थी और दाहिन पज की गहरी में एक गहरी लकीर, आगे पडा हुई था। अगूठ अत्यन्त लंब व (किमा भी अन्य शर व इतन लंब अगूठ मन नहीं देख)। एम विगप परावाली आदमखार शरणी का १०० परा के धुए म भी आसाना मे पहिचाना जा सकता था।

दुर्भाग्य से मामन पडे हुई मृत शरणी शौचक का नरभक्षिणा न था।

जब मन एकत्रिम गाववाला का यह बात बताई ता उनमें अविश्वास की एक लहर-सी दौड़ गई। म ही स्वयं पहल अवसर पर उठ बना चुरा था कि शरणी बड़ा व और इसी स्थान पर चार मनप्य मात्र डाए गम व-इमम अधिक क्या प्रमाण हो सकता था? पर ता सभा द्वारा व एक सभान होने व।

एमा अवस्था में दूसरा शर अत्रय ही नर था। मगवान पर दखा ता उम एक मुल्लर तपड़ा शर पाया।

शरणी का मने हुए १६ घंटा व सक व और धुए तज था। एसी अवस्था में मुझ माल उताहन में बडा कश्चिनाई हुई।

दाहल तब यह काम समाप्त हो गया। आत्मिया पर माल लानकर म गाव को चले गिया।

प्रातः का आसराग व शरिवाला और उनका भविष्य शर पाव आय। ज्ञान न पहल म उए चतावना दखा गया कि शौचक का आत्मशर शरणी अभा मरी न था और मनकला में यदि जरा भा अभावमाना हुई ता व अवन अवसर का शकल नहीं। यदि लाग मरा चतावना का अवस्था न करत ता आत्मशर शरणी और गहार न कर पानो (जसा कि उमन शर व शरणी में किया)।

शरिवा का शर नरभक्षिणा का महा मिलो। एक मज्जाह शरनिया में और शर वर म शरिवा का शर शिया जहा मुग कुछ शरिवापागा म मिलना था।

माच १९२ म हमार जिला कमिश्नर श्री विविधन आत्मस्वार क राय में दौरा कर रह थ। माच २२ का मस उनका पत्र मिला जिसम उन्हान मुसस तत्कार कालाआगर आन का अनरोध किया था। वहा वह मरी प्रतीक्षा कर रह थ। ननीनाल से कागआगर लगभग ५ माल ह। म दो दिन बाद कालाआगर क डाकग्रगठ पर जा पहुचा। यहा विविधन परिवार टिका हुआ था।

भावन करत समय मुस उन गंगा न बनाया कि वे डाकग्रगठे म २१ तारीख का पहुचे और जब वे बरामटे म चाय पी रह थे तब बगठे क अहात में घाम काटनी हुई छ स्त्रिया में म एक का आत्मस्वार धरना मारकर उठा ले गयी।

पुरती म राहफल न्न टुण आ विविधन न घर का अनुमरण किया। घसी टन के चिन्हा का पीछा करत हुए म एक एस म्यान पहुच जहा घरना न मून यवती का एक वास क बध क नीच का शाली में ठूस ग्या था।

घा में जब मन घटनास्थल का निरीक्षण किया ता भात हुआ कि विविधन क पहुचने ही गरनी पहाड से नीच की आर चला गई थी और एक रगमरी की झाडा में छिप कर सब कुछ देखती रहा। यह झाडा लग म केवल ५ गज दूर थी।

तत्काल ता मघान बनावर कुछ लोगा क साथ विविधन लाग पर बठ गय परन्तु रात भर बठ रहन पर भा घरनी नही लौटी।

दूमरे दिन प्रात काल दाहबध क त्रिय स्त्री की लाग का उठवा लिया गया और बगठ मे कुछ दूर पर एक बटरा बाघ लिया गया। उमा रात गरना न कर ना मार डाला और दूमरी रात विविधन लपति मघान पर वर गय।

कुछ देर बाद मध्या के सुनपुट में वेहोंन लाग क समाप्त किया पगु का आते हुए दगा। इस पगु का उठान भात समझा। दुभाग्य म यदि यह भूल न हानी तो अपन मातृमणुण परिश्रम का फल ध्वंस्य मिलना और व नरभक्षिणी का मार एत क्याकि विविधन दगाति का राहफल का निगाना अच्छा था।

२५ तारीख का श्री मया श्रीमता विविधन कागआगर म चल त्रिय। इस म न दलबनिया स अपन चार बटर भी मगवा त्रिय। धूनि अब घरनी इस चारे पर लपवन लगी थी अत मन जगती सडक पर

प्रसिद्धि अपने बटरा का कुछ दूरा पर बाधना आरम्भ कर दिया। निरन्तर तीन रात गुरनी बटरा के समीप से उह बिना मारे निकल गई परन्तु चौथी रात्रि का बगल से समीपवाला बटरा मार डाला गया। मधरे राग देखन पर बडा निरागा हुई क्यकि बटरे को एक तडुवा की जाडो न मारा था। इन तडुवा का मन रात में बगल के उपर की ओर गुरनी सुना था। यद्यपि मझ इन तडुवा का मारन का इच्छा न थी क्यकि इस प्रदग में बन्दूक की आवाज सुनकर गुरनी सतक हाकर भाग सकती थी परन्तु यह भी स्पष्ट था कि यदि म तडुवा का न मारता ता के मरे दाय बटरा का घट कर जात। इसलिय मन दूँक कर इन तडुवा का मार डाला।

कालाबागर डाकडगले से जगली मडक पदिसम की ओर भीला तक चाड वाझ ओर थधूक के मुल्तर वन में हाकर गई ह। गिकार की दृष्टि से कुमारु में इसम मुल्तर अन्य वन काई नहा ह। साभर बाकड और सूअरा के अति गिनत यहा माना प्रकार की बिलिया भी पाई जाती ह। दा अबमरा पर मुझ सन्तह दृया कि शरनी न इस जगल म साभर मारा है बिल्लु बहुत क्षात्रन पर भी लार्ने न मिल पाइ।

इसके पन्चास दा मप्ताह तक म गिन भर जगल में और सडक पर घमता रहा। इस बीच दा अबमरा पर म शरनी समीप पहुचा।

एक बाग म कालाबागर के पदिसम में स्थित एक उजड हुए गाव म लोठ रहा था। पगडडी पर चलन चलन जब म बट्टाना के समीप पहुचा ता मझ एमा प्रतीत हुआ कि आग मतरा ह। पहाड की चानी म जगल की मडक तक ३० गज का पागला था। ये बट्टाने पगडडी के मध्य में थी और बट्टाना म कुछ भाग एक बगवधनी पिन के आकार का माड था। इस माड म १०० गज आग एक माड और था। पिन पर रास्ता मडक न मिल जाता था।

इस भाग म म कई बार गुजर चला था। किन्तु बट्टाना के पाग म निकलने में मुझ भय आज ही मालूम हा रहा था। मडक पर पहुचन के लिय अय दा रागन सव्य से ओर शादिया में हाकर गय था। मूय छिपन का था अत दिक्क शरन म बट्टाना का भाग अदगर हुआ।

इया उतर की आर चल रहा थी अत मझ बाई आर का भाडा का आर

प्रेमन की आवश्यकता न थी। बेल १ गज तक खतरा था। कंध पर बंदूक तयार रखकर मन सावधाना से आग बढना आरम्भ किया। मेरा दृष्टि चट्टानों पर गड़ी हुई थी और मैं एक एक क्षण सावधानी से रखता हुआ बढ़ रहा था।

चट्टान में लगभग ३ गज से फामले पर कुछ लखी हुई भूमि थी। इसी लगे हुए स्थान में एक मादा बाकड खर रही थी। मैं उसे बतविया से देखता हुआ आग बढ़ गया। मैं देखने ही उमन सर उठा लिया और भूतिवत् खड़ी हो गई। (जब जानवर समझते हैं कि उन्हें किसी न देखा नहा है वे इसी प्रकार ठिठक कर रह जाते हैं। यह बाकड आदि जानवरों की विनाप प्रकृति है।) माड पर पहुँच कर मैं मन पाँछ देखा तो बाकड का पुन खरन में मल्लन पाया। माड में मैं कुछ ही आग गया कि वह मादा बाकड भौकनी^१ हुई ऊपर का भागी। पाँछ लौट कर मैं माड पर पहुँचा तो पगडडी के नीचे कुछ झाड़ियाँ का झिल्लन पाया। यह स्पष्ट था कि बाकड न खरनी का पगडडी पर देख लिया था। झाड़ा या मा किसी चिटिया के घुसन में झिली थी या खरना के घसन में। आग बढन में पहले इस का पना चलाना जरूरी था।

पगडडी का पाँछ मिट्टी चट्टानों पर मैं टपकन हुए जल से भीला हो गई थी। खरन समय इस गाला भूमि पर मैं अरन पत्थर छानता गया था। अब मेरे पत्थरों का ऊपर खरना के विस्तार गाल अखिल था। इसी स्थान पर खरना चट्टानों के ऊपर मैं खरी था। मेरा अतमरण खरन हुए उग बाकड न देख लिया था और बाकड के खीसन पर वह पगडडी छान कर झाड़ी में अन्ध खाल था। अगले के प्रथम भाग में खरना परिचित थी और मैं मल्लन का प्रथम अवसर गाल के पत्थरों के दूसरे माड पर मेरी प्रताणा कर रही थी।

अब पगडडी पर खरन खलता उखिल न था। अतएव मैं खरी हुई भूमि में जाता हुआ मल्लन का आरंभ था। यदि पर्याप्त प्रकाश होता तो अवश्य ही

^१ बाकड की खरना विस्तृत कुत्त का मा जाता है। इस barking deer भी खरन है।

म शरणा पर विजय पा लता क्याकि उसके चट्टान का आश्रय छाड़त ही अब सब घातें मर अनकूल पडती। उसी की भांति म भी इस वन मे भला प्रकार परिचिन था। मुझ मालूम था कि वह मुझ मारना चाहती ह परंतु उसके वार में मरा क्या इरादा था यह वह नहीं जान सकी थी।

परंतु म इन सब बातों मे लाभ न उठा सका क्याकि मध्या रात्रि में परिणित हासी जा रहा था।

म पत्ल भी कहा गिन्त चुका हु कि हमारे शरीर म एक एसी अदभ्य इद्रिय है जा हमें भावी आगवा को चेतावनी दे देती ह। यह गक्ति बडी तीव्र ह। परन्तु यह किम भांति काम करती ह यह म स्वय नही जानता।

उत्साहरणाय एसी अवसर को लीजिय। मत्त न ता शरनी का दखा मुना हा था और न उसकी उपस्थिति मुझ त्रिमा पगू पशी न हा बतलाई थी। परन्तु फिर भा चट्टाना क समीप पहुंचत हा मरा हृत्प घटक उठा था और मझ दब किंवा म ग गया था कि चट्टाना में नरमभिणा मरी प्रनाशा में छिपी हुई ह। इस आगवा को पुष्टि कुछ दर बाद बाकड़ की चाल का मुनवर हा गई। दूमरा प्रमाण था मरे पत्किन्ता पर अकिन शरनी क सात्।

६

जा पाठक मरा कहानी का धमपुकर पड रहे ह उन्हें म शरना म अपना प्रथम एवं अन्तिम मल्लवान का सविस्तार बणन मुनाला चाहता ह।

यह मिलन ११ अप्रैल १३ क मध्याह्न में हुआ—मरे बालाबागर पहुंचन क १० गिन्त पश्चात्।

उम गिन्त म जगती मडक पर अपन कट्टर बाधन गया हुआ था। बगल म एक मात्र दूर मझ स्वरुपिया बानत हुए कुछ मनुष्या की एक टाला मिला। इस टाला में क एक बूढ़ मनुष्य क १- वर्षीय पुत्र का आश्रमगत न एक महोन पत्र मार टाला था। म गुप्तान क गिन्त मडक क बिनार बर गया और बर बूढ़ा मझ अपना कहाना सुनान लगा। उम गिन्त क गग स्वरुपिया बानत जगल गय हुए थ। जब शरनी न बूढ़ क लडक का पकल ता अन्त लाग भाग गड हुए। इस समय भा इस टाला म ५- एक मनुष्य थ जा लडक की मूय क मन्व

घटनास्थल पर उपस्थित था। बृद्ध न उनका दाप देना आरम्भ कर लिया कि उमके लड़के का मृत्यु के मुख में छाड़ कर वे भाग गये थे। यह सुनते ही गरम बहम धरु हागई। उन मनुष्या का बहना था कि बृद्ध न ही मवप्रथम बिल्गाकर भगण्ड मचार्न थी। मुझ अफमोस हुआ कि ब्यथ ही मन यह प्रसंग छड दिया अन्यथा यह यादविवात ही न उठता। वनगण्ड समाप्त करन के लिय मन बृद्ध मे कहा कि जिम स्थान पर उमके पुत्र की मृत्यु हुई था उसी स्थान पर म एक बटरा बाधूगा।

दा कटरा का मन डाकबगल वापस भिजवा लिया और एक कटरे का वाधन ब लिय ले चला। मन दो आत्मिया का साथ ले लिया।

जगली सडक पर पहुचन के लिय दा मील तक एक टकी मत्री पगडडो म जाना पड़ता था। इसी पगण्डा के किनारे एक वास का जगण था जिममें बृद्ध का पुत्र भाग गया था। वास की झाडा के किनारे से लगी हुई कुछ खुला भूमि थी। इस भूमि में एक वास के ठठ म मन बटर का वाध लिया। इनक वास एक मनुष्य का मन बटर के लिय घाम काट कर ले आन के लिय भज लिया और दूसरे आत्मा (माधामिह जा कि प्रथम महायद्ध म गडवाल पल्लन में रह चुका था और आजकल यू पी सिविल पाइनिपर फाम में काम कर रहा है) का एक वास पर बदकर कुण्डा म आवाज करन हुए खूब जारस हुनार लगान के लिय कह लिया—जमा कि पहाडी लाग घाम लकड़ी काटन ममय करन ह।

इमके बाद म कुछ दूर पर एक छाती मो चट्टान पर जा बग। चट्टान के पीछ एक दम डाल था और इस डाल पर घना जगल था।

माधामिह जार जार म गाता जा रहा था और दूगटा मनुष्य बनी हुई घाम ला लाकर बटर के मम्मम रमना जा रहा था। म बाय हाथ में राइफल लिय हुए चट्टान पर गड़ा गड़ा गिगरेट पी रहा था कि अकस्मान् मस एमा प्रनात हुआ कि नरमणिजी आ गई है। मन पीरन मबन म घामवाट का अपन ममीप बूला लिया और मोती म माधामिह का ध्यान आकर्षित करन हुए उम चुप रहन का आत्मा दे लिया।

नोन! आर म भूमि गुली हई थी। माधामिह मर गामन बाई आर था। दाग एनवाग मनुष्य गामन और बटरा शहिना आर बधा हुआ था। इस

भाग में शरती मुझ बिना त्रिध बाहर निकल नहा सकती थी। बवल एक जगह वह इस समय हा सकता था—मर पाछ घट्टान क तखि क बाल में।

घट्टान पर बठन समय मन त्र्य लिया था कि घट्टान क आग का भाग बिलुप्त सहा और चिन्ता था और पहाड म नीच ८-१० फीट तक दग हुआ था। इनम नीच साडी थी। शरती इन पर बढ अवश्य सकती था किंतु उमकी आवाज मुनवर म उमे दख सकता था।

इसमें मन्त्र नहीं कि भाषामिह का आवाज स आर्कषित हाकर शरती घट्टान क नीच आ गई थी। उमक ऊपर का त्र्यन ही मुझ उमकी उपस्थिति का ज्ञान हा गया था। मम लौटन दख ब लागे क बप हा जान म वह आर्कषित हो गई थी। कुछ मिनटा बाद मुझ नीच जगल में एक टहनी क टूटन का गल मुनाई लिया जिसम म निश्चित मा हा गया। शरती लौट गई थी।

एक मुन्तर अवसर हाय म निकल गया परन्तु अब भां मुझ उम पर गागी बलान का मोबा मिल सकता था क्याकि हमार जान ही वह कटने का मारन अवश्य लौटना। अभी ४-५ घण त्रिध और था और घाटा का पार कर दूगरा आर क पहाड की दाल म गरती पर गाली बलाई जा सकता था। हा पागला २० - २० गज का पडता था। मग २७५ रातकल का निगाना यहा अबूक था और यत्रि शरती बवल धायन भा हा जाता ता भा अनुसरण करन क लिय रक्त का धार मिल ही जाता। अजिनक म जगला में व्यय भटकता रहा था—उमम यह बर्ती अच्छा हाता।

साय क मनुष्या का अकल दावजगल भा नहीं भजा जा सकता था। अत विषय हा मन उत्र अतन साय हा रक्ता।

बतर का और भी मडकुनी म बांध कर म मामन क पनाड का आर चल लिया।

१०० गज आग बलन पर हमें एक नाला मिया। इन नाले म शारी दूर गान्ता पन जगल में म हा कर गया था। हा आर्कषिया का साय में लकर साहा में धूमना उचित न था। अत मन नाल में हाकर जाना निश्चय किया। इस भाति नाल में पहुच कर म ऊपरवाले रातक का पकड़ सकता था।

य नाला लम्बग १० गज चौडा और धार पाठ गहरा था। जम हा म

इसमें उनका कि पास की चट्टान पर से एक कुचकुचवा (एक छाटा जाति का उलू) फटफटाना हुआ उड़ गया। जिस स्थान से यह उड़ा था वहाँ पर दा अड़ पड़ हुए थे। इन अड़ों का रंग हल्का पीला था और इनमें भूरे छाट पड़ हुए थे। इनका आकार बड़ा विचित्र था। एक अलग लम्बा एवं नकीला था और दूसरा एकत्र गाल। मुझ भाति भाति क अड़ों का जमा करने का गीक था। भर मग्न भ कुचकुचवे क अड़ नहीं थे। अब मन इन्हें उ चलन का निश्चय किया। भर पास इस समय इन अड़ों का रम्बन क लिये कोई चीज न थी अतएव मन उह कुछ कोई क बीच रख कर बायें हाथ की मुट्ठी में दाव लिया। नाल क नीच पहुँचने पर किनारे अत्यन्त ऊँच था। बरमाती बहाव क कारण किनारे की चट्टान किनारे किनारी हो गई थी और उस पर पाव जमाना असम्भव था। इसलिये अगले आत्मिया का अपनी बंदूक समाकर से विमवता हुआ नीच का उतरने लगा।

जम ही से नाच रताली भूमि पर उतरा त्या ही मरे दाता आत्मा मग वगल में बल कर या पड़ दृष्ट और घबराकर उहान भर हाथ से राफल टूम दी। व धरती का वालन मुन चुब था। चट्टान पर से नाच विमवत की आवाज क कारण से कुछ मुन न पाया था। पूछने पर भर आत्मिया न बताया कि उहान गरना की दबी हूँ गगनट मुनी था। उह मालूम न था कि गरनट किम आर ग आर्दि। धर गुरी धर अगले निषार का अगली उपस्थिति बताया नहीं करन। यह सम्भव था कि गरनी हमारे चलन पर नाल क मझान में हमारा प्रतीक्षा में जा ली थी और जम ही वह मुन पर झपटन का प्रयत्न हुई से चट्टान से नीच पल गया। इणी से निगम हा कर सम्भवत यह गरनी उठी है।

यह प्रथमान गहन भी हा सकता था। या फिर यह मानता पडगा कि गीनों मनेप्या में से गरना न अगले भाजन क लिये मुन हा घना था।

इस लाना इस समय नाल में था था। हमारे पीछे चट्टान था वार् और कुछ पथर क ठाँवे पर हुए थे और आत्मियों आर भी चट्टानों की दावार गी गडा था। सामने एक किनारा चीड़ का वृक्ष गिरा हुआ था। इस वृक्ष क कारण नाल में एक बाध ना बन गया था और बटून ना रन जमा हा गई था। यह गनीली भूमि दाहिनी ओर चट्टानों क पाछ घनी गई था इसा पर यह पाव से

क र्हा था। रत क कारण चलन में तनिक भा आवाज नहा हा रहा था।
जम हा इस चट्टान का दीवार स आग बन्दर मन पाछ दखा ता गरना म मरा
बाँवें चार हा गइ।

मिथि यह था—

चगन क पाठ की रताली भूमि समतल था। दक्षिण आर चट्टाना का
दशा दावार थी और एक आर बनीला झाडिया था। दूसरा तरफ भा एक
बिकनी चट्टान था। यह खरा हूँ रताली भूमि (जिम पर हम खड थ) लगभग
० फीट लम्बा व १ फीट चौडी थी। मझम ८ फाट वा दूर (वाट में नापा गया)
पर आक्रमण क लिय मिकुडी हूँ गरना था। अगत पत्र उमन आग का फटा
रख थ और पिछे पर मिकाड रख थ। उमक चन्ने पर एक मन्वान था—
जैसा मुन्वान दर म लौट हूँ म्यामा का स्वागत करन क गिा एक स्वाभाभवत
हुन क मर पर ली जा सपना ह।

मरे मस्तिष्क में बिद्युत गति म ला विचार आय। एक ता यह कि मुझ प्रथम
वार करना चाहिए और दूसरा यह कि चार इस भाति किया जाय कि गरना
गतक न हा पाव।

मरी बन्दूक मर शक्ति हाथ में मान क ऊपर आडी रक्खा हूँ थी। मफटा
कथ (बन्दूक का तैयार करन का या गरन का एक पुडा) मुन्ना हुआ
था और गरना क ऊपर लय नायन क लिय हाथ म तान चौपाई बनाकार
बन्दर लगाता आवयक था।

मन एक हाथ म बन्दूक का कथ का आर धार धार टगना आरम्भ किया।
जम जम मरा हाथ माधा हाता जा र्हा था बन्दूक का बजन भी बड़का ही जा
रहा था। अर हाथ का माधा करना था। गरनी का दक्षि मझर म एक क्षण क
लिय भा नहा ह्या— उमक चहर में प्रथमता का भाव झलक र्हा था।

मरा बन्दूक उगन में कितना समय लगा म क नग गरना। शक्ति म भा
गरनी पर म आँग नहा ह्या सपना था अतएव म बन्दूक का नाट की आर ख
तक न मरा। प्रतिगत एगा माटूम हाता था कि हाथ का यह बन्दर गुग
ही न हाता। मार हाथ का लक्का मा मार गया था।

अन में बन्दूक मर कथ म जा लगा और जम ही चारन का नाट
गरनी क शरीर की सीप में आई मन पाड़ा र्हा लिया।



ग्राम स्वयं में हम देखते हैं कि कोई भयानक जन्तु हम पर आक्रमण कर रहा है और हम बन्दूक का थोड़ा त्वान का व्यर्थ प्रयत्न कर रहे हैं किन्तु बन्दूक चलन से साफ़ दूधकार कर देती है। कुछ कुछ ऐसा ही स्वयं ससार में म मर रहा था किन्तु बन्दूक की आवाज़ और करारी फटकार ने मेरा सारा का निवारण कर दिया।

क्षण मात्र के लिये गर्नी स्थिर रहा और फिर अगले पक्ष पर सर रख कर लड़क गई। गानी के छिद्र से रक्त का फव्वारा छूट पड़ा। गोली रोड़ में लगती हुई हृदय में घस गई थी।

घटान की आड़ के कारण मेरे आदमी इस घटना को देख न पाये थे। परन्तु मेरे सिर घुमान से वे समझ गये थे कि मन धरना का दख लिया है और धरना समीप में है। माधोसिंह ने बाद में मझ बताया कि वह चिल्लाकर मझमे अडे गिरा कर शाना हाथा से राइफल पकड़न के लिए बहना चाहता था।

गानी चलान के बाद ही मन सबल द्वारा माधोसिंह का पास बुलाया और उसे अपनी बन्दूक धमा दा। मर पर जवाब दे रहे थे। पास ही गिरे हुए बछ पर भ जा गया। धरनी के पत्रा की गहिरा दखन से पहा ही मन बीगड़ की नरभक्षिणी का पहचान लिया।

माधोसिंहना की जिग कधी न उसे ६४ मानव जीवन—मूत्रा का क्षण में महायता दा था आड़ उमा से स्वय उगवा जीवन—मूत्र बट गया था। जिगे के लाना का करना था कि उगत १२८ मनुष्य मार थे।

निम्नलिखित तीन बातें जिहें आप मेरे प्रतिकूल समझेंगे शायद में मेरे अनभू थीं (अ) मर यथे हाथ में रक्त हुए अड (ब) हल्की बन्दूक जिस में लिये हुए था और (ग) मेरी मरभक्ष माधोसिंह पर से नहा बन्धि एक नर भक्षिणी न हा रही था। यदि मेरे हाथ में अड न हान ता तन्वा म दाना हाथा से बन्दूक पकड़ कर पीछे घुसना। मूत्र स्वयं सेव कर ही धरना न मुझ पर पात्र आक्रमण नग किया था। यदि बन्दूक शरीर न हाना तब न ता म उन धारे पीर उगा ही पाता और न हाथ मीपा करके चला पाता। और यदि धरना एक माधोसिंह गर्ना हावी ता अतन का घिग हुआ पाकर मुझ अतन माग म हाता हुई निरन्त जाती। धरना का मरत का परिणाम माधोसिंह मरा हा मरना।

अपन माधिया का मन बटने की रस्मी खान के लिये भज लिया (क्याकि अब रस्मी करना का बाधन क लिये बाधित था) और म स्वय अडा का उनकी स्वामिनी को लोटागन नाते की आर धन लिया ।

अपन अय गिकारी भाइया का भाति म भी कुछ अधविश्वामी हू । गत बप म म करने क पीछे माग मारा फिर रहा था ओर फिर भी असफल रहा । अडा क उठान क कुछ ही क्षणा पन्चान मग भाग्य पलट गया था ।

हाथ म रख रखन म अड अभी गम थ । मन उह घट्टान के उपर रख लिया और जब बाध घट बाट म उधर से गजरा ता मन कुचकुचवी का उनक उपर बठा पाया । उमक पला का रग दिल्तुल घट्टान म भिल्ला जाता था और देवन मे पला नही चलता था कि अड बहा अदभ्य हा गय ।

और उम दिन स आज तक आम पाम क विस्तृत प्रयोग म एक भी नर हरया न हई ।

सामन टग हुए नका पर मन अब एक और श्रॉम बिह अकित कर लिया ह — म श्रॉम क तारीख की अधिकागिणी सोगड की आत्महार करनी थी । यह श्रॉम बालाआगर म मी पन्चिम की आर ह ओर तारीख ह ११ अप्रैल १९३० ।

करनी क नामून टूट हुए थ और दात भी । इन्हां कारण म वह नरभक्षिणा बन गई थी और अपन गिकार का नली प्रकार मार नहीं मवती थी । उमकी महापिता पागी का म पहल अवसर पर भूल म मार घुना था ।



पौलगढ का कुआरा

हमार जाडा क घर म मीठ दूर जगल क मध्य म लगभग ८०० वग गज का एक खला हुआ मगान ह। इस मगान में हरा घाम का गणैवा-खा बिछा हुआ ह और स्थान स्थान पर उठ बड़ वक्षा एक बेंत का जगल मा उग आया ह। इसा खुली हुई भूमि में मन सब प्रथम उस दर का देवा जो कि मम्म मयकाप्रान्त में पौलगढ का कुआरा क नाम म प्रसिद्ध हायया था। मन १०० म १९० तक कई गज इस गिवा की टा म रह सक थ।

प्रात बाल का समय था। सूर्योदय हुए अभी दर न हुई थी जब म पूवोक्त गुट टकड म मामन का डाल जमीन पर जा चला। कुछ दूर पर एक स्वच्छ जलाशय क बिनार २०-२५ वन-मुगिया का एक झंड सूखी पत्तिया क दर में म आना पाग गाज रहा था। हरियाल मगान में आमकण जिलमिल कर खमर रहे थ। इसा मगान में ५० ६० चानल भा घरन में व्यस्त थ। म एक टर पर बग हुआ इस मुल्लर मय का अवलोकन कर रहा था कि मयम ममीप गहो एक चितगिया न मरा आर मडकर ककना आरम्भ कर दिया। दूमरे हा दाण मरे शोब का घना झाडिया में म कुआरा खुल मगान में निकल आया। मुल्लर दर तक धर ऊपा मिर किय गर्बीगी मलि म मम्मन दूय का मिहावलाकन करता रहा और फिर अकहता हुआ घारे पार मगान का पार करन लगा। जाड का शतु क कारण उगवा थम अयल्ल मुल्लर था और इस समय उसपर सूय की गुलहली रमिया पड कर उम और भी मुल्लर बना रही था। उमन स्वागत स्वल्प पीतला न मपर उघर हट कर बाक में रात्रय मा बना दिया था। यह उगी माग म झुमता हुआ थल दिया। बिमता मुल्लर लगना था वह।

रिग आग बड़ कर उमन जगलय में भरता प्यास युधार् और कट कर वह बन में अदृश्य हायया। जगल में धमन त पूव बह तीन बार गरजा। मल मगान में उगव निकलन ही मम्मन बन प्राणिया न धाम्बार बनना शुरू कर दिया था। कथाबिन् बरती प्रजा न धनिषान्त का यह प्रत्यक्ष था।

बास्तव में उम ग्नि कुआरा अपनी माद स बहुत दूर निकल आया था क्याकि उसका घर छ मील दूर एक नाल में था। उसे प्रदग में जहा कि अधिकांश घरा का गिबार हाथिया की सहायता स हाना ह उमन अपना घर नाच समझ कर बनाया था। एक मात्र लबा यह नाला पहाडा की तलछट की ओर चला गया था और हमव दोना आर पबत मठ थ। नाच क ऊपरी सिरे पर लगभग दोम फीट ऊचा एक झरना था और नीचे के मुगान पर पानी से लाल मिट्टा बट गई थी इना कारण इस आर नाला मकरा हा गया था। अनएक कोई भी गिबारी यदि कुँआरे क घर जाकर उमस लाहा उन का प्रयत्न करता ता उमे विवा होकर पाल ही जाना पडता। मकवारी बानूना क अनमार रात्रि में गिबार करना भी मना है। इस प्रकार कुँआरा अपन बहु बाल्लिन चम क गिबारिया की पातक बन्दूका स बचाय हुए था। कई अवमग पर गिबारी कुँआरे का बटरा पर ललचा चुक थ। परन्तु उम पर गाली बभी भी न चल पाई थी यद्यपि दो अवमरा पर बहु मोन स औबमिबोनी लल चुका था। प्रथम अवसर पर वह हाक में निकल आया था परन्तु फड एंडरसन की राइफल मचान की रस्मी में उलझ कर रहे गई। दूसरी बार हाक स पाल ही वह मचान के ममीप था लडा हुआ किन्तु जब उसन एडो एडी मानव का अपना पाइप भरन में लगन पाया ता तम्बाकू क आकिपारक की मुहई दना हुआ क थन में अलग हा गया। इन दोनों अवमरा पर बहु मचान से बवल दो फाट की दूरी पर दगा गया था। एडरसन क कथनानुमार उमका आमार एक टट्ट क बराबर था किन्तु एडी उमरी उपमा एक तगड गध स लव थ।

एग ही कई अमफल प्रयत्ना क परचान स अनन कमिगुन श्री विन्डहम को नाल क ऊपर स निकली हुई आगल्लन पर लगया। एग माग पर प्रात काल स कुँआर के तात्र गानों को दल चुना था। श्री विन्डहम क समान घरा का जानवार भारतभय में क्वाचित ही का अय व्यक्ति हागा। एग समय उनक गाय दा अनुभवा गिबारी भा थ। घर के खादा का भग भाति नापनर विन्डहम की मम्मनि हुई कि मूठिया क बाच ताना जान पर घर की गाल क फीट लम्बा हागी। अय दो गिबारिया का मत था कि अगा का गाल क ऊपर फीट

*मुगान क लिय घर का गाल का ६ मूठिया पर ताना जाता ह।